(२२) तथा मुझे क्या हो गया है कि मैं उसकी इबादत न करूँ, जिसने मुझे पैदा किया तथा तुम सब उसी की ओर लौटाये जाओगे ।[1]

وَمَالِيَ لَآ أَعۡبُدُ ٱلَّذِي فَطَرَنِي وَإِلَيۡهِ تُرۡجَعُونَ ۝٢٢

(२३) क्या मैं उसे छोड़ ऐसों को उपास्य बना लूँ कि यदि (अल्लाह) दयालु मुझे कोई हानि पहुँचाना चाहे, तो उनकी सिफ़ारिश मुझे कुछ भी लाभ न पहुँचा सके तथा न वह मुझे बचा सकें ।[2]

ءَأَتَّخِذُ مِن دُونِهِۦٓ ءَالِهَةً إِن يُرِدۡنِ ٱلرَّحۡمَٰنُ بِضُرّٖ لَّا تُغۡنِ عَنِّي شَفَٰعَتُهُمۡ شَيۡـٔٗا وَلَا يُنقِذُونِ ۝٢٣

(२४) फिर तो मैं निश्चय खुली गुमराही में हूँ ।[3]

إِنِّيٓ إِذٗا لَّفِي ضَلَٰلٖ مُّبِينٍ ۝٢٤

(२५) मेरी सुनो ! मैं तो (स्वच्छ हृदय से) तुम सबके प्रभु पर ईमान ला चुका ।[4]

إِنِّيٓ ءَامَنتُ بِرَبِّكُمۡ فَٱسۡمَعُونِ ۝٢٥

---

[1]अपने धर्म तौहीद (एकेश्वरवाद) को स्पष्ट किया जिसका उद्देश्य अपनी जाति का हित तथा उनका सही मार्गदर्शन था। यह भी संभव है कि उसकी जाति ने उस से कहा हो कि क्या तू भी उस पूज्य की उपासना करता है जिसकी ओर यह रसूल हमें बुला रहे हैं, तथा हमारे उपास्यों को तू भी छोड़ बैठा है ? जिसके उत्तर में उसने यह कहा। भाष्यकारों ने उसका नाम हबीब नज्जार बताया है।

[2]यह उन झूठे उपास्यों की विवशता का स्पष्टीकरण है, जिनकी पूजा उसकी जाति करती थी तथा शिर्क की इस पथभ्रष्टता से निकालने के लिए रसूल उनकी ओर भेजे गये थे। "न बचा सकें" का अभिप्राय है कि यदि अल्लाह मुझे हानिग्रस्त करना चाहे तो यह बचा नहीं सकते।

[3]अर्थात यदि मैं भी तुम्हारे समान अल्लाह को छोड़कर ऐसे लाचार एवम् विवश उपास्यों की वन्दना आरम्भ कर दूँ तो मैं भी पथभ्रष्टता में जा गिरूँगा। अथवा ضلال (पथभ्रष्टता) यहाँ خسران (क्षति) के अर्थ में है, अर्थात यह तो खुली हानि का सौदा है।

[4]उसके तौहीद (अद्वैतवाद) एवं तौहीद के इक़रार के कारण जाति ने उसकी हत्या करनी चाही, तो उसने पैग़म्बरों को संबोधित करते हुए कहा, अभिप्राय अपने ईमान पर इन सन्देश वाहकों को गवाह (साक्षी) बनाना था, अथवा अपनी जाति को सम्बोधित करके कहा, जिससे तात्पर्य सत्यधर्म पर अपनी दृढ़ता एवं स्थिरता दिखानी थी कि तुम जो चाहो

(२६) (उससे) कहा गया कि स्वर्ग में चला जा, कहने लगा, काश कि मेरी जाति को भी ज्ञान हो जाता।	قِيۡلَ ادۡخُلِ الۡجَـنَّةَؕ قَالَ يٰلَيۡتَ قَوۡمِىۡ يَعۡلَمُوۡنَۙ ﴿۲۶﴾
(२७) कि मुझे मेरे प्रभु ने क्षमा कर दिया तथा मुझे सम्मानित व्यक्तियों में से कर दिया।[1]	بِمَا غَفَرَ لِىۡ رَبِّىۡ وَجَعَلَنِىۡ مِنَ الۡمُكۡرَمِيۡنَ ﴿۲۷﴾
(२८) तथा उसके पश्चात हमने उसकी जाति पर आकाश से कोई सेना नहीं अवतरित की।[2] तथा न इस प्रकार हम अवतरित करते हैं।[3]	وَمَاۤ اَنۡزَلۡنَا عَلٰى قَوۡمِهٖ مِنۡۢ بَعۡدِهٖ مِنۡ جُنۡدٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَمَا كُنَّا مُنۡزِلِيۡنَ ﴿۲۸﴾
(२९) वह तो केवल एक ज़ोरदार चीख़ थी कि सहसा वह सब के सब बुझ-बुझा गये।[4]	اِنۡ كَانَتۡ اِلَّا صَيۡحَةً وَّاحِدَةً فَاِذَا هُمۡ خٰمِدُوۡنَ ﴿۲۹﴾

कर लो किन्तु सुन लो कि मेरा ईमान (विश्वास) उसी पालनहार पर है जो तुम्हारा भी पोषक है। कहते हैं कि उसे उन्होंने मार डाला तथा किसी ने उनको इससे नहीं रोका رحمه الله تعالى (उस पर अल्लाह तआला की दया हो)।

[1]अर्थात जिस ईमान एवं तौहीद के कारण मुझे प्रभु ने क्षमा कर दिया, काश मेरी जाति इस बात को जान ले ताकि वे भी ईमान तथा तौहीद (अद्वैतवाद) को अपनाकर अल्लाह की क्षमा एवं उसके प्रदानों के पात्र हो जाये। इस प्रकार वह मरने के पश्चात भी अपनी जाति का हितैषी रहा। एक सच्चे मोमिन को ऐसा ही होना चाहिए कि वह प्रत्येक क्षण लोगों का भला करे अपकार न करे, उनको सही निर्देश दे पथभ्रष्ट न करे, लोग उसे जो चाहें कहें तथा जैसा व्यवहार चाहें करें यहाँ तक कि उसे मार डालें।

[2]अर्थात हबीब नज्जार की हत्या होने के पश्चात उनके विनाश के लिए आकाश से फ़रिश्तों की कोई सेना नहीं उतारी। यह इस जाति की हीनता की ओर संकेत है।

[3]अर्थात जिस समुदाय का विनाश किसी दूसरी रीति से लिखी होती है तो वहाँ हम फ़रिश्ते उतारते भी नहीं।

[4]कहते हैं कि जिब्रील (फ़रिश्ते) ने एक चीख़ मारी, जिससे सबके प्राणों ने शरीर त्याग दिया तथा बुझी अग्नि के समान हो गये। मानों जीवन प्रज्वलित अग्नि है तथा मौत उसका बुझा कर राख हो जाना।

يَٰحَسْرَةً عَلَى ٱلْعِبَادِ ۚ مَا يَأْتِيهِم مِّن رَّسُولٍ إِلَّا كَانُوا۟ بِهِۦ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿٣٠﴾

(३०) (ऐसे) बन्दों पर अफ़सोस[1] ! कभी भी कोई रसूल उनके पास नहीं आया जिसका उपहास उन्होंने न उड़ाया हो।

أَلَمْ يَرَوْا۟ كَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُم مِّنَ ٱلْقُرُونِ أَنَّهُمْ إِلَيْهِمْ لَا يَرْجِعُونَ ﴿٣١﴾

(३१) क्या उन्होंने नहीं देखा कि उनसे पूर्व बहुत से समुदायों को हमने ध्वस्त कर दिया कि वे उनकी ओर[2] नहीं लौटेंगे।

وَإِن كُلٌّ لَّمَّا جَمِيعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُونَ ﴿٣٢﴾

(३२) तथा नहीं है कोई समूह परन्तु यह कि वह एकत्रित होकर हमारे समक्ष प्रस्तुत किया जायेगा।[3]

وَءَايَةٌ لَّهُمُ ٱلْأَرْضُ ٱلْمَيْتَةُ أَحْيَيْنَٰهَا وَأَخْرَجْنَا مِنْهَا حَبًّا فَمِنْهُ يَأْكُلُونَ ﴿٣٣﴾

(३३) तथा उनके लिए एक निशानी[4] (सूखी) मृत धरती है जिसको हमने जीवित कर दिया तथा उससे अन्न निकाल दिया जिसमें से वे खाते हैं।

وَجَعَلْنَا فِيهَا جَنَّٰتٍ مِّن نَّخِيلٍ

(३४) तथा हम ने उसमें खजूरों के तथा अंगूरों के बाग़ात उत्पन्न कर दिये,[5] तथा

---

[1]खेद एवं पश्चाताप का प्रदर्शन स्वयं अपने ऊपर, क़ियामत (प्रलय) के दिन यातना देखने के बाद करेंगे कि काश उन्होंने अल्लाह के बारे में आलस्य न किया होता, अथवा अल्लाह बन्दों पर खेद व्यक्त कर रहा है कि जब भी उनके पास कोई रसूल आया तो उन्होंने उसके साथ उपहास ही किया।

[2]इसमें मक्का के निवासियों के लिये चेतावनी है कि रिसालत को झुठलाने के कारण पिछली जातियों का विनाश हुआ, यह भी नाश हो सकते हैं।

[3]इसमें إِنْ "नहीं" के अर्थ में है तथा لَمَّا अर्थ में है إِلَّا के, अभिप्राय यह है कि सभी लोग विगत भी तथा आगामी भी अल्लाह के सदन में उपस्थित होंगे जहाँ उनका लेखा-जोखा होगा।

[4]अर्थात अल्लाह के अस्तित्व, उसके पूर्ण सामर्थ्य तथा मुर्दों को पुनः जीवित करने पर चिन्ह।

[5]अर्थात निर्जीव धरती को जीवित करके हमने खाने के लिये केवल अन्न ही नहीं उगाये अपितु स्वाद के लिए विभिन्न प्रकार के फल भी प्रचुर्ता से पैदा करते हैं। यहाँ मात्र दो फलों की चर्चा इसलिए की गई कि यह बहुत लाभदायक हैं तथा अरबों को रूचिकर भी,

وَّاَعْنَابٍ وَّفَجَّرْنَا فِيْهَا مِنَ الْعُيُوْنِ ﴿٣٤﴾

जिनमें हम ने जलस्रोत भी प्रवाहित कर दिये हैं।

لِيَاْكُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖ ۙ وَمَا عَمِلَتْهُ اَيْدِيْهِمْ ؕ اَفَلَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٣٥﴾

(३५) ताकि (लोग) इसके फल खायें,[1] तथा उन के हाथों ने उसको नहीं बनाया।[2] फिर क्यों कृतज्ञता व्यक्त नहीं करते।

سُبْحٰنَ الَّذِیْ خَلَقَ الْاَزْوَاجَ كُلَّهَا مِمَّا تُنْۢبِتُ الْاَرْضُ وَمِنْ اَنْفُسِهِمْ وَمِمَّا لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٦﴾

(३६) वह पवित्र शक्ति है जिसने प्रत्येक वस्तु के जोड़े पैदा किये, चाहे वह धरती से उगायी हुई वस्तुयें हों, चाहे स्वयं उनकी अपनी जाति (अस्तित्व) हो, चाहे वे (वस्तुयें) हों जिन्हें ये जानते भी नहीं।[3]

तथा इनकी उपज भी अरब में अधिक है। फिर अन्न की चर्चा पहले की क्योंकि उसकी उपज भी अधिक है तथा खाद्यान्न होने के कारण उसका महत्व भी निर्विवाद। जब तक इन्सान रोटी, चावल आदि खाद्यान्न से अपना पेट नहीं भरता मात्र फल से उसकी खाने की आवश्यकता पूरी नहीं होती।

[1]अर्थात कुछ स्थान पर स्रोत भी प्रवाहित करते हैं जिसके जल से पैदा होने वाले फल लोग खायें।

[2]इमाम इब्ने जरीर के विचार में यहाँ ما नकारात्मक है, अर्थात अन्न तथा फलों की पैदावार अल्लाह तआला की विशेष दया है जो वह अपने बन्दों पर करता है। इसमें उनके प्रयास एवं परिश्रम, तथा अधिकार का हस्तक्षेप नहीं। फिर भी इन उपकारों पर उसकी कृतज्ञता क्यों नहीं दिखाते ? कुछ के निकट ما वह है, जो الذى के अर्थ में है, अर्थात ताकि उसका फल खायें और जिनको उनके हाथों ने बनाया। हाथों का कर्म है धरती को समतल करके बीज बोना। ऐसे ही फलों के खाने की विभिन्न विधि हैं, उन्हें निचोड़कर उनका रस पीना, अनेक फलों के योग से चाट बनाना इत्यादि।

[3]अर्थात इन्सानों के समान धरती की प्रत्येक उपज में हमने नर-मादा दोनों बनाया है। इनके सिवाय आकाशों में तथा धरती की गहराईयों में भी जो वस्तुयें तुमसे गुप्त हैं, जिनका ज्ञान तुम नहीं रखते, उनमें भी जोड़ा (नर-मादा) की यह व्यवस्था हमने रखी है। अतः सभी उत्पत्ति जोड़ा-जोड़ा है, वनस्पति में भी नर-मादे की व्यवस्था है यहा तक कि आलौकिक जीवन परलोक के जीवन के लिये जोड़ा स्वरूप है तथा यह परलोक के जीवन

وَاٰيَةٌ لَّهُمُ الَّيْلُ ۚ نَسْلَخُ مِنْهُ النَّهَارَ فَاِذَا هُمْ مُّظْلِمُوْنَ ﴿٣٧﴾

(३७) तथा उनके लिए एक निशानी रात्रि है, जिससे हम दिन को खींच देते हैं तो सहसा वे अंधकार में रह जाते हैं ।[1]

وَالشَّمْسُ تَجْرِيْ لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ۭ ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ﴿٣٨﴾

(३८) तथा सूर्य के लिए जो निर्धारित मार्ग है वह उसी पर चलता रहता है ।[2] यह है निर्धारित किया हुआ प्रभावशाली सर्वज्ञ (अल्लाह तआला) का ।

وَالْقَمَرَ قَدَّرْنٰهُ مَنَازِلَ حَتّٰى

(३९) तथा चन्द्रमा की हमने मंज़िलें निर्धारित कर रखी हैं[3] यहाँ तक कि वह घूम फिर कर

के लिए एक बौद्धिक युक्ति भी है । मात्र एक अल्लाह है जो उत्पत्ति की इस विशेषता तथा अन्य सभी कमियों से पवित्र है, वह वित्र (विषम) है जोड़ा नहीं ।

[1]अर्थात अल्लाह के सामर्थ्य का एक तर्क यह भी है कि वह दिन को रात्रि से अलग कर देता है जिससे तुरन्त अंधेरा हो जाता है । سلخ (सलख) का अर्थ होता है जानवर की खाल उसके शरीर से अलग करना, जिससे उसका माँस प्रकट हो जाता है । इसी प्रकार अल्लाह दिन को रात से अलग कर देता है । أظلم (अज़्लम) का अर्थ है अंधकार में प्रवेश कर जाना, जैसे أصبح तथा أمسى (अस्वह एवं अम्सा) तथा أظهر (अज़हर) के अर्थ हैं प्रातः, संध्या तथा दोपहर के समय में प्रवेश करना ।

[2]अर्थात अपनी धुरी (आकाश) पर चलता रहता है जो अल्लाह ने उसके लिए निर्धारित किया है, इसी से अपनी यात्रा आरम्भ करता तथा वहीं समाप्त करता है, इससे इधर-उधर नहीं होता कि किसी ग्रह से टकरा जाये दूसरा अर्थ है अपने ठहरने की जगह तक, और उसका यह स्थान अर्श के नीचे है जो सूरः अल-हज आयत संख्या १८ की व्याख्या में गुज़र चुका है, कि सूर्य प्रत्येक दिन डूबने के पश्चात अर्श के नीचे सजदा करता है और फिर वहाँ से उदय होने की अनुमति माँगता हैं (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूरः यासीन) दोनों भावार्थ के आधार पर لِمُستقرٍ में अक्षर 'लाम' कारण बताने के लिये है । أي-لأجل مستقرّها कुछ का कहना है कि लाम إلى (इला 'तक') के अर्थ में है, फिर مُستقرّ प्रलय दिवस होगा । अर्थात सूर्य का यह चलना प्रलय के दिन तक है, क़ियामत (प्रलय) के दिन उसकी गति समाप्त हो जायेगी । यह तीनों भावार्थ अपने-अपने स्थान पर सही हैं ।

[3]चन्द्रमा की २८ मंज़िलें हैं, नित्य दिन एक मंज़िल पार करता है फिर दो रात लुप्त रहकर तीसरी रात उदय हो जाता है ।

عَادَ كَالْعُرْجُوْنِ الْقَدِيْمِ ﴿٣٩﴾

पुरानी टेहनी के समान हो जाता है ।[1]

لَا الشَّمْسُ يَنْۢبَغِيْ لَهَآ اَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا الَّيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ ؕ وَكُلٌّ فِيْ فَلَكٍ يَّسْبَحُوْنَ ﴿٤٠﴾

(४०) न सूर्य के वश में है कि चन्द्रमा को पकड़े [2] तथा न रात्रि दिन से आगे बढ़ जाने वाली है,[3] तथा सबके सब आकाश में तैरते फिरते हैं ।[4]

وَاٰيَةٌ لَّهُمْ اَنَّا حَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمْ فِي الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ﴿٤١﴾

(४१) तथा उनके लिए एक निशानी (यह भी) है कि हमने उनकी सन्तान को भरी हुई नाव में सवार किया ।[5]

وَخَلَقْنَا لَهُمْ مِّنْ مِّثْلِهٖ مَا يَرْكَبُوْنَ ﴿٤٢﴾

(४२) तथा इनके लिए उसी जैसी अन्य वस्तुयें पैदा कीं जिन पर ये सवार होते हैं ।[6]

---

[1]अर्थात जब अन्तिम मंज़िल पर पहुँचता है तो अति पतला तथा छोटा हो जाता है जैसे खजूर की पुरानी टहनी हो जो सूख कर टेढ़ी हो जाती है । चाँद के इसी चक्र से धरती के निवासी अपने दिनों, महीनों तथा वर्षों का हिसाब तथा अपनी उपासना का समय निश्चित करते हैं ।

[2]अर्थात सूर्य के लिये यह संभव नहीं कि वह चाँद को जा पकड़े जिससे उसका प्रकाश समाप्त हो जाये अपितु दोनों का अलग अलग मार्ग तथा पृथक-पृथक सीमा है । सूर्य दिन ही को तथा चाँद रात्रि ही को उदय होता है इसके विपरीत कभी नहीं हुआ, जो सृष्टि के एक व्यवस्थापक के होने की एक बहुत बड़ी युक्ति है ।

[3]अपितु यह भी एक व्यवस्था क्रम से बँधे हुए हैं तथा एक-दूसरे के पश्चात आते हैं ।

[4] كُلٌّ (प्रत्येक) से तात्पर्य सूर्य, चाँद अथवा उसके साथ अन्य ग्रहें हैं, सब अपने अपने अक्ष पर फिरते हैं, उनका परस्पर टकराव नहीं होता ।

[5]इसमें अल्लाह तआला अपने उस अनुग्रह की चर्चा कर रहा है कि उसने तुम्हारे लिये समुद्र में नवका का चलना सरल कर दिया यहाँ तक कि तुम अपने साथ भरी हुई नवकाओं में अपने बच्चों को भी ले जाते हो दूसरा अर्थ यह किया गया है कि ذُرِّيَّة से तात्पर्य ذُرِّيَّة के पितागण हैं तथा नवका से अभिप्राय नूह की नवका है, अर्थात नूह की नवका में उन लोगों को सवार किया जिनसे बाद में मानव वंश चला । मानो मानव जाति के पिता इसी में सवार थे ।

[6]इससे अभिप्राय ऐसी सवारियाँ हैं जो नवका की भाँति मानव तथा व्यवसायिक सामान को एक जगह से दूसरी जगह ले जाती हैं इसमें क़ियामत (प्रलय) तक पैदा होने वाली वस्तुयें आ गईं, जैसे वायुयान, जलयान, रेलें, बसें, कारें तथा अन्य परिवाहन के साधन ।

وَإِن نَّشَأْ نُغْرِقْهُمْ فَلَا صَرِيخَ لَهُمْ وَلَا هُمْ يُنقَذُونَ ۝٤٣

(४३) तथा यदि हम चाहते तो उन्हें डुबा देते फिर न कोई उनका सहायता करने वाला होता तथा न बचाये जाते ।

إِلَّا رَحْمَةً مِّنَّا وَمَتَاعًا إِلَىٰ حِينٍ ۝٤٤

(४४) परन्तु हम अपनी ओर से दया करते हैं तथा एक अवधि तक के लिए उन्हें लाभ दे रहे हैं ।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّقُوا مَا بَيْنَ أَيْدِيكُمْ وَمَا خَلْفَكُمْ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝٤٥

(४५) तथा उनसे जब (कभी) कहा जाता है कि अगले-पिछले (पापों) से बचो ताकि तुम पर दया की जाये ।

وَمَا تَأْتِيهِم مِّنْ آيَةٍ مِّنْ آيَاتِ رَبِّهِمْ إِلَّا كَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ۝٤٦

(४६) तथा उनके पास उनके प्रभु की ओर से कोई निशानी ऐसी नहीं आती जिससे ये मुख न फेरते हों ।[1]

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ أَنفِقُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا أَنُطْعِمُ مَن لَّوْ يَشَاءُ اللَّهُ أَطْعَمَهُ إِنْ أَنتُمْ إِلَّا فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝٤٧

(४७) तथा उनसे जब कहा जाता है कि अल्लाह (तआला) के दिये हुए में से कुछ ख़र्च करो[2] तो ये काफ़िर ईमानवालों को उत्तर देते हैं कि हम उन्हें क्यों खिलायें जिन्हें यदि अल्लाह (तआला) चाहता तो स्वयं खिला-पिला देता?[3] तुम तो हो ही खुली पथभ्रष्टता में ।[4]

---

[1]अर्थात तौहीद (अद्वैत) तथा रसूल की सत्यता की जो भी निशानी उनके सामने आती है उस पर ध्यान ही नहीं देते कि जिनसे उनको लाभ हो । प्रत्येक निशानी से मुँह फेरना उनका आचरण है ।

[2]अर्थात निर्धनों, दरिद्रों एवं ज़रूरतमंदों को ।

[3]अर्थात अल्लाह चाहता तो इनको निर्धन ही न बनाता , हम इनको देकर अल्लाह की इच्छा के विपरीत क्यों करे ।

[4]अर्थात यह कहकर कि दरिद्रों की सहायता करो, खुली त्रुटि का प्रदर्शन कर रहे हो । यह बात तो सही थी कि निर्धनता एवं दरिद्रता अल्लाह की चाहत ही थी, किन्तु इसको

(४८) तथा वह कहते हैं कि यह वादा (क़ियामत की धमकी) कब आयेगा, सच्चे हो तो बताओ।	وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٤٨﴾
(४९) उन्हें केवल एक ज़ोरदार चीख़ की प्रतीक्षा है जो उन्हें आ पकड़ेगी तथा ये आपसी लड़ाई-झगड़े में ही होंगे।[1]	مَا يَنظُرُونَ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً تَأْخُذُهُمْ وَهُمْ يَخِصِّمُونَ ﴿٤٩﴾
(५०) उस समय ये न तो वसीयत कर सकेंगे तथा न अपने परिवार की ओर लौट सकेंगे।	فَلَا يَسْتَطِيعُونَ تَوْصِيَةً وَلَا إِلَىٰ أَهْلِهِمْ يَرْجِعُونَ ﴿٥٠﴾
(५१) तथा नरसिंघा के फूँके जाते ही[2] सब के सब अपनी क़ब्रों से अपने प्रभु की ओर (तीव्रगति) से चलने लगेंगे।	وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَإِذَا هُم مِّنَ الْأَجْدَاثِ إِلَىٰ رَبِّهِمْ يَنسِلُونَ ﴿٥١﴾
(५२) कहेंगे कि हाय-हाय हमें हमारे शयनकक्षों से किसने उठा दिया,[3] यही है	قَالُوا يَا وَيْلَنَا مَن بَعَثَنَا مِن مَّرْقَدِنَا ۜ

अल्लाह के आदेश से मुख मोड़ने का औचित्य बना लेना अनुचित (ग़लत) था, आख़िर उनकी सहायता का आदेश देने वाला भी तो अल्लाह ही था, इसलिए उसकी प्रसन्नता तो इसी में है कि निर्धनों एवं दरिद्रों की सहायता की जाये। इसलिए चाहत और चीज़ है तथा प्रसन्नता और चीज़। चाहत का सम्बन्ध उत्पत्ति विषय से है जिसके अधीन जो कुछ भी होता है, उसकी नीति तथा भेद को अल्लाह के सिवाय कोई नहीं जानता तथा प्रसन्नता का सम्बन्ध धार्मिक विषयों से होता है, जिन्हें पूरा करने का हमें आदेश दिया गया है ताकि हमें उसकी प्रसन्नता प्राप्त हो।

[1]अर्थात लोग बाज़ारों में क्रय-विक्रय तथा वाद-विवाद में व्यस्त होंगे कि सहसा नरसिंघा फूँक दिया जायेगा एवं क़ियामत व्याप्त हो जायेगी। यह प्रथम फूँक होगी, इसको نفخة فزع (घबराहट की फूँक) भी कहते हैं। कहा जाता है कि कि इसके बाद दूसरी फूँक होगी। नफ़ख़तुस्साक (बेहोशी की फूँक) जिससे अल्लाह तआला के सिवाय सब मौत की गोद में चले जायेंगे।

[2]प्रथम कथन के आधार पर यह نفخة ثانية (दूसरी फूँक) तथा दूसरे कथनानुसार यह نفخة ثالثة (तीसरी फूँक) होगी जिसे نفخة البعث والنشور (जीवित होने एवं उठने का फूँक) कहते हैं, इससे लोग क़ब्रों से जीवित उठ खड़े होंगे (इब्ने कसीर)

[3]क़ब्र को शयनकक्ष कहने से तात्पर्य यह नहीं कि क़ब्र में उनको दण्ड नहीं होगा वरन् तत्पश्चात जो भयानक दृश्य तथा यातना की कठोरता को देखेंगे उसकी तुलना में उन्हें क़ब्र का जीवन एक स्वप्न ही प्रतीत होगा।

هٰذَا مَا وَعَدَ الرَّحْمٰنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٥٢﴾

जिसका वचन दयालु ने दिया था तथा रसूलों ने सच-सच कह दिया था ।

إِنْ كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَإِذَا هُمْ جَمِيْعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُوْنَ ﴿٥٣﴾

(५३) यह नहीं है परन्तु एक तीव्र ध्वनि कि सहसा सारे के सारे एकत्रित होकर हमारे समक्ष उपस्थित कर दिये जायेंगे ।

فَالْيَوْمَ لَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْـًٔا وَّلَا تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٥٤﴾

(५४) तो आज किसी व्यक्ति पर तनिक भी अत्याचार न किया जायेगा तथा तुम्हें नहीं बदला दिया जायेगा किन्तु उन्हीं कार्यों का जो तुम किया करते थे ।

إِنَّ أَصْحٰبَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِيْ شُغُلٍ فٰكِهُوْنَ ﴿٥٥﴾

(५५) नि:सन्देह स्वर्ग वाले लोग आज के दिन अपने (मनोरंजन) कार्यों में व्यस्त प्रफुल्लित एवं आनन्दित हैं ।[1]

هُمْ وَأَزْوَاجُهُمْ فِيْ ظِلٰلٍ عَلَى الْأَرَآئِكِ مُتَّكِـُٔوْنَ ﴿٥٦﴾

(५६) वह तथा उनकी पत्नियाँ छाओं में मसहरियों पर तकिया लगाये बैठे होंगे ।

لَهُمْ فِيْهَا فَاكِهَةٌ وَّلَهُمْ مَّا يَدَّعُوْنَ ﴿٥٧﴾

(५७) उनके लिए स्वर्ग में हर प्रकार के मेवे होंगे तथा अन्य भी जो कुछ वे माँगेंगे ।

سَلٰمٌ قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ رَّحِيْمٍ ﴿٥٨﴾

(५८) कृपालु प्रभु की ओर से उनको 'सलाम' कहा जायेगा ।[2]

وَامْتَازُوا الْيَوْمَ أَيُّهَا الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٥٩﴾

(५९) तथा हे पापियो ! आज तुम अलग हो जाओ ।[3]

---

[1] فَاكِهُوْنَ का अर्थ فَرِحُوْنَ है अर्थात प्रफुल्लित, आनन्दित ।

[2] अल्लाह का यह सलाम फ़रिश्ते स्वर्गवासियों को पहुँचायेंगे, कुछ कहते हैं कि अल्लाह तआला (परमेश्वर) स्वयं सलाम कहेगा ।

[3] अर्थात ईमानवालों से अलग खड़े हो । अर्थात मैदाने महशर (एकत्रित होने के क्षेत्र) में ईमानदार तथा आज्ञाकारी, नास्तिक एवं अवज्ञाकारी अलग-अलग कर दिये जायेंगे । जैसे

(६०) हे आदम की सन्तान ! क्या मैंने तुमसे वचन नहीं लिया था कि तुम शैतान की उपासना न करना,[1] वह तो तुम्हारा खुला शत्रु है ।[2]

أَلَمْ أَعْهَدْ إِلَيْكُمْ يَٰبَنِىٓ ءَادَمَ أَن لَّا تَعْبُدُوا۟ ٱلشَّيْطَٰنَ ۖ إِنَّهُۥ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ﴿٦٠﴾

(६१) तथा मेरी ही इबादत (उपासना) करना,[3] सीधा मार्ग यही है ।[4]

وَأَنِ ٱعْبُدُونِى ۚ هَٰذَا صِرَٰطٌ مُّسْتَقِيمٌ ﴿٦١﴾

(६२) तथा शैतान ने तो तुममें से अधिकतर गिरोहों को बहका दिया, क्या तुम बुद्धि नहीं रखते ।[5]

وَلَقَدْ أَضَلَّ مِنكُمْ جِبِلًّا كَثِيرًا ۖ أَفَلَمْ تَكُونُوا۟ تَعْقِلُونَ ﴿٦٢﴾

दूसरे स्थान पर फ़रमाया ﴿وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ يَتَفَرَّقُونَ﴾ (अर्रूम-१४) ﴿يَوْمَئِذٍ يَصَّدَّعُونَ﴾ (अर्रूम-४३) أي يصيرون صدعين فرقتين "उस दिन लोग दो समुदायों में विभाजित हो जायेंगे" दूसरा अभिप्राय यह है कि अपराधियों ही को विभिन्न समूहों में अलग-अलग कर दिया जायेगा, जैसे यहूदियों का समूह, इसाईयों का समूह, साबियों का समूह, अग्नि पूजकों का समूह, व्यभिचारियों तथा मदिरा पान करने वालों का गिरोह इत्यादि ।

[1]इससे तात्पर्य عهدألست है, जो वचन आदम की पीठ से निकालने के समय लिया गया अथवा वह वसीयत है जो पैग़म्बरों के मुख से लोगों को की जाती रही । तथा कुछके यहाँ वह वौद्धिक तर्क है जो आकाश तथा धरती में अल्लाह ने स्थापित किये हैं (फ़तहुल क़दीर) ।

[2]यह उसका कारण है कि तुम्हें शैतान की वंदना तथा उसका शंसय मानने से इसलिए रोका गया था कि वह तुम्हारा खुला शत्रु है, तथा उसने तुम्हें पथभ्रष्ट करने की शपथ ले रखी है ।

[3]अर्थात यह भी वचन लिया था कि मात्र मेरी ही वंदना करना, मेरी वंदना में किसी को साझी न वनाना ।

[4]अर्थात मात्र एक अल्लाह की आराधना करना, यही वह सीधा मार्ग है जिसकी ओर सभी अम्बिया बुलाते रहे तथा यही अभीष्ट स्थान अर्थात स्वर्ग तक पहुँचने वाला है ।

[5]अर्थात इतनी भी वुद्धि तुममें नहीं कि शैतान तुम्हारा शत्रु है, उसकी बात नहीं माननी चाहिए, तथा मैं तुम्हारा प्रभु हूँ, मैं ही तुम्हें जीविका प्रदान करता हूँ तथा मैं ही तुम्हारी रात-दिन रक्षा करता हूँ । अत: तुम्हें मेरी आज्ञा माननी चाहिए तुम शैतान की शत्रुता

هٰذِهٖ جَهَنَّمُ الَّتِىۡ كُنۡتُمۡ تُوۡعَدُوۡنَ ﴿٦٣﴾

(६३) यही वह नरक है जिसका तुम्हें वचन दिया जाता था।

اِصۡلَوۡهَا الۡيَوۡمَ بِمَا كُنۡتُمۡ تَكۡفُرُوۡنَ ﴿٦٤﴾

(६४) अपने कुफ्र का बदला प्राप्त करने के लिए आज उसमें प्रवेश कर जाओ।[1]

اَلۡيَوۡمَ نَخۡتِمُ عَلٰٓى اَفۡوَاهِهِمۡ وَتُكَلِّمُنَاۤ اَيۡدِيۡهِمۡ وَتَشۡهَدُ اَرۡجُلُهُمۡ بِمَا كَانُوۡا يَكۡسِبُوۡنَ ﴿٦٥﴾

(६५) हम आज के दिन उनके मुख पर मुद्रायें (मोहरें) लगा देंगे तथा उनके हाथ हमसे बात करेंगे तथा उनके पैर गवाही देंगे उनके कार्यों की जो वे करते थे।[2]

وَلَوۡ نَشَآءُ لَطَمَسۡنَا عَلٰٓى اَعۡيُنِهِمۡ فَاسۡتَبَقُوا الصِّرَاطَ فَاَنّٰى يُبۡصِرُوۡنَ ﴿٦٦﴾

(६६) तथा यदि हम चाहते तो उनकी आँखें अंधी कर देते, फिर ये मार्ग की ओर दौड़ते भागते परन्तु उन्हें कैसे दिखाई देता ?[3]

तथा मेरी वन्दना के अधिकार को न समझ कर अति निर्बोध तथा मूर्खता का प्रदर्शन कर रहे हो।

[1]अर्थात अब उस मूर्खता का फल भोगो तथा अपने कुफ्र (इंकार) के कारण नरक की कड़ी यातना का स्वाद चखो।

[2]यह मुद्रा (मोहर) लगाने की आवश्यकता इसलिए होगी कि आरम्भ में मुशरेकीन (द्वैतवादी) प्रलय के दिन भी झूठ बोलेंगे, तथा कहेंगे।

﴿وَاللّٰهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشۡرِكِيۡنَ﴾

"अल्लाह की क़सम जो हमारा प्रभु है, हम मिश्रणवादी (मुशरिक) नहीं थे।" (*अल-अनआम-२३*)

तो अल्लाह उनके मुखों पर मोहर लगा देगा जिससे वह तो स्वयं बोलने की शक्ति से वंचित हो जायेंगे। हाँ, अल्लाह तआला (परमेश्वर) मानवीय अंगों को वाक शक्ति प्रदान करेगा। हाथ बोलेंगे कि हमसे इसने अमुक-अमुक काम लिया था तथा पग गवाही देंगे। यूँ मानो इक़रार तथा गवाही दोनों समस्याओं का समाधान हो जायेगा। इसके सिवाय बोलने वाले के विपरीत अनबोल वस्तुओं का गवाही देना युक्ति एवं तर्क में अधिक प्रभावी है कि इसमें एक चमत्कारी दशा पायी जाती है (फ़तहुल क़दीर)। इस विषय का अहादीस में भी वर्णन किया गया है। (देखिये सहीह मुस्लिम, किताबुज़्ज़ुहद)

[3]अर्थात दृष्टि से वंचित होने के पश्चात उन्हें मार्ग किस प्रकार दिखायी देता ? किन्तु यह तो हमारी सहनशीलता एवं दया है कि हमने ऐसा नहीं किया।

(६७) तथा यदि हम चाहते तो उनके स्थान ही पर उनके मुख विकृत कर देते, फिर न वे चल-फिर सकते तथा न लौट सकते ।[1]

وَلَوْ نَشَاءُ لَمَسَخْنَٰهُمْ عَلَىٰ مَكَانَتِهِمْ فَمَا ٱسْتَطَٰعُوا۟ مُضِيًّا وَلَا يَرْجِعُونَ ﴿٦٧﴾

(६८) तथा जिसे हम बूढ़ा करते हैं उसे जन्म के समय की अवस्था की ओर पुन: लौटा देते हैं,[2] क्या फिर भी वह नहीं समझते ?[3]

وَمَن نُّعَمِّرْهُ نُنَكِّسْهُ فِى ٱلْخَلْقِ ۖ أَفَلَا يَعْقِلُونَ ﴿٦٨﴾

(६९) तथा न तो हमने इस पैग़म्बर को काव्य सिखाया तथा न यह इसके योग्य है । यह तो केवल शिक्षा तथा स्पष्ट क़ुरआन है ।[4]

وَمَا عَلَّمْنَٰهُ ٱلشِّعْرَ وَمَا يَنۢبَغِى لَهُۥٓ ۚ إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ وَقُرْءَانٌ مُّبِينٌ ﴿٦٩﴾

---

[1]अर्थात न आगे जा सकते न पीछे लौट सकते अपितु पत्थर के समान एक स्थान पर पड़े रहते । مَسْخ (मस्ख़) पैदाईश में परिवर्तन के हैं, अर्थात मानव से पत्थर अथवा पशु के रूप में बदल देना ।

[2]अर्थात हम जिसको दीर्घ आयु देते हैं उसकी पैदाईश को बदलकर विपरीत स्थिति में कर देते हैं । अर्थात जब वह बच्चा होता है तो बढ़ता रहता है तथा उसकी मांसिक एवं शारीरिक शक्ति में प्रगति होती रहती है । यहाँ तक कि वह युवा एवं अधेड़ आयु को पहुँच जाता है । उसके पश्चात उसके विपरीत मानसिक तथा शारीरिक शक्ति में दुर्बलता एवं पतन का कार्य आरम्भ हो जाता है यहाँ तक कि वह एक बच्चे के समान हो जाता है ।

[3]कि जो अल्लाह इस तरह कर सकता है क्या वह पुन: इन्सानों को जीवित करने पर समर्थ नहीं ?

[4]मक्का के मूर्तिपूजक नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विषय में विभिन्न बातें कहते रहते थे । उनमें एक बात यह भी थी कि आप कवि हैं तथा यह पवित्र क़ुरआन आपकी कविता की तुकबन्दी है । अल्लाह ने उसका खण्डन किया कि आप कवि हैं न पवित्र क़ुरआन कविता का संग्रह है, अपितु यह मात्र नसीहत एवं शिक्षा है । कविता में साधारणत: अतिश्योक्ति तथा मात्र कल्पनाओं की विचित्रता होती है । यूँ मानो वह झूठ पर आधारित होती है । इसके सिवा कवि मात्र बात के वीर होते हैं कर्म के नहीं । इसलिए अल्लाह तआला (परमेश्वर) ने फ़रमाया कि हमने अपने पैग़म्बर को काव्य नहीं सिखाये न कविता की उसकी ओर प्रकाशना (वह्यी) की, अपितु उसका स्वभाव एवं

(७०) ताकि वह हर उस व्यक्ति को सावधान कर दे जो जीवित है[1] तथा काफ़िरों पर सत्य (तर्क) सिद्ध हो जाये ।[2]

لِّيُنذِرَ مَن كَانَ حَيًّا وَيَحِقَّ الْقَوْلُ عَلَى الْكَافِرِينَ ۞

(७१) क्या वह नहीं देखते कि हमने अपने हाथों बनायी [3] हुई वस्तुओं में से उनके लिए चौपाये (पशु [4] भी) पैदा कर दिये, जिनके ये

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا خَلَقْنَا لَهُم مِّمَّا عَمِلَتْ أَيْدِينَا أَنْعَامًا

प्राकृति ऐसी बनाई कि उसको काव्य से कोई लगाव ही नहीं । यही कारण है कि जब आप किसी की कविता पढ़ते तो अधिकांश सही नहीं पढ़ते तथा उसका संतुलन टूट जाता, जिसके उदाहरण अहादीस में विद्यमान हैं । यह सावधानी इस कारण से की गई कि इन्कार करने वालों पर तर्क पूरा कर दिया जाये तथा उनकी शंकाओं का निवारण कर दिया जाये तथा वह यह न कह सकें कि यह क़ुरआन इसकी कविता तुकबन्दी का परिणाम है । जैसे आप की अनभिज्ञता भी शंका निवारण के लिए है ताकि लोग इस संदर्भ में यह न कह सकें कि यह तो उसने अमुक से सीख पढ़कर इसका संकलन कर लिया है । हाँ, कुछ अवसरों पर आपके पवित्र मुखार से ऐसे शब्दों का निकल जाना जो काव्य के दो चरणों के सदृश होते तथा कविता वजन एवं छन्दों के भी अनुरूप होते, आप के कवि होने का प्रमाण नहीं बन सकते, क्योंकि ऐसा आपके इरादे तथा संकल्प के बिना हुआ तथा इनका कविता के साँचे में ढल जाना एक संयोग था, जैसे हुनैन के दिन आप के मुख से अकस्मात यह एक छन्द जारी हो गया ।

أَنَا النَّبِيُّ لَا كَذِبْ - أَنَا ابْنُ عَبْدِالْمُطَّلِبْ

तथा एक और अवसर पर आपकी उँगली घायल हो गई तो आपने फ़रमाया :

هَلْ أَنْتِ إِلَّا إِصْبَعٌ دَمِيتِ - وَفِي سَبِيلِ اللهِ مَا لَقِيتِ . (सहीह बुख़ारी, किताबुल जिहाद)

[1]अर्थात जिस का दिल स्वच्छ हो सत्य को स्वीकार करता है तथा असत्य को नकारता है ।

[2]अर्थात जो कुफ़्र पर दुराग्रही हो, उस पर यातना का कथन सिद्ध हो जाये । لِيُنْذِرَ में सर्वनाम पवित्र क़ुरआन की ओर फिरता है ।

[3]इससे अन्यों की साझेदारी को नकारा है उनको हमने अपने हाथों से बनाया है किसी और का इनके बनाने में साझा नहीं है ।

[4] أنعام बहुवचन है نَعَم का । इससे अभिप्राय चौपाये हैं, अर्थात ऊँट, गाये, बकरी (भेड़ तथा दुंबा) ।

فَهُمْ لَهَا مَٰلِكُونَ ﴿٧١﴾

स्वामी हो गये हैं ।[1]

وَذَلَّلْنَٰهَا لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوبُهُمْ وَمِنْهَا يَأْكُلُونَ ﴿٧٢﴾

(७२) तथा उन (पशुओं) को हमने उनके वश में कर दिया है[2] जिनमें से कुछ तो उनकी सवारियाँ हैं तथा कुछ का माँस खाते हैं ।

وَلَهُمْ فِيهَا مَنَٰفِعُ وَمَشَارِبُ ۖ أَفَلَا يَشْكُرُونَ ﴿٧٣﴾

(७३) तथा उन्हें उनसे अन्य भी बहुत से लाभ हैं[3] एवं पेय वस्तुएं । क्या फिर (भी) ये कृतज्ञता व्यक्त नहीं करते ?

وَٱتَّخَذُوا۟ مِن دُونِ ٱللَّهِ ءَالِهَةً لَّعَلَّهُمْ يُنصَرُونَ ﴿٧٤﴾

(७४) तथा वह अल्लाह के सिवाय दूसरों को उपास्य बनाते हैं कि उनकी सहायता की जाये ।[4]

لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَهُمْ وَهُمْ لَهُمْ جُندٌ مُّحْضَرُونَ ﴿٧٥﴾

(७५) (यद्यपि) उनमें उनकी सहायता की शक्ति नहीं फिर भी (मूर्तिपूजक) उनकी उपस्थित सेना हैं ।[5]

---

[1]अर्थात जैसे चाहते हैं उनसे काम लेते हैं । हम यदि उनमें जंगलीपन रख देते (जैसाकि कुछ पशुओं में है) वह उनसे दूर भागते तथा उनके स्वामित्व एवं अधिकार में न आते ।

[2]अर्थात इन जानवरों से वह जैसा चाहते हैं लाभ प्राप्त करते हैं वे इंकार नहीं करते, यहाँ तक की उन्हें वध कर देते हैं तथा छोटे बच्चे भी उन्हें खींचते फिरते हैं ।

[3]अर्थात सवारी तथा खाने के अतिरिक्त भी बहुत से लाभ प्राप्त किये जाते हैं, जैसे उनके ऊन तथा बालों से कई चीज़ें बनती हैं । उनकी चर्बी (वसा) से तेल प्राप्त होता है तथा यह भारवाहन एवं खेती-बाड़ी के भी काम आते हैं ।

[4]यह उनकी कृतघ्नता का वर्णन है कि उपरोक्त अनुकम्पायें, जिनसे यह लाभान्वित होते हैं, सभी अल्लाह की पैदा की हुई हैं । किन्तु यह अल्लाह की इन अनुकम्पाओं पर उसकी कृतज्ञता की जगह अर्थात वंदना तथा आज्ञाकारिता के बजाय यह दूसरों से आसरा बाँधते हैं तथा उन्हें आराध्य बनाते हैं ।

[5] جُنْدٌ से अभिप्राय मूर्तियों के पक्षधर उनके रक्षक हैं, مُحْضَرُون जगत में उनके पास उपस्थित रहने वाला । अभिप्राय यह है कि यह जिन मूर्तियों को पूज्य समझते हैं वह उनकी सहायता क्या करेंगे ? वह तो स्वयं अपनी सहायता करने से विवश हैं । उन्हें कोई

فَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ إِنَّا نَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ۝٧٦

(७६) अत: आप को उनकी बात शोकग्रस्त न करे, हम उनके गुप्त तथा प्रकट सभी बातों को (भली-भाँति) जानते हैं।

أَوَلَمْ يَرَ الْإِنسَانُ أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِن نُّطْفَةٍ فَإِذَا هُوَ خَصِيمٌ مُّبِينٌ ۝٧٧

(७७) क्या इन्सान को इतना भी ज्ञान नहीं कि हमने उसे वीर्य से पैदा किया है ? फिर भी यह खुला झगड़ालू बन बैठा।

وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَنَسِيَ خَلْقَهُ ۖ قَالَ مَن يُحْيِي الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيمٌ ۝٧٨

(७८) तथा उसने हमारे लिये उदाहरण वर्णन किया तथा अपनी (मूल) उत्पत्ति को भूल गया, कहने लगा कि इन सड़ी-गली अस्थियों को कौन जीवित कर सकता है।

قُلْ يُحْيِيهَا الَّذِي أَنشَأَهَا أَوَّلَ مَرَّةٍ ۖ وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيمٌ ۝٧٩

(७९) कह दीजिए कि उन्हें वह जीवित करेगा जिसने उन्हें प्रथम बार पैदा किया,[1] जो सब प्रकार की पैदाईश को भली-भाँति जानने वाला है।

الَّذِي جَعَلَ لَكُم مِّنَ الشَّجَرِ الْأَخْضَرِ نَارًا فَإِذَا أَنتُم مِّنْهُ تُوقِدُونَ ۝٨٠

(८०) वही है जिसने तुम्हारे लिए हरे पेड़ से अग्नि पैदा कर दी जिससे तुम आग सुलगाते हो।[2]

बुरा कहे, उनकी भर्त्सना करे तो यही उन के पक्ष तथा रक्षा में संलग्न होते हैं न कि स्वयं उनके उपास्य।

[1]अर्थात जो अल्लाह एक हीन वीर्य से इन्सान को पैदा करता है, वह उसे पुर्नजीवित करने पर समर्थ नहीं है ? उसके मुर्दों को जीवित करने की एक कथा हदीस में वर्णित है कि एक व्यक्ति ने निधन के समय यह वसीयत की कि मरने के बाद उसे जलाकर आधी राख समुद्र में तथा आधी राख प्रचन्ड वायु के दिन थल में उड़ा दी जाये। अल्लाह ने सभी राख एकत्र करके उसे जीवन प्रदान किया तथा उससे पूछा कि तूने ऐसा क्यों किया ? उसने कहा तेरे भय से, अल्लाह ने उसे क्षमा कर दिया। (सहीह बुख़ारी, किताबुल अम्बिया)

[2]कहते हैं कि अरब में दो वृक्ष हैं, मर्ख तथा अफार । इनकी दो लकड़ियाँ परस्पर रगड़ी जायें तो आग पैदा होती है। हरे वृक्ष से आग पैदा करने के हवाले से इसी की ओर संकेत अभिप्राय है।

(८१) जिसने आकाशों तथा धरती को पैदा किया है क्या वह इन जैसों के[1] पैदा करने पर सामर्थ नहीं ? निश्चय सामर्थ है तथा वही तो रचयिता ज्ञाता है।

أَوَلَيْسَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَٰوَٰتِ وَالْأَرْضَ بِقَٰدِرٍ عَلَىٰٓ أَن يَخْلُقَ مِثْلَهُم ۚ بَلَىٰ وَهُوَ الْخَلَّٰقُ الْعَلِيمُ ﴿٨١﴾

(८२) जब वह किसी वस्तु का इरादा करता है उसे इतना कह देना (बस) है कि हो जा, वह तत्क्षण हो जाती है।

إِنَّمَآ أَمْرُهُۥٓ إِذَآ أَرَادَ شَيْـًٔا أَن يَقُولَ لَهُۥ كُن فَيَكُونُ ﴿٨٢﴾

(८३) तो पवित्र है [2] वह अल्लाह जिसके हाथ में प्रत्येक वस्तु का राज्य है तथा जिसकी ओर[3] तुम सब लौटाये जाओगे।[4]

فَسُبْحَٰنَ الَّذِي بِيَدِهِۦ مَلَكُوتُ كُلِّ شَيْءٍ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٨٣﴾

---

[1]अर्थात इन्सानों जैसे। अभिप्राय इन्सानों को पुन: जीवित करना है जैसे प्रथम बार पैदा किया आकाशों तथा धरती की पैदाईश से इन्सानों को पुन: जीवन प्रदान करने का प्रमाण दिया है जैसे दूसरे स्थान पर कहा :

﴿ لَخَلْقُ السَّمَٰوَٰتِ وَالْأَرْضِ أَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ ﴾

"आकाशों तथा धरती की रचना मानव रचना से अधिक कठिन कार्य है।" *(अल-मोमिन-५७)*

सूर: अहक़ाफ़ में भी इस विषय का वर्णन है।

[2]अर्थात उसकी महिमा तो यह है, फिर उसके लिए सब इन्सानों का जीवित कर देना कौन सा कठिन विषय है ?

[3] مُلْك तथा ملكوت दोनों समानार्थक हैं अर्थात राज्य, जैसे رحمة तथा رحموتٌ، رهبة तथा جبرٌ ، رهبوت तथा جبروت आदि (इब्ने कसीर)। कुछ इसे अतिश्योक्ति का रूप मानते हैं (फ़तहुल क़दीर)। अर्थात ملكوت अतिश्योक्ति है مُلْك की।

[4]अर्थात यह नहीं होगा कि मिट्टी में घुल-मिलकर तुम्हारा अस्तित्व सदा के लिये समाप्त हो जाये। नहीं, अपितु फिर जीवन प्रदान किया जायेगा, यह भी नहीं होगा कि तुम भाग कर किसी अन्य के पास शरण लो। तुम्हें प्रत्येक स्थिति में अल्लाह ही के सदन में उपस्थित होना होगा, जहाँ वह कर्मों के अनुसार अच्छा-बुरा बदला प्रदान करेगा।

सूरतुस्साफ़्फ़ात-३७

سُوْرَةُ الصَّافَّاتِ

सूर: साफ़्फ़ात मक्का में अवतरित हुई, इसमें एक सौ बयासी आयतें तथा पाँच रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

وَالصّٰٓفّٰتِ صَفًّا ۙ﴿۱﴾

(१) सौगन्ध है पंक्तिबद्ध होने वाले (फ़रिश्तों) की।

فَالزّٰجِرٰتِ زَجْرًا ۙ﴿۲﴾

(२) फिर पूर्ण रूप से डाँटने वालों की।

فَالتّٰلِيٰتِ ذِكْرًا ۙ﴿۳﴾

(३) फिर अल्लाह का पाठ करने वालों की।

اِنَّ اِلٰهَكُمْ لَوَاحِدٌ ؕ﴿۴﴾

(४) वस्तुत: तुम सब का पूज्य एक ही है।[1]

رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ الْمَشَارِقِ ؕ﴿۵﴾

(५) आकाशों तथा धरती एवं उनके मध्य की समस्त वस्तुओं तथा समस्त पूर्वी दिशाओं का वही प्रभु है।[2]

---

[1]صافات ، زاجرات ، تاليات फ़रिश्तों के गुण हैं आकाशों पर अल्लाह की इबादत के लिए पंक्तिबद्ध होने वाले अथवा अल्लाह के आदेश की प्रतीक्षा में पंक्तिबद्ध, शिक्षा-दीक्षा द्वारा लोगों को डाँटने वाले अथवा मेघों को जहाँ अल्लाह का आदेश हो वहाँ हाँक कर ले जाने वाले। अल्लाह के स्मरण अथवा पवित्र क़ुरआन का पाठ करने वाले। इन फ़रिश्तों की शपथ लेकर अल्लाह ने इस विषय का वर्णन किया है कि समस्त मानव जाति का उपास्य एक ही है अनेक नहीं, जैसाकि मूर्तिपूजकों ने बना लिये है। साधारण परिभाषा में शपथ, वल देने तथा शंका निवारण के लिए ग्रहण की जाती है। अल्लाह तआला ने यहाँ शपथ उसी शंका के निवारण के लिए ली है जो मूर्तिपूजक उसकी एकता एव उपास्य होने के विषय में फैलाते हैं। इसके अतिरिक्त, प्रत्येक वस्तु अल्लाह की रचित एवं उसके स्वामित्व में है, अत: वह जिस वस्तु को भी साक्षी बनाकर उसकी कसम खाये उस के लिए उचित है। परन्तु मनुष्य के लिए अल्लाह के सिवाय किसी की कसम खाना पूर्णत: अनुचित तथा निषेध है, क्योंकि कसमें जिस वस्तु की खाई जाती है उसे गवाह बनाना उद्देश्य होता है, तथा गवाह अल्लाह के सिवाय कोई नहीं बन सकता, क्योंकि परोक्ष का जानकार केवल वही है उसके सिवाय परोक्ष का जानकार कोई नहीं

[2]अभिप्राय है पश्चिम तथा पूर्व दिशाओं का प्रभु। बहुवचन का शब्द इस कारण से प्रयोग किया गया कि कुछ कहते हैं कि वर्ष के दिनों की संख्या के बरावर पूर्व एवं पश्चिम हैं।

إِنَّا زَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِزِينَةٍ الْكَوَاكِبِ ۝٦

(६) हमने संसार के (निकट) आकाश को सितारों से सुशोभित एवं अलंकृत किया है।

وَحِفْظًا مِّن كُلِّ شَيْطَانٍ مَّارِدٍ ۝٧

(७) तथा (हमने ही उसकी) सुरक्षा की है प्रत्येक उद्दण्ड शैतान से।[1]

لَّا يَسَّمَّعُونَ إِلَى الْمَلَإِ الْأَعْلَىٰ وَيُقْذَفُونَ مِن كُلِّ جَانِبٍ ۝٨

(८) उच्च संसार (परलोक) के फ़रिश्तों (की बातों) को सुनने के लिए वे कान भी नहीं लगा सकते बल्कि चारों ओर से वे मारे जाते हैं।

دُحُورًا ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ وَاصِبٌ ۝٩

(९) भगाने के लिए तथा उनके लिए स्थाई यातना है।

إِلَّا مَنْ خَطِفَ الْخَطْفَةَ فَأَتْبَعَهُ شِهَابٌ ثَاقِبٌ ۝١٠

(१०) परन्तु जो एक-आध बात उचक ले भागे तो (तुरन्त ही) उसके पीछे दहकता हुआ शोला लग जाता है।

فَاسْتَفْتِهِمْ أَهُمْ أَشَدُّ خَلْقًا أَم مَّنْ

(११) इन काफ़िरों से पूछो तो कि उनका पैदा करना अधिक कठिन है अथवा जिन्हें

ऐसे ही दो पूर्व एवं पश्चिम से तात्पर्य वह दो पूर्व तथा पश्चिम हैं जिनसे सूर्य गर्मी तथा सर्दी में उदय एवं अस्त होता है, अर्थात एक अत्यन्त अन्तिम पूर्व तथा पश्चिम, दूसरे संक्षिप्त वा निकटतम पूर्व तथा पश्चिम। तथा जहाँ पूर्व तथा पश्चिम को एक वचन वर्णन किया गया है उससे अभिप्राय वह दिशा है जिससे सूर्य निकलता अथवा डूबता है (फ़तहुल क़दीर)।

[1]अर्थात दुनिया के आकाश पर, शोभा के अतिरिक्त तारों का दूसरा उद्देश्य यह है कि उदण्ड शैतानों से सुरक्षा हो। तो जब शैतान आकाश पर कोई बात सुनने के लिए जाते हैं, तो तारे उन पर टूट कर गिरते हैं, जिससे साधारणत: शैतान जल जाते हैं जैसाकि आगामी आयत तथा हदीसों से स्पष्ट है। तारों का एक तीसरा उद्देश्य रात्रि के अंधकार में मार्ग दर्शाना भी है, जैसाकि क़ुरआन में दूसरे स्थान पर वर्णन किया गया है। इन तीनों उद्देश्यों के अतिरिक्त तारों का कोई और उद्देश्य नहीं बताया गया है।

خَلَقْنَا ۭ اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّنْ طِيْنٍ لَّازِبٍ ⑪

हमने पैदा किया है ?[1] हमने तो मनुष्यों को लस्सेदार मिट्टी से पैदा किया है ।[2]

بَلْ عَجِبْتَ وَيَسْخَرُوْنَ ⑫

(१२) बल्कि तू आश्चर्य कर रहा है तथा ये उपहास कर रहे हैं ।[3]

وَاِذَا ذُكِّرُوْا لَا يَذْكُرُوْنَ ⑬

(१३) तथा जब उन्हें शिक्षा दी जाती है तो ये नहीं मानते ।

وَاِذَا رَاَوْا اٰيَةً يَّسْتَسْخِرُوْنَ ⑭

(१४) तथा जब किसी चमत्कार को देखते हैं तो उपहास उड़ाते हैं ।

وَقَالُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ⑮

(१५) तथा कहते हैं कि यह तो पूर्ण रूप से प्रत्यक्ष जादू ही है ।[4]

ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ⑯

(१६) क्या जब हम मर जायेंगे तथा मिट्टी एवं हड्डी हो जायेंगे फिर क्या (वास्तव में) हम जीवित किये जायेंगे ?

---

[1]अर्थात हमने जो धरती, फ़रिश्ते तथा आकाश जैसी वस्तुयें बनाई हैं जो अपनी स्थूलता एवं विस्तार में अति विचित्र हैं, क्या इन लोगों को पैदा करना एवं पुन: पैदा करना उन वस्तुओं के पैदा करने से अधिक कठिन है ? निश्चय नहीं ।

[2]अर्थात उनके बाबा आदम को तो हमने मिट्टी से पैदा किया है । अभिप्राय यह है कि यह मानवजाति परलोक के जीवन को इतना असम्भव क्यों समझती हैं हालांकि उसकी पैदाइश एक अति तुच्छ एवं कमज़ोर वस्तु से हुई है, जबकि पैदाइश में उससे अधिक शक्तिशाली एवं महान तथा पूर्ण वस्तुओं की पैदाइश का उनको इंकार नहीं है (फ़तहुल क़दीर) ।

[3]अर्थात आपको आख़िरत (परलोक) के इंकार करने वालों पर आश्चर्य हो रहा है कि उसकी संभावना बल्कि अनिवार्यता के इतने प्रत्यक्ष प्रमाण के उपरान्त उसे मान क्यों नहीं रहे हैं तथा वे आपके क़ियामत के दावे का उपहास कर रहे हैं कि यह क्योंकर सम्भव है ।

[4]अर्थात यह उनकी रीति है कि शिक्षा ग्रहण करते नहीं, तथा कोई स्पष्ट युक्ति अथवा चमत्कार प्रस्तुत किया जाये तो हँसी उड़ाते हैं तथा उसे जादू बताते हैं ।

(१७) अथवा हम से पहले के हमारे पूर्वज भी ?	أَوَآبَاؤُنَا الْأَوَّلُونَ ⑰
(१८) (आप) उत्तर दीजिए कि हाँ, तथा तुम अपमानित (भी) होगे ।[1]	قُلْ نَعَمْ وَأَنتُمْ دَاخِرُونَ ⑱
(१९) वह तो केवल एक जोरदार डाँट होगी[2] कि सहसा ये देखने लगेंगे ।[3]	فَإِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَاحِدَةٌ فَإِذَا هُمْ يَنظُرُونَ ⑲
(२०) तथा कहेंगे कि हाय रे हमारा विनाश, यही बदले का दिन है ।	وَقَالُوا يَا وَيْلَنَا هَٰذَا يَوْمُ الدِّينِ ⑳
(२१) यही निर्णय का दिन है जिसे तुम झुठलाते रहे ।[4]	هَٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ الَّذِي كُنتُم بِهِ تُكَذِّبُونَ ㉑

---

[1]जैसे दूसरे स्थान पर भी फ़रमाया :

﴿ وَكُلٌّ أَتَوْهُ دَاخِرِينَ ﴾

"सब उसके सदन में निरादर होकर जायेंगे "(*अन्नमल-८७*)

﴿ إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دَاخِرِينَ ﴾

"जो लोग मेरी उपासना से इंकार करते हैं शीघ्र ही वे नरक में अपमानित होकर प्रवेश करेंगे ।" (*अल-मोमिन-६०*)

[2]अर्थात वह अल्लाह के एक ही आदेश तथा इस्राफ़ील की एक ही फूँक (दूसरी फूँक) से क़ब्रों से निकलकर जीवित खड़े होंगे ।

[3]अर्थात उनके सामने क़ियामत के भयानक दृश्य तथा मैदान महशर की कठिनाईयाँ होंगी जिसे वह देखेंगे । फूँक अथवा चीख़ को زجرة (डाँट) कहा है, क्योंकि उससे उद्देश्य डाँट ही है ।

[4] ويل (वैल) शब्द विनाश के अवसर पर बोला जाता है, अर्थात यातना के दर्शन के पश्चात उन्हें अपना विनाश प्रत्यक्ष रूप से दिख रहा होगा, तथा इससे अभिप्राय लज्जा का प्रदर्शन तथा अपने दोषों का इक़रार (स्वीकार) है । किन्तु इस समय लज्जा एवं स्वीकार का कोई लाभ न होगा अतः इसके उत्तर में फ़रिश्ते तथा ईमानवाले कहेंगे कि

اُحْشُرُوا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا وَاَزْوَاجَهُمْ وَمَا كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ ۝٢٢

(२२) अत्याचारियों को [1] तथा उनके साथियों को[2] तथा जिन-जिन की वे (अल्लाह के अतिरिक्त पूजा करते थे।[3]

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَاهْدُوْهُمْ اِلٰى صِرَاطِ الْجَحِيْمِ ۝٢٣

(२३) (उन सबको) एकत्रित करके उन्हें नरक का मार्ग दिखा दो।

وَقِفُوْهُمْ اِنَّهُمْ مَّسْـُٔوْلُوْنَ ۝٢٤

(२४) तथा उन्हें ठहरा लो[4] (इसलिए) कि उनसे आवश्यक प्रश्न किये जाने वाले हैं।

مَا لَكُمْ لَا تَنَاصَرُوْنَ ۝٢٥

(२५) क्या कारण है कि (इस समय) तुम एक-दूसरे की सहायता नहीं करते।

بَلْ هُمُ الْيَوْمَ مُسْتَسْلِمُوْنَ ۝٢٦

(२६) बल्कि वे (सबके सब) आज आज्ञाकारी बन गये।

यह वही निर्णय का दिन है जिसे तुम मानते नहीं थे। यह भी सम्भव है कि परस्पर एक-दूसरे से कहेंगे।

[1]अर्थात जिन्होंने कुफ़्र एवं शिर्क तथा आज्ञा उलंघन किया। यह अल्लाह की ओर से आदेश होगा।

[2]इससे अभिप्राय कुफ़्र एवं शिर्क तथा रसूलों को झुठलाने के साथी अथवा कुछ के निकट जिन्न तथा शैतान हैं, तथा कुछ कहते हैं कि वह पत्नियाँ हैं जो कुफ़्र तथा शिर्क में उनसे सहमत थीं।

[3] مَا (मा) सभी पूज्यों के लिये है चाहे वह मूर्तियाँ हों अथवा अल्लाह के पुनीत भक्त, सबको उनको अपमानित के लिए एकत्र किया जायेगा। फिर भी सदाचारियों को तो अल्लाह महान नरक से दूर ही रखेगा। तथा अन्य उपास्यों को नरक में उनके साथ ही झोंक दिया जायेगा ताकि वह देख लें कि यह किसी को लाभ-हानि पहुँचाने पर समर्थ नहीं हैं।

[4]यह आदेश नरक में ले जाने से पूर्व होगा क्योंकि वह हिसाब के पश्चात ही नरक में जायेंगे।

(२७) वे एक-दूसरे को सम्बोधित करके प्रश्नोत्तर करने लगेंगे। وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ﴿٢٧﴾

(२८) कहेंगे कि तुम तो हमारे पास हमारी दायीं ओर से आते थे।[1] قَالُوا إِنَّكُمْ كُنتُمْ تَأْتُونَنَا عَنِ الْيَمِينِ ﴿٢٨﴾

(२९) वह उत्तर देंगे कि नहीं, बल्कि तुम ही ईमान वाले न थे।[2] قَالُوا بَل لَّمْ تَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ﴿٢٩﴾

(३०) तथा कुछ हमारा ज़ोर तुम पर था (ही) नहीं। बल्कि तुम लोग (स्वयं) उद्दण्ड लोग थे।[3] وَمَا كَانَ لَنَا عَلَيْكُم مِّن سُلْطَانٍ ۖ بَلْ كُنتُمْ قَوْمًا طَاغِينَ ﴿٣٠﴾

(३१) अब तो हम (सब) पर हमारे प्रभु की यह बात सिद्ध हो चुकी कि हम (यातना का) स्वाद चखने वाले हैं। فَحَقَّ عَلَيْنَا قَوْلُ رَبِّنَا ۖ إِنَّا لَذَائِقُونَ ﴿٣١﴾

(३२) तो हमने तुम्हें पथभ्रष्ट किया हम तो स्वयं भी पथभ्रष्ट ही थे।[4] فَأَغْوَيْنَاكُمْ إِنَّا كُنَّا غَاوِينَ ﴿٣٢﴾

---

[1]इसका अभिप्राय है कि धर्म तथा सत्य के नाम से आते थे अर्थात विश्वास दिलाते थे कि यही मूल एवं सत्य धर्म है। तथा कुछ के निकट अभिप्राय यह है कि प्रत्येक दिशा से आते थे, والشمال (तथा बायें से) लुप्त है। जिस प्रकार शैतान ने कहा था। "मैं उनके आगे-पीछे, दायें-बायें हर ओर से उनके पास आऊँगा तथा उन्हें बहकाउँगा।" (*अल-आराफ़-१७*)

[2]अगुवा कहेंगे कि ईमान तुम अपनी इच्छा से नहीं लाये तथा आज दोष हमें दे रहे हो ?

[3]अगुवा तथा अनुगामियों का यह परस्पर विवाद पवित्र क़ुरआन के कई स्थानों में चर्चित है। उनकी परस्पर निन्दा महशर के मैदान में होगी तथा नरक में जाने के बाद नरक में भी। देखो *अल-मोमिन-४७,४८, सूर: सबा-३१,३२, अल-आराफ़-३८,३९* आदि आयतें।

[4]अर्थात जिस बात को पहले नकारा कि हमारा तुम पर कौन सा ज़ोर था कि तुम्हें पथभ्रष्ट करते अब उसका यहाँ स्वीकार है कि वस्तुतः हमने तुम्हें बहकाया था। किन्तु यह स्वीकार इस चेतावनी के साथ किया कि इस प्रकरण में हमारी निन्दा न करो। इसलिए कि हम स्वयं बहके हुए थे। हमने तुम्हें अपने समान बनाना चाहा तथा तुमने सरलता से हमारा मार्ग अपना लिया, जैसे शैतान भी उस दिन कहेगा :

(३३) तो अब आज के दिन (सबके सब) यातना में हिस्सेदार हैं ।[1]	فَإِنَّهُمْ يَوْمَئِذٍ فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُونَ ﴿٣٣﴾
(३४) हम पापियों के साथ इसी प्रकार किया करते हैं ।[2]	إِنَّا كَذَٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِينَ ﴿٣٤﴾
(३५) ये वे (लोग) हैं कि जब उनसे कहा जाता है कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं, तो यह अहंकार करते थे ।[3]	إِنَّهُمْ كَانُوا إِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللَّهُ يَسْتَكْبِرُونَ ﴿٣٥﴾
(३६) तथा कहते थे कि क्या हम अपने देवताओं को एक दीवाने कवि की बात पर छोड़ दें ।[4]	وَيَقُولُونَ أَئِنَّا لَتَارِكُو آلِهَتِنَا لِشَاعِرٍ مَّجْنُونٍ ﴿٣٦﴾

﴿ وَمَا كَانَ لِيَ عَلَيْكُم مِّن سُلْطَانٍ إِلَّا أَن دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ لِي فَلَا تَلُومُونِي وَلُومُوا أَنفُسَكُم ﴾

(इब्राहीम-२२)

[1]इसलिए कि उनका अपराध भी एक जैसा मिला हुआ है, शिर्क, अवज्ञा तथा आतंक एवं उपद्रव इन सबका व्यवहार था ।

[2]अर्थात प्रत्येक प्रकार के पापियों के साथ हमारा यही व्यवहार है और अब वह सब हमारे दण्ड भुगतेंगे ।

[3]अर्थात दुनिया में जब उनसे कहा जाता था कि जिस प्रकार मुसलमानों ने यह धर्म सूत्र لا إله إلا الله محمد رسول الله (ला एलाहा इल्लल्लाहु मोहम्मदुर्रसलुल्लाह) पढ़कर शिर्क तथा अवज्ञा से क्षमा माँग ली, तुम भी पढ़ लो ताकि तुम संसार में भी मुसलमानों के क्रोध तथा गुस्से से बच जाओ तथा आख़िरत में भी अल्लाह की यातना से तुम्हारा सामना न हो, तो वह अभिमान तथा अहंकार करते एवं इंकार करते । नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का वचन है :

«أُمِرْتُ أَنْ أُقَاتِلَ النَّاسَ حَتَّى يَقُولُوا: لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ، فَمَنْ قَالَ: (لا إله إلَّا الله) فَقَدْ عَصَمَ مِنِّي مَالَهُ وَنَفْسَهُ».

"मुझे इस बात का आदेश दिया गया है कि मैं उस समय तक लोगों से संघर्ष करूँ जब तक वह لا إله إلا الله को स्वीकार न कर लें । जिसने यह अंगीकार कर लिया उसने अपने प्राण तथा माल की रक्षा कर ली ।" (मुत्तफ़क अलैह-किताबुल ईमान)

[4]अर्थात उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कवि तथा दीवाना कहा तथा आप के आमन्त्रण को दीवानगी तथा पवित्र क़ुरआन को काव्य कहा तथा कहा कि हम एक

(३७) (नहीं,नहीं) बल्कि नबी तो हक़ (सत्य धर्म) लाये हैं तथा समस्त रसूलों को सत्य जानते हैं ।[1]

بَلْ جَاءَ بِالْحَقِّ وَصَدَّقَ الْمُرْسَلِينَ ﴿٣٧﴾

(३८) नि:संदेह तुम कष्टदायी यातनाओं (के स्वाद) चखने वाले हो ।

إِنَّكُمْ لَذَائِقُو الْعَذَابِ الْأَلِيمِ ﴿٣٨﴾

(३९) तथा तुम्हें उसी का बदला दिया जायेगा जो तुम करते थे ।[2]

وَمَا تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٣٩﴾

(४०) परन्तु अल्लाह (तआला) के शुद्ध निर्वाचित भक्त ।[3]

إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ﴿٤٠﴾

(४१) उन्हीं के लिए निर्धारित जीविका है ।

أُولَٰئِكَ لَهُمْ رِزْقٌ مَّعْلُومٌ ﴿٤١﴾

(४२) (हर प्रकार के) मेवे तथा वह सम्मानित तथा आदरणीय होंगे ।

فَوَاكِهُ ۖ وَهُم مُّكْرَمُونَ ﴿٤٢﴾

(४३) सुखों वाले स्वर्गों में ।

فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ﴿٤٣﴾

दीवाने के उन्माद पर अपने पूज्यों का त्याग क्यों करें । हालाँकि यह उन्माद नहीं चेतना थी, कविता नहीं यथार्थता थी तथा इस आमन्त्रण को मान लेने में उनका विनाश नहीं मुक्ति थी ।

[1]अर्थात तुम हमारे पैग़म्बर को कवि तथा दीवाना कहते हो, जब कि वास्तविकता यह है कि वह जो कुछ लाया तथा प्रस्तुत कर रहा है वह सत्य है, तथा वही चीज़ है जो उससे पहले सभी अम्बिया प्रस्तुत करते रहे हैं । क्या यह काम किसी दीवाना अथवा किसी कवि की कल्पना का परिणाम हो सकता है ?

[2]यह नरकवासियों से उस समय कहा जायेगा जब वह खड़े परस्पर प्रश्न कर रहे होंगे तथा साथ ही स्पष्ट कर दिया जायेगा कि यह अत्याचार नहीं सर्वथा न्याय है क्योंकि सब तुम्हारे अपने करतूतों का बदला है ।

[3]अर्थात यातना से सुरक्षित होंगे, उनके आलस्य को भी क्षमा कर दिया जायेगा यदि कुछ होगा । तथा एक-एक पुण्य का बदला कई-कई गुना दिया जायेगा ।

عَلٰى سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ ﴿٤٤﴾

(४४) आसनों पर एक-दूसरे के सम्मुख आसीन होंगे।

يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِكَاْسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍۭ ﴿٤٥﴾

(४५) प्रवाहित मदिरा के प्यालों का उन पर दौर चल रहा होगा।[1]

بَيْضَآءَ لَذَّةٍ لِّلشّٰرِبِيْنَ ﴿٤٦﴾

(४६) जो साफ़ सफ़ेद तथा पीने में स्वादिष्ट होंगी।[2]

لَا فِيْهَا غَوْلٌ وَّلَا هُمْ عَنْهَا يُنْزَفُوْنَ ﴿٤٧﴾

(४७) न उससे सिर दर्द होगा तथा न उसके पीने से बहकें।[3]

وَعِنْدَهُمْ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ عِيْنٌ ﴿٤٨﴾

(४८) तथा उनके निकट नीची एवं बड़ी-बड़ी आँखों वाली (हूरें)[4] होंगी।

كَاَنَّهُنَّ بَيْضٌ مَّكْنُوْنٌ ﴿٤٩﴾

(४९) ऐसी जैसे छिपाये हुए अण्डे।[5]

فَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَلُوْنَ ﴿٥٠﴾

(५०) (स्वर्ग वाले) एक-दूसरे की ओर मुख करके पूछेंगे।[6]

---

[1] كَأْس (कास) मदिरा भरे प्याले को तथा قدح (कदह) ख़ाली प्याले को कहते हैं। مَعِين का अर्थ है प्रवाहित स्रोत, अभिप्राय यह है कि प्रवाहित स्रोत की भाँति स्वर्ग में मदिरा प्रत्येक समय सुलभ रहेगी।

[2]संसार में मदिरा साधारणत: कुरंग होती है, स्वर्ग में वह जैसे स्वादिष्ट होगी अच्छे रंग की भी होगी।

[3]अर्थात संसार की मदिरा की तरह इसमें उल्टी, मस्तिष्क पीड़ा, उन्माद तथा बहकने का भय न होगा।

[4]वड़ी आँखें सौदर्न्य का लक्षण है, अर्थात सुन्दर आँखें होंगी।

[5]अर्थात शुर्तुमुर्ग़ के पंखों के नीचे छुपाये हुए हों, जिसके कारण वह वायु एवं गर्द व गुबार से सुरक्षित हों। कहते हैं कि शुर्तुमुर्ग़ के अंडे बड़े सुन्दर रंग के होते हैं, जो पीले श्वेत होते हैं तथा ऐसा रंग सौंदर्य तथा सुन्दरता के संसार में सबसे उत्तम माना जाता है। इस आधार पर यह उपमा केवल सफेदी में नहीं है अपितु सुन्दर रंग एवं रूप तथा दृश्य में है।

[6]स्वर्गवासी स्वर्ग में एक-दूसरे के साथ बैठे हुए दुनिया की घटनायें याद करेंगे तथा परस्पर सुनायेंगे।

قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ إِنِّي كَانَ لِي قَرِينٌ ﴿٥١﴾

(५१) उनमें से एक कहने वाला कहेगा कि मेरा एक निकट (साथी) था।

يَقُولُ أَئِنَّكَ لَمِنَ الْمُصَدِّقِينَ ﴿٥٢﴾

(५२) जो (मुझसे) कहा करता था कि क्या तू (क़ियामत के आने का) विश्वास करने वालों में से है।[1]

أَءِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا أَءِنَّا لَمَدِينُونَ ﴿٥٣﴾

(५३) क्या जब कि हम मरकर मिट्टी एवं अस्थि हो जायेंगे क्या उस समय हम प्रतिफल दिये जाने वाले हैं ?[2]

قَالَ هَلْ أَنتُم مُّطَّلِعُونَ ﴿٥٤﴾

(५४) कहेगा, तुम चाहते हो कि झाँककर देख लो ?[3]

فَاطَّلَعَ فَرَآهُ فِي سَوَآءِ الْجَحِيمِ ﴿٥٥﴾

(५५) झाँकते ही उसे बीचों-बीच नरक में (जलता हुआ) देखेगा।

قَالَ تَاللَّهِ إِن كِدتَّ لَتُرْدِينِ ﴿٥٦﴾

(५६) कहेगा : अल्लाह की सौगन्ध ! निकट था कि तू मुझे भी नष्ट कर दे।

وَلَوْلَا نِعْمَةُ رَبِّي لَكُنتُ مِنَ الْمُحْضَرِينَ ﴿٥٧﴾

(५७) तथा यदि मेरे प्रभु का अनुग्रह न होता तो मैं भी नरक में उपस्थित किये जाने वालों में होता।[4]

---

[1]अर्थात यह बात वह उपहास तथा परिहास के रूप में करता था। अभिप्राय यह था कि यह तो असम्भव है क्या ऐसी अनहोनी बात पर तू विश्वास रखता है ?

[2]अर्थात हमें जीवन प्रदान करके हमारा हिसाब लिया जायेगा फिर तदानुसार प्रतिफल दिया जायेगा।

[3]अर्थात वह स्वर्गवासी अपने स्वर्ग के साथियों से कहेगा कि क्या तुम पसंद करते हो कि तनिक नरक में झाँक कर देखें, संभवत: मुझसे यह बात करने वाला वहाँ दिख पड़े तो तुम्हें बतलाऊँ कि यह व्यक्ति था जो यह बातें करता था।

[4]अर्थात झाँकने पर उसे नरक के बीच में वह व्यक्ति दिखाई देगा तथा उससे यह स्वर्गवासी कहेगा कि मुझे भी तू पथभ्रष्ट करके बर्बाद करने लगा था, यह तो मुझ पर अल्लाह की दया हुई अन्यथा आज मैं भी तेरे संग नरक में होता।

أَفَمَا نَحْنُ بِمَيِّتِينَ ﴿٥٨﴾

(५८) क्या (यह सही है कि) हम मरने वाले ही नहीं ?[1]

إِلَّا مَوْتَتَنَا الْأُولَىٰ وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِينَ ﴿٥٩﴾

(५९) सिवाय प्रथम एक मृत्यु के,[2] तथा न हम यातना किये जाने वाले हैं।

إِنَّ هَٰذَا لَهُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٦٠﴾

(६०) फिर तो (स्पष्ट बात है कि) यह बड़ी सफलता है।[3]

لِمِثْلِ هَٰذَا فَلْيَعْمَلِ الْعَامِلُونَ ﴿٦١﴾

(६१) ऐसी (सफलता) के लिए कर्म करने वालों को कर्म करना चाहिए।[4]

أَذَٰلِكَ خَيْرٌ نُّزُلًا أَمْ شَجَرَةُ الزَّقُّومِ ﴿٦٢﴾

(६२) क्या यह अतिथि सत्कार अच्छा है अथवा ज़क़्क़ूम (सेंढे) का वृक्ष ?[5]

---

[1]नरकवासियों की दशा देखकर स्वर्गवासी के मन में विशेष प्रतिस्पर्धा की भावना उत्पन्न हो जायेगी तथा कहेगा कि हमें जो स्वर्ग का जीवन तथा उसके वरदान मिले हैं, क्या यह स्थायी नहीं तथा अब हमें मौत नहीं आनी है। यह सकरात्मक प्रश्न है, अर्थात अब यह जीवन स्थायी है, स्वर्गवासी सदा स्वर्ग में तथा नरकवासी नरक में रहेंगे न उन्हें मौत आयेगी कि नरक की यातना से मुक्त हो जायें न हमें कि स्वर्ग के प्रदानों से वंचित हो जायें। जिस प्रकार हदीस में आता है कि मौत को एक भेड़ के रूप में लाकर वध कर दिया जायेगा कि अब किसी को मौत नहीं आयेगी।

[2]जो दुनिया आ चुकी। अब न हमारे लिए मौत है न यातना।

[3]इसलिए कि नरक से बच जाने तथा स्वर्ग के सुखों का पात्र बनने से बढ़कर और क्या सफलता होगी ?

[4]अर्थात इस जैसे सुख तथा इतनी महान दया ही के लिए श्रम करने वालों को परिश्रम करना चाहिए, इसलिए कि यही सर्वाधिक लाभप्रद व्यापार है न कि जगत के लिए जो सामयिक है तथा हानि का सौदा है।

[5]زقوم यह تزقم से बना है, जिसका अर्थ दुर्गन्धित तथा घृणित वस्तु निगलने के हैं। इस वृक्ष का फल खाना भी नरकवासियों के लिए अति अप्रिय होगा क्योंकि यह अति दुर्गन्धित, कड़ुवा तथा अत्यन्त घृणित होगा। कुछ कहते हैं कि यह सांसारिक वृक्षों में से है, कुछ कहते हैं कि यह सांसारिक वृक्ष नहीं तथा जगतवासियों के लिए अपरिचित है (फ़तहुल

(६३) जिसे हमने अत्याचारियों के लिए कठोर परीक्षा बना रखी है ।[1]

إِنَّا جَعَلْنَٰهَا فِتْنَةً لِّلظَّٰلِمِينَ ﴿٦٣﴾

(६४) निःसन्देह वह वृक्ष नरक की जड़ से निकलता है ।[2]

إِنَّهَا شَجَرَةٌ تَخْرُجُ فِىٓ أَصْلِ ٱلْجَحِيمِ ﴿٦٤﴾

(६५) जिसके गुच्छे शैतानों के सिरों जैसे होते हैं ।[3]

طَلْعُهَا كَأَنَّهُۥ رُءُوسُ ٱلشَّيَٰطِينِ ﴿٦٥﴾

(६६) नरकवासी इसी वृक्ष को खायेंगे तथा इसी से पेट भरेंगे ।[4]

فَإِنَّهُمْ لَءَاكِلُونَ مِنْهَا فَمَالِـُٔونَ مِنْهَا ٱلْبُطُونَ ﴿٦٦﴾

(६७) फिर उस पर खौलता पानी पीना पड़ेगा ।[5]

ثُمَّ إِنَّ لَهُمْ عَلَيْهَا لَشَوْبًا مِّنْ حَمِيمٍ ﴿٦٧﴾

(६८) फिर उन सबका लौटना नरक की (अग्नि के ढेर की) ओर होगा ।[6]

ثُمَّ إِنَّ مَرْجِعَهُمْ لَإِلَى ٱلْجَحِيمِ ﴿٦٨﴾

क़दीर) । किन्तु प्रथम कथन अधिक सही है, तथा यह वही वृक्ष है जिसे उर्दू भाषा में सेंध अथवा थोहर कहते हैं ।

[1]परीक्षा इस कारण कि उसका फल खाना स्वयं एक बहुत बड़ी परीक्षा है । कुछ ने इस कारण से परीक्षा कहा कि वह इस के होने को नकार रहे थे कि नरक में हर तरफ आग ही आग होगी तो वहाँ पेड़ किस प्रकार रह सकता है । यहाँ ظالمين (अत्याचारियों) से अभिप्राय वे नरकवासी हैं जिनके लिए नरक अनिवार्य होगी ।

[2]अर्थात उसकी जड़ नरक की गहराई में होगी, हाँ, उसकी शाखायें सभी ओर फैली होंगी ।

[3]उसे बुराई एवं अशुभ में शैतान के सरों से उपमा दी । जैसे अच्छी वस्तु के विषय में कहते हैं कि मानो वह फ़रिश्ता है ।

[4]यह उन्हें बड़े घिन के साथ खाना पड़ेगा जिससे स्पष्ट है कि पोट बोझल होंगे ।

[5]अर्थात खाने के पश्चात उन्हें पानी की इच्छा होगी तो खौलता गरम पानी उन्हें दिया जायेगा जिसके पीने से उनकी अंतड़ियाँ कट जायेंगी । (सूरः *मोहम्मद-१५*)

[6]अर्थात ज़क़्क़ूम खाने तथा खौलता पानी पीने के बाद उन्हें फिर से नरक में फेंक दिया जायेगा ।

(६९) विश्वास करो कि उन्होंने अपने पूर्वजों को बहका हुआ पाया।	إِنَّهُمْ أَلْفَوْا آبَاءَهُمْ ضَالِّينَ ﴿٦٩﴾
(७०) तथा यह उन्हीं के पद-चिन्हों पर दौड़ते चलते रहे।[1]	فَهُمْ عَلَىٰ آثَارِهِمْ يُهْرَعُونَ ﴿٧٠﴾
(७१) तथा उनसे पूर्व भी बहुत से अगले लोग बहक चुके हैं।[2]	وَلَقَدْ ضَلَّ قَبْلَهُمْ أَكْثَرُ الْأَوَّلِينَ ﴿٧١﴾
(७२) तथा जिनमें हमने सावधान करने वाले (रसूल) भेजे थे।[3]	وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا فِيهِمْ مُنْذِرِينَ ﴿٧٢﴾
(७३) अब तू देख ले कि जिन्हें धमकाया गया था उनका परिणाम कैसा हुआ।	فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِينَ ﴿٧٣﴾
(७४) अतिरिक्त अल्लाह के निर्वाचित भक्तों के।[4]	إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ﴿٧٤﴾

[1]यह नरक की उपरोक्त यातनाओं का कारण है, कि अपने बाप-दादा को गुमराही पर पाकर भी उनके पद-चिन्हों पर चलते रहे तथा युक्ति एवं तर्क की तुलना में अनुकरण को अपनाये रखा। إهراع यह إسراع का पर्यायवाची है, अर्थात दौड़ना तथा अति आग्रह से एवं लपककर किसी वस्तु को पकड़ना तथा अपनाना।

[2]अर्थात यही गुमराह नहीं हुए, इनसे पहले के लोग भी अधिकतर गुमराही के मार्ग पर चलने वाले थे।

[3]अर्थात इनसे पहले के लोगों में, उन्होंने सत्य का संदेश पहुँचाया तथा स्वीकार न करने की दशा में उन्हें अल्लाह के प्रकोप से डराया किन्तु उन पर कोई प्रभाव नहीं हुआ। परिणाम स्वरूप, उन्हें नाश कर दिया गया जैसाकि आगामी आयत में उनके शिक्षाप्रद परिणाम की ओर संकेत किया है।

[4]अर्थात शिक्षाप्रद परिणाम से मात्र वह सुरक्षित रहे जिनको अल्लाह ने ईमान एवं तौहीद (अद्वैत) का सौभाग्य प्रदान किया। مُخلصين (वह लोग जो दण्ड से सुरक्षित रहे), منذَرين (विनाश होने वाले समुदाय) के संक्षिप्त वर्णन के पश्चात कुछ مُنذِرين (संदेष्टाओं) का वर्णन किया जा रहा है।

(७५) हमें नूह ने पुकारा तो देख लो कि हम कैसे अच्छे प्रार्थना स्वीकार करने वाले हैं ।[1]	وَلَقَدْ نَادٰىنَا نُوْحٌ فَلَنِعْمَ الْمُجِيْبُوْنَ ۝٧٥
(७६) तथा हमने उसे तथा उसके घर वालों को[2] उस घोर संकट से बचा लिया ।	وَنَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ۝٧٦
(७७) तथा उसकी सन्तान को हमने शेष रहने वाली बना दी ।[3]	وَجَعَلْنَا ذُرِّيَّتَهٗ هُمُ الْبٰقِيْنَ ۝٧٧
(७८) तथा हमने उसकी (प्रशंसा एवं सराहना) पिछलों में शेष रखा ।[4]	وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِى الْاٰخِرِيْنَ ۝٧٨
(७९) नूह (अलैहिस्सलाम) पर सभी जगत में सलाम (सुरक्षा) हो !	سَلٰمٌ عَلٰى نُوْحٍ فِى الْعٰلَمِيْنَ ۝٧٩

---

[1]साढ़े नौ सौ वर्ष के धर्म प्रचार के उपरान्त भी जब समुदाय के अधिकांश लोगों ने उन्हें झुठलाया ही तथा उन्होंने अनुभव कर लिया कि ईमान लाने की कोई आशा नहीं है तो अपने प्रभु को पुकारा, ﴿ فَدَعَا رَبَّهٗٓ اَنِّىْ مَغْلُوْبٌ فَانْتَصِرْ ﴾ (*अल-क़मर*-१०) "अल्लाह मैं परास्त हूँ मेरी सहायता कर" तो हम ने नूह की विनय स्वीकार की तथा उनकी जाति को तूफ़ान भेजकर नाश कर दिया ।

[2](अहल) أهـل से अभिप्राय नूह पर ईमान लाने वाले हैं जिनमें उनके परिवार के मोमिन (ईमानदार) सदस्य भी थे । कुछ भाष्यकारों के निकट उनकी संख्या ८० थी जिनमें उनकी पत्नी तथा एक पुत्र सम्मिलित नहीं, जो ईमानवाले नहीं थे । वह भी तूफ़ान में डूब गये । كرب عظيم घोर संकट से तात्पर्य वही भारी बाढ़ है जिसमें यह जाति डूब गई ।

[3]अधिकतर भाष्यकारों के कथानुसार आदरणीय नूह के तीन पुत्र थे । हाम, साम तथा याफिस । इन्हीं से बाद का मानव वंश चला । इसी कारण नूह को दूसरा आदम भी कहा जाता है, अर्थात आदम के समान उनके पश्चात यह मानवजाति के द्वितीय परमपिता हैं । हाम के वंश से सूडान (पूर्व से पश्चिम तक) अर्थात सिन्ध, भारत, नौब, जंज, हबशा, किब्त तथा वर्वर आदि हैं तथा यासिफ के वंश से सक़ालिबा, तुर्क, खज़र तथा याजूज एवं माजूज आदि हैं । साम के वंश से अरब, फ़ारस, रूम तथा यहूद एवं इसाई हैं (फ़तहुल क़दीर) । والله أعلم

[4]अर्थात क़ियामत (प्रलय) तक आने वाले ईमानवालों में हमने नूह की प्रशंसा एवं सराहना को शेष रखा । वे सभी ईशदूत नूह पर सलाम भेजते हैं तथा भेजते रहेंगे ।

(८०) हम पुण्य करने वालों को इसी प्रकार बदला देते हैं।

إِنَّا كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿٨٠﴾

(८१) वह हमारे ईमानदार भक्तों में से था।[1]

إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ﴿٨١﴾

(८२) फिर हमने अन्य लोगों को डुबो दिया।

ثُمَّ أَغْرَقْنَا الْآخَرِينَ ﴿٨٢﴾

(८३) तथा उस (नूह) के अनुयायियों में से ही इब्राहीम भी थे।[2]

وَإِنَّ مِنْ شِيعَتِهِ لَإِبْرَاهِيمَ ﴿٨٣﴾

(८४) जबकि अपने प्रभु के पास स्वच्छ (निर्दोष) हृदय लाये।

إِذْ جَاءَ رَبَّهُ بِقَلْبٍ سَلِيمٍ ﴿٨٤﴾

(८५) उन्होंने अपने पिता तथा अपने समुदाय से कहा कि तुम क्या पूज रहे हो।

إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَاذَا تَعْبُدُونَ ﴿٨٥﴾

(८६) क्या तुम अल्लाह के अतिरिक्त गढ़े हुए पूज्य चाहते हो ?[3]

أَئِفْكًا آلِهَةً دُونَ اللَّهِ تُرِيدُونَ ﴿٨٦﴾

(८७) तो यह (बताओ कि) तुमने समस्त जगत के प्रभु को क्या समझ रखा है ?[4]

فَمَا ظَنُّكُمْ بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٨٧﴾

---

[1]जिस प्रकार नूह की विनय स्वीकार करके उनकी सन्तान को शेष रखा तथा पिछलों में उनकी सराहना शेष रखके हमने सम्मान एवं आदर प्रदान किया, इसी प्रकार जो भी अपने कर्म तथा कथन में सदाचारी तथा इस विषय में सुदृढ़ एवं प्रसिद्ध होगा उसके साथ भी हम ऐसा व्यवहार करेंगे।

[2] شِيعَة (शीअ:) का अर्थ गरोह तथा अनुयायी है अर्थात इब्राहीम भी धर्मात्माओं तथा एकेश्वरवादियों के इसी गरोह से हैं, जिनको आदरणीय नूह ही की भाँति अल्लाह ने अपनी ओर ध्यानमग्न होने का विशेष सौभाग्य प्रदान किया।

[3]अपनी ओर से ही झूठ गढ़ के कि यह अराध्य हैं, तुम अल्लाह को छोड़कर उनकी उपासना करते हो हालाँकि यह पत्थर तथा मूर्तियाँ हैं।

[4]अर्थात इतने दुराचार के उपरान्त क्या अल्लाह तुमसे क्रोधित नहीं होगा तथा तुम्हें दण्ड नहीं देगा ?

(८८) अब (इब्राहीम ने) एक दृष्टि तारों की ओर उठाई। — فَنَظَرَ نَظْرَةً فِي النُّجُومِ ﴿٨٨﴾

(८९) तथा कहा कि मैं तो रोगी हूँ।[1] — فَقَالَ إِنِّي سَقِيمٌ ﴿٨٩﴾

(९०) इस पर सब उससे मुख मोड़े हुए वापस चले गये। — فَتَوَلَّوْا عَنْهُ مُدْبِرِينَ ﴿٩٠﴾

(९१) आप (चुपके) उनके पूज्यों के निकट गये तथा कहने लगे तुम खाते क्यों नहीं ?[2] — فَرَاغَ إِلَىٰ آلِهَتِهِمْ فَقَالَ أَلَا تَأْكُلُونَ ﴿٩١﴾

(९२) तुम्हें क्या हो गया कि बात तक नहीं करते हो ? — مَا لَكُمْ لَا تَنْطِقُونَ ﴿٩٢﴾

(९३) फिर तो (पूरी शक्ति के साथ) दायें हाथ से उन्हें मारने पर पिल पड़े।[3] — فَرَاغَ عَلَيْهِمْ ضَرْبًا بِالْيَمِينِ ﴿٩٣﴾

---

[1]आकाश की ओर चिन्तन-मनन के लिए देखा जैसाकि कुछ लोग ऐसा करते हैं, अथवा अपनी जाति के लोगों को भ्रम में डालने हेतु ऐसा किया जो ग्रहों की गति को जगत की घटनाओं में प्रभावी मानते थे। यह घटना उस समय की है जब उनकी जाति का वह दिन आया जिसे वह बाहर जाकर ईद तथा जातिय उत्सव के रूप में मनाया करती थी। जाति ने माननीय इब्राहीम को भी साथ चलने की दावत दी। किन्तु इब्राहीम एकान्त तथा अवसर की खोज में थे ताकि उनकी प्रतिमाओं का तिया-पाँचा किया जा सके। अत: इस अवसर को शुभ समझा कि कल पूरी जाति मेले में चली जायेगी तो मैं अपनी योजना पूरी करूंगा, तथा कह दिया कि मैं रोगी हूँ अथवा आकाशों की गति बतलाती है कि मैं बीमार होने वाला हूँ। यह बात पूर्णत: मिथ्या तो नहीं थी, प्रत्येक मनुष्य कुछ न कुछ रोगी होता ही है। इसके अतिरिक्त जाति का शिर्क इब्राहीम के दिल का एक स्थायी रोग था जिसे देखकर वह कुढ़ते रहते थे। यूँ आदरणीय इब्राहीम ने अप्रत्यक्षता तथा संकेत का प्रदर्शन किया जो यद्यपि मिथ्या नहीं होता किन्तु संबोधित उसके मनोंगत अर्थ से भ्रम में पड़ जाता है। अत: حديث ثلاث كذبات के अन्तर्गत इसे मिथ्या कहा गया, जैसाकि इसका आवश्यक विवरण *सूर: अम्बिया* में गुज़र चुका है।

[2]अर्थात जो प्रसाद वहाँ पड़े हुए थे वह उन्हें खाने के लिए प्रस्तुत किया जो स्पष्ट बात है कि उन्होंने न खाया था न खाया, अपितु वह उत्तर देने पर भी समर्थ नहीं थीं अत: उत्तर भी नहीं दिया।

[3] رَاغَ का अर्थ है مَالَ (झुक पड़ा) أقبل، ذهب यह सभी लगभग एक से हैं, उनकी ओर रुख किया।

(९४) वे (मूर्तिपूजक) दौड़े-भागे आपकी ओर आये ।[1]	فَأَقْبَلُوٓا۟ إِلَيْهِ يَزِفُّونَ ﴿٩٤﴾
(९५) तो आपने कहा कि तुम उन्हें पूजते हो जिन्हें तुम स्वयं बनाते हो ।	قَالَ أَتَعْبُدُونَ مَا تَنْحِتُونَ ﴿٩٥﴾
(९६) यद्यपि तुम्हें तथा तुम्हारी बनाई हुई वस्तुओं को अल्लाह ही ने पैदा किया है ।[2]	وَٱللَّهُ خَلَقَكُمْ وَمَا تَعْمَلُونَ ﴿٩٦﴾
(९७) वे कहने लगे कि इसके लिए एक मकान (अग्निकुण्ड) बनाओ तथा उस (दहकती) अग्नि में इसे डाल दो ।	قَالُوا۟ ٱبْنُوا۟ لَهُۥ بُنْيَٰنًا فَأَلْقُوهُ فِى ٱلْجَحِيمِ ﴿٩٧﴾
(९८) उन्होंने तो (इब्राहीम) के साथ चाल चलना चाहा परन्तु हमने उन्हीं को नीच कर दिया ।[3]	فَأَرَادُوا۟ بِهِۦ كَيْدًا فَجَعَلْنَٰهُمُ ٱلْأَسْفَلِينَ ﴿٩٨﴾
(९९) तथा (इब्राहीम ने) कहा कि मैं तो (हिजरत करके) अपने प्रभु की ओर जाने वाला हूँ [4] वह अवश्य मेरा मार्गदर्शन करेगा ।	وَقَالَ إِنِّى ذَاهِبٌ إِلَىٰ رَبِّى سَيَهْدِينِ ﴿٩٩﴾

---

[1] يَزِفُّونَ यह يُسرعون के अर्थ में है, दौड़ते हुए आये । अर्थात जब मेले से आये तो देखा कि उनके देवता छिन्न-भिन्न पड़े हैं । तुरन्त उनका विचार इब्राहीम की ओर गया । अत: उन्हें पकड़कर जनता के न्यायालय में लाये । वहाँ आदरणीय इब्राहीम को यह अवसर मिल गया कि वह उन पर उनकी मूर्खता तथा उनके देवतागण की विवशता को स्पष्ट कर दें ।

[2] अर्थात वह मूर्तियाँ तथा चित्र भी जिन्हें तुम अपने हाथों से बनाते हो तथा उन्हें अराध्य समझते हो अथवा तुम्हारा साधारण कर्म जो भी तुम करते हो, उनका उत्पत्ति करने वाला भी अल्लाह है जैसाकि अहले सुन्नत की आस्था है ।

[3] अर्थात अग्नि को उद्यान बनाकर उनकी चालों को असफल बना दिया । अत: पवित्र है वह अल्लाह जो अपने बन्दों का काम बनाता है तथा परीक्षा को प्रतिफल एवं बुराई को भलाई में बदल देता है ।

[4] ईशदूत इब्राहीम की यह घटना बाबिल (इराक) में घटी । अन्तत: यहाँ से हिजरत (स्थानान्तरण) की तथा शाम (सीरिया) चले गये तथा वहाँ जाकर पुत्र के लिए प्रार्थना की । (फ़तहुल क़दीर)

رَبِّ هَبْ لِي مِنَ الصَّالِحِينَ ۝١٠٠

(१००) हे मेरे प्रभु ! मुझे सदाचारी पुत्र प्रदान कर।

فَبَشَّرْنَاهُ بِغُلَامٍ حَلِيمٍ ۝١٠١

(१०१) तो हमने उसको एक सहनशील पुत्र की शुभसूचना दी।[1]

فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ السَّعْيَ قَالَ يَا بُنَيَّ إِنِّي أَرَىٰ فِي الْمَنَامِ أَنِّي أَذْبَحُكَ فَانظُرْ مَاذَا تَرَىٰ ۚ قَالَ يَا أَبَتِ افْعَلْ مَا تُؤْمَرُ ۖ سَتَجِدُنِي إِن شَاءَ اللَّهُ مِنَ الصَّابِرِينَ ۝١٠٢

(१०२) फिर जब (बालक) इस आयु को पहुँचा कि उसके साथ चले-फिरे [2] तो उस (इब्राहीम) ने कहा मेरे प्रिय पुत्र ! मैं स्वप्न में अपने आप को तेरी बलि करते हुए देख रहा हूँ। अब तू बता कि तेरा क्या विचार है ?[3] पुत्र ने उत्तर दिया कि पिताजी ! जो आदेश दिया जा रहा है उसका पालन कीजिए। अल्लाह ने चाहा तो आप मुझे धैर्य रखने वालों में पायेंगे।

فَلَمَّا أَسْلَمَا وَتَلَّهُ لِلْجَبِينِ ۝١٠٣

(१०३) अर्थात जब दोनों ने पालन (स्वीकार) कर लिया तथा उस (पिता) ने उस (पुत्र) को[4] माथे के बल गिरा दिया।

---

[1] حليم (धैर्यवान) कहकर संकेत कर दिया कि शिशु बड़ा होकर सहनशील होगा।

[2] अर्थात दौड़धूप के योग्य हो गया अथवा युवा अवस्था के समीप हो गया। कुछ कहते हैं कि उस समय यह बालक १३ वर्ष का था।

[3] पैग़म्बर (ईशदूत) का स्वप्न, अल्लाह की प्रकाशना तथा आदेश होता है, जिस के अनुसार कर्म करना आवश्यक होता है, पुत्र से विचार-विमर्श का उद्देश्य यह जानना था कि पुत्र भी अल्लाह का आदेश पूरा करने के लिए कितना तैयार है।

[4] प्रत्येक मनुष्य के मुख (चेहरे) पर दो भवें दायें-बायें होती हैं, तथा मध्य में ललाट अत: جبينة, इसलिए للجبين का अधिक उचित अनुवाद (कर्वट पर) लिटाया, जिस प्रकार पशु को वध करते समय क़िब्ला रूख लिटाया जाता है, मस्तक अथवा मुख के बल, लिटाने का अर्थ इस कारण किया जाता है कि प्रसिद्ध है कि आदरणीय इस्माईल ने वसीयत की कि

وَنَادَيْنَٰهُ أَن يَٰٓإِبْرَٰهِيمُ ﴿١٠٤﴾

(१०४) तो हमने आवाज दी कि हे इब्राहीम !

قَدْ صَدَّقْتَ ٱلرُّءْيَآ ۚ إِنَّا كَذَٰلِكَ نَجْزِى ٱلْمُحْسِنِينَ ﴿١٠٥﴾

(१०५) नि:संदेह तूने स्वप्न को सत्य कर दिखाया,[1] नि:सन्देह हम पुण्यकारियों को इसी प्रकार बदला देते हैं।

إِنَّ هَٰذَا لَهُوَ ٱلْبَلَٰٓؤُا۟ ٱلْمُبِينُ ﴿١٠٦﴾

(१०६) वास्तव में यह स्पष्ट परीक्षा थी।[2]

وَفَدَيْنَٰهُ بِذِبْحٍ عَظِيمٍ ﴿١٠٧﴾

(१०७) तथा हमने एक महान बलि उसके मुक्ति प्रदान के रूप मे दे दिया या।[3]

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِى ٱلْءَاخِرِينَ ﴿١٠٨﴾

(१०८) तथा हमने उनकी शुभ चर्चा पिछलों में शेष रखा।

سَلَٰمٌ عَلَىٰٓ إِبْرَٰهِيمَ ﴿١٠٩﴾

(१०९) इब्राहीम पर सलाम हो।

كَذَٰلِكَ نَجْزِى ٱلْمُحْسِنِينَ ﴿١١٠﴾

(११०) हम पुण्य कार्य करने वालों को इसी प्रकार बदला देते हैं।

إِنَّهُۥ مِنْ عِبَادِنَا ٱلْمُؤْمِنِينَ ﴿١١١﴾

(१११) निश्चय ही वह हमारे ईमानदार भक्तों में से था।

उन्हें इस प्रकार लिटाया जाये कि मुख सामने न रहे जिससे प्रेम तथा करूणा के भाव के ईश्वरीय आदेश पर प्रभावी होने की संभावना न रहे।

[1]दिल के पूरे यत्न से पुत्र वध करने के लिए धरती पर लिटा देने ही से तूने अपना स्वप्न सच कर दिखाया क्योंकि इससे स्पष्ट हो गया कि अल्लाह के आदेश के आगे तुझे कोई वस्तु भी अधिक प्रिय नहीं यहाँ तक कि इकलौता पुत्र भी नहीं।

[2]अर्थात लाडले पुत्र को बलि देने का आदेश, यह एक बड़ी परीक्षा थी जिसमें तू सफल रहा।

[3]यह बड़ी कुरबानी एक मेंढा था जो अल्लाह ने स्वर्ग से आदरणीय जिब्रील के द्वारा भेजा, (इब्ने कसीर) जो इस्माईल के स्थान पर जिब्हा किया गया। तथा फिर इस इब्राहीमी सुन्नत (चरित्र) को प्रलय तक अल्लाह की समीपता का एक साधन तथा ईदे अजहा का प्रियवर कर्म बना दिया गया।

(११२) तथा हमने उसे इसहाक़ नबी की शुभ-सूचना दी जो सदाचारी लोगों में से होगा ।[1]

وَبَشَّرْنَٰهُ بِإِسْحَٰقَ نَبِيًّا مِّنَ ٱلصَّٰلِحِينَ ﴿١١٢﴾

(११३) तथा हमने इब्राहीम तथा इसहाक़ पर बरकतें (विभूतियाँ) अवतरित किया[2] तथा इन दोनों की संतान में कुछ तो सौभाग्यशाली हैं तथा कुछ अपने प्राणों पर खुला अत्याचार करते हैं ।[3]

وَبَٰرَكْنَا عَلَيْهِ وَعَلَىٰٓ إِسْحَٰقَ ۚ وَمِن ذُرِّيَّتِهِمَا مُحْسِنٌ وَظَالِمٌ لِّنَفْسِهِۦ مُبِينٌ ﴿١١٣﴾

---

[1]आदरणीय इब्राहीम की उक्त कथा के पश्चात अब एक पुत्र इसहाक़ की तथा उसके नबी होने की शुभ सूचना देने से विदित होता है कि इससे पहले जिस पुत्र को बलि देने का आदेश किया गया था वह इस्माईल थे जो उस समय इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के इकलौते पुत्र थे। इसहाक़ की पैदाईश उसके पश्चात हुई। भाष्याकारों के मध्य इस विषय में मतभेद है कि ज़बीह (बलि) कौन है, इस्माईल अथवा इसहाक़ ? इमाम इब्ने जरीर ने आदरणीय इसहाक़ को तथा इब्ने कसीर तथा अधिकतर टीकाकारों ने आदरणीय इस्माईल को ज़बीह (बलि) माना है तथा यही बात सही है। इमाम शौकानी ने इसमें मौन धारण किया है । (विवरण के लिए देखिये तफ़सीर इब्ने कसीर तथा तफ़सीर फ़तहुल क़दीर)।

[2]अर्थात इन दोनों की संतान को बहुत फैलाया। तथा अम्बिया (ईशदूतों) एवं रसूलों (सन्देष्टाओं) की अधिक संख्या उन्हीं के वंश से हुई। आदरणीय इसहाक़ के पुत्र याक़ूब हुए जिनके बारह पुत्रों से इस्राईल की सन्तान के १२ समुदाय बने तथा उनसे इस्राईल की संतान बढ़ी एवं फैली। अधिकांश अम्बिया उन्हीं में हुए। आदरणीय इब्राहीम के अन्य पुत्र इस्माईल से अरबों का वंश चला तथा उनमें अन्तिम ईशदूत महामान्य मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हुए।

[3]शिर्क, (मिश्रणवाद) अवज्ञा तथा अत्याचार, उपद्रव एवं अत्याचार करके। इब्राहीम वंश में बरकत (विभूति) के उपरान्त अच्छे-बुरे की चर्चा से इस ओर संकेत कर दिया कि परिवार एवं पूर्वजों का सम्बन्ध अल्लाह के यहाँ कोई महत्व नहीं रखता, वहाँ तो ईमान तथा सत्कर्म का महत्व है। यहूदी तथा इसाई यद्यपि आदरणीय इसहाक़ की संतान में हैं, इसी प्रकार अरब के मूर्तिपूजक आदरणीय इस्माईल की संतान में हैं, किन्तु उनके जो करतूत हैं वह खुली पथभ्रष्टता अथवा शिर्क एवं अवज्ञा पर आधारित हैं। अत: यह उच्च सम्बन्ध उनके लिये सत्कर्म का बदल नहीं हो सकती।

وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلَىٰ مُوسَىٰ وَهَٰرُونَ ﴿١١٤﴾

(११४) तथा निश्चय हमने मूसा तथा हारून पर बड़ा उपकार किया ।[1]

وَنَجَّيْنَٰهُمَا وَقَوْمَهُمَا مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيمِ ﴿١١٥﴾

(११५) तथा उन्हें एवं उनके समुदाय को बहुत बड़े दुख-दर्द से मुक्ति प्रदान कर दी ।[2]

وَنَصَرْنَٰهُمْ فَكَانُوا هُمُ الْغَٰلِبِينَ ﴿١١٦﴾

(११६) तथा उनकी सहायता की तो वही प्रभावशाली (विजयी) रहे ।

وَءَاتَيْنَٰهُمَا الْكِتَٰبَ الْمُسْتَبِينَ ﴿١١٧﴾

(११७) तथा हमने उन्हें (स्पष्ट एवं) प्रकाशमय किताब प्रदान की ।

وَهَدَيْنَٰهُمَا الصِّرَٰطَ الْمُسْتَقِيمَ ﴿١١٨﴾

(११८) तथा उन दोनों को सीधे मार्ग पर स्थिर रखा ।

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِمَا فِى الْءَاخِرِينَ ﴿١١٩﴾

(११९) तथा हमने उन दोनों के लिए पीछे आने वालों में यह बात शेष रखी ।

سَلَٰمٌ عَلَىٰ مُوسَىٰ وَهَٰرُونَ ﴿١٢٠﴾

(१२०) कि मूसा तथा हारून पर सलाम हो ।

إِنَّا كَذَٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِينَ ﴿١٢١﴾

(१२१) निःसन्देह हम पुण्य कार्य करने वालों को इसी प्रकार बदला दिया करते हैं ।

إِنَّهُمَا مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٢٢﴾

(१२२) निःसंदेह ये दोनों हमारे ईमानदार भक्तों में से थे ।

وَإِنَّ إِلْيَاسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٢٣﴾

(१२३) तथा निःसन्देह इलियास भी पैग़म्बरों में से थे ।[3]

---

[1]अर्थात उन्हें नबूअत (दूतत्व) तथा अन्य उपकारों से सम्मानित किया ।

[2]अर्थात फ़िरऔन की दासता तथा उसके अत्याचार एवं क्रूरता से ।

[3]यह आदरणीय हारून की संतान में से इस्राईली नबी थे, यह जिस क्षेत्र में भेजे गये उसका नाम बअ्लबक था । कुछ कहते हैं कि उस स्थान का नाम सामरह है जो फ़िलस्तीन का पश्चिमी मध्य क्षेत्र है । यहां के लोग बअ्ल नामी मूर्ति (देवता) के पुजारी थे । कुछ कहते हैं कि यह देवी का नाम था ।

إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِۦٓ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٢٤﴾

(१२४) जबकि उन्होंने अपने समुदाय से कहा कि तुम अल्लाह से डरते नहीं हो ।[1]

أَتَدْعُونَ بَعْلًا وَتَذَرُونَ أَحْسَنَ ٱلْخَٰلِقِينَ ﴿١٢٥﴾

(१२५) क्या तुम 'बअ्ल' नामक मूर्ति से प्रार्थनायें करते हो तथा सर्वश्रेष्ठ स्रष्टा को छोड़ देते हो ?

ٱللَّهَ رَبَّكُمْ وَرَبَّ ءَابَآئِكُمُ ٱلْأَوَّلِينَ ﴿١٢٦﴾

(१२६) अल्लाह जो तुम्हारा तथा तुम्हारे पूर्व के सभी पूर्वजों का प्रभु है ।[2]

فَكَذَّبُوهُ فَإِنَّهُمْ لَمُحْضَرُونَ ﴿١٢٧﴾

(१२७) परन्तु समुदाय ने उन्हें झुठलाया, तो वे अवश्य (यातनाओं में) उपस्थित रखे जायेंगे ।[3]

إِلَّا عِبَادَ ٱللَّهِ ٱلْمُخْلَصِينَ ﴿١٢٨﴾

(१२८) अतिरिक्त अल्लाह (तआला) के निःस्वार्थ भक्तों के ।

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِى ٱلْءَاخِرِينَ ﴿١٢٩﴾

(१२९) तथा हमने (इलियास की) शुभ चर्चा पिछले लोगों में शेष रखा ।

سَلَٰمٌ عَلَىٰٓ إِلْ يَاسِينَ ﴿١٣٠﴾

(१३०) कि इलियास पर सलाम हो ।[4]

إِنَّا كَذَٰلِكَ نَجْزِى ٱلْمُحْسِنِينَ ﴿١٣١﴾

(१३१) हम पुण्य कार्य करने वालों को इसी प्रकार बदला देते हैं ।

---

[1]अर्थात उसके प्रकोप तथा पकड़ से कि उसे छोड़कर तुम अल्लाह के अन्य की उपासना करते हो ।

[2]अर्थात उसकी उपासना करते हो, उसके नाम के चढ़ावे चढ़ाते तथा उसे कार्यक्षम समझते हो जो पत्थर की मूर्ति है, तथा जो सब वस्तु का विधाता एवं अगलों-पिछलों का पालनहार है, उसको तुमने भुला रखा है ।

[3]अर्थात तौहीद (एकेश्वरवाद) तथा ईमान (आस्था) से इंकार के दुष्परिणाम स्वरूप नरक का दण्ड भुगतेंगे ।

[4]इल्यासीन, इलियास ही का एक उच्चारण है, जैसे तूरे सीना को तूरे सीनीन भी कहते हैं । आदरणीय इलियास को दूसरे धर्मग्रन्थों में *'इलिया'* भी कहा गया है ।

(१३२) निश्चय ही वह हमारे ईमानदार भक्तों में से थे ।[1]	إِنَّهُۥ مِنْ عِبَادِنَا ٱلْمُؤْمِنِينَ ﴿١٣٢﴾
(१३३) नि:सन्देह लूत (अलैहिस्सलाम) भी पैग़म्बरों में से थे ।	وَإِنَّ لُوطًا لَّمِنَ ٱلْمُرْسَلِينَ ﴿١٣٣﴾
(१३४) हमने उनको तथा उनके घर वालों को सबको मुक्ति प्रदान की ।	إِذْ نَجَّيْنَٰهُ وَأَهْلَهُۥٓ أَجْمَعِينَ ﴿١٣٤﴾
(१३५) सिवाय उस बुढ़िया के जो पीछे रह जाने वालों में रह गयी ।[2]	إِلَّا عَجُوزًا فِى ٱلْغَٰبِرِينَ ﴿١٣٥﴾
(१३६) फिर हमने अन्यों को तहस-नहस कर दिया ।	ثُمَّ دَمَّرْنَا ٱلْءَاخَرِينَ ﴿١٣٦﴾
(१३७) तथा तुम तो प्रात: होने पर उनकी बस्तियों से गुज़रते हो ।	وَإِنَّكُمْ لَتَمُرُّونَ عَلَيْهِم مُّصْبِحِينَ ﴿١٣٧﴾
(१३८) तथा रात्रि को भी, क्या फिर भी नहीं समझते ?[3]	وَبِٱلَّيْلِ ۗ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿١٣٨﴾

---

[1]अन्तिम पवित्र ईशवाणी क़ुरआन ने नबियों एवं रसूलों की चर्चा करके उनके लिए अधिकतर स्थान पर यह शब्द प्रयोग किये हैं कि वह हमारे मोमिन (ईमानवाले) बन्दों में से थे । जिसके दो आशय हैं, एक उनके चरित्र तथा कर्म की श्रेष्ठता का प्रदर्शन जो ईमान का आवश्यक अंश है, ताकि उन लोगों का खण्डन हो जाये जो बहुत से पैग़म्बरों के बारे में नैतिक कमज़ोरियों को प्रमाणित करते हैं । जैसे तौरात तथा इंजील के वर्तमान संस्करणों में अनेक पैग़म्बरों के विषय में ऐसी मन गढ़न्त कथायें अंकित (दर्ज) हैं । दूसरा उद्देश्य उन लोगों का खण्डन है जो कुछ अम्बिया के बारे में अति (ग़ोलू) करके उनमें ईश्वरीय गुण तथा अधिकार सिद्ध करते हैं । अर्थात वह ईशदूत (पैग़म्बर) अवश्य थे किन्तु थे फिर भी अल्लाह के बन्दे (दास) न कि स्वयं अल्लाह अथवा उसके अंश अथवा साझी ।

[2]इससे अभिप्राय आदरणीय लूत की पत्नी है जो काफ़िर थी । यह ईमानवालों के संग उस नगरी से बाहर नहीं गई थी क्योंकि उसे अपनी जाति के साथ विनाश होना था । अत: वह भी नाश हो गई ।

[3]यह मक्कावासियों से संबोधन है जो व्यापारिक यात्रा में इन ध्वस्त क्षेत्रों से गुज़रते थे । इनसे कहा जा रहा है कि तुम प्रात: तथा रात्रि के समय भी इन बस्तियों से गुज़रते हो

(१३९) तथा निश्चय ही यूनुस नबियों में से थे।	وَإِنَّ يُونُسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٣٩﴾
(१४०) जब वह भागकर पहुँचे भरी नवका पर।	إِذْ أَبَقَ إِلَى الْفُلْكِ الْمَشْحُونِ ﴿١٤٠﴾
(१४१) फिर नाम निकाला गया तो यह पराजित हो गये।	فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِينَ ﴿١٤١﴾
(१४२) तो फिर उन्हें मछली ने निगल लिया तथा वह स्वयं अपने आपको धिक्कारने लग गये।[1]	فَالْتَقَمَهُ الْحُوتُ وَهُوَ مُلِيمٌ ﴿١٤٢﴾
(१४३) तो यदि वह पवित्रता गान करने वालों में से न होते।	فَلَوْلَا أَنَّهُ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِينَ ﴿١٤٣﴾

जहाँ अब मृत सागर है, जो देखने में अति घृणित है एवं बड़ा दुर्गन्धित और बदबूदार। क्या तुम उन्हें देखकर यह बात नहीं समझते कि रसूलों को झुठलाने के कारण उनका यह दुष्परिणाम हुआ तो तुम्हारे दुराचार का परिणाम इससे भिन्न क्यों होगा ? जब तुम भी वही काम कर रहे हो जो उन्होंने किया तो फिर तुम अल्लाह के प्रकोप से क्योंकर सुरक्षित रहोगे ?

[1]आदरणीय यूनुस नैनवा (वर्तमान मौसिल) में नबी बनाकर भेजे गये थे। यह आशूरियों की राजधानी थी, उन्होंने एक लाख इस्राईलियों को बंदी बनाया था। इसलिए उनके मार्गदर्शन एवं निर्देश के लिए अल्लाह तआला ने उनकी ओर आदरणीय यूनुस को भेजा किन्तु यह जाति आप पर ईमान नहीं लाई। अन्ततः उस जाति को डराया कि शीघ्र ही तुम अल्लाह के प्रकोप की पकड़ में आ जाओगे। प्रकोप में देर हुई तो अल्लाह की आज्ञा के बिना स्वयं ही वहाँ से निकल गये तथा समुद्र पर जाकर एक नवका में सवार हो गये। अपने नगर से निकल जाने को ऐसे शब्द से वर्णन किया जिस प्रकार एक दास अपने स्वामी से भागकर चला जाता है, क्योंकि आप भी अल्लाह की आज्ञा के बिना अपनी जाति को छोड़कर चले गये थे। नवका सवारों तथा सामानों से भरी हुई थी, नवका समुद्र की लहरों में घिर गई तथा खड़ी हो गई। इसलिए उसका बोझ कम करने के लिए एक-आध व्यक्ति को नवका से समुद्र में फेंकने का प्रस्ताव सामने आया ताकि नवका के सवार अन्य यात्रियों के प्राणों की रक्षा हो। किन्तु इसके लिए कोई तैयार न था, इसलिए गोटी डालनी पड़ी (ऐसरूत्तफ़ासीर)। जिसमें आदरणीय यूनुस का नाम आया। वह पराजितों में हो गये अर्थात उन्हें अपने को भागे हुए दास के समान विवश होकर समुद्र की लहरों को समर्पित करना पड़ा। उधर अल्लाह ने मछली को आदेश किया कि वह उन्हें पूरा निगल ले तथा इस प्रकार आदरणीय यूनुस अल्लाह के आदेशानुसार मछली के पेट में चले गये।

لَلَبِثَ فِيْ بَطْنِهٖٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿١٤٤﴾
(१४४) तो लोगों के उठाये जाने के दिन तक मछली के पेट में रहते।[1]

فَنَبَذْنٰهُ بِالْعَرَآءِ وَهُوَ سَقِيْمٌ ﴿١٤٥﴾
(१४५) तो हमने उसे समतल मैदान में डाल दिया तथा वह उस समय रोगी था।[2]

وَاَنْۢبَتْنَا عَلَيْهِ شَجَرَةً مِّنْ يَّقْطِيْنٍ ﴿١٤٦﴾
(१४६) तथा उसके ऊपर छाया करने वाला एक लता वाला वृक्ष हमने उगा दिया।[3]

وَاَرْسَلْنٰهُ اِلٰى مِائَةِ اَلْفٍ اَوْ يَزِيْدُوْنَ ﴿١٤٧﴾
(१४७) तथा हमने उन्हें एक लाख बल्कि उससे भी अधिक जनसमूह की ओर भेजा।

فَاٰمَنُوْا فَمَتَّعْنٰهُمْ اِلٰى حِيْنٍ ﴿١٤٨﴾
(१४८) तो वे ईमान लाये[4] तथा हमने एक अवधि तक उन्हें सुख-सुविधा प्रदान की।

فَاسْتَفْتِهِمْ اَلِرَبِّكَ الْبَنَاتُ وَلَهُمُ الْبَنُوْنَ ﴿١٤٩﴾
(१४९) उनसे पूछिये कि क्या आपके प्रभु की तो पुत्रियाँ हैं तथा उनके पुत्र हैं?

اَمْ خَلَقْنَا الْمَلٰٓئِكَةَ اِنَاثًا وَّهُمْ شٰهِدُوْنَ ﴿١٥٠﴾
(१५०) अथवा ये उस समय उपस्थित थे जब हमने फ़रिश्तों को नारियाँ पैदा किया।[5]

اَلَآ اِنَّهُمْ مِّنْ اِفْكِهِمْ لَيَقُوْلُوْنَ ﴿١٥١﴾
(१५१) सावधान रहो कि ये लोग अपनी मनगढ़न्त से कह रहे हैं।

---

[1]अर्थात क्षमा-याचना तथा अल्लाह की पवित्रतागान न करते, जैसाकि उन्होंने ﴿لَّآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ اِنِّيْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ﴾ (अल-अम्बिया-८७) कहा, तो वह क़ियामत (प्रलय) तक मछली के पेट ही में रहते।

[2]जैसे पैदाइश के समय शिशु अथवा जानवर का चूज़ा होता है क्षीण, निर्बल एवं अशक्त।

[3] يَقْطِيْن (यक़तीन) प्रत्येक उस लता को कहते हैं जो अपने तने पर खड़ी नहीं होती, जैसे लौकी, कद्दू की लता। अर्थात उस चटियल भूमि में जहाँ वृक्ष था न भवन, एक छायादार लता उगाकर उनकी रक्षा की।

[4]उनके ईमान लाने की स्थिति का वर्णन सूर: यूनुस में गुज़र चुका है।

[5]अर्थात फ़रिश्तों को जो यह अल्लाह की बेटियाँ कहते हैं, तो क्या जब हमने फ़रिश्ते पैदा किये थे यह उस समय वहाँ उपस्थित थे और उन्होंने फ़रिश्तों में नारियों की विशेषताओं का अवलोकन किया था?

وَلَدَ اللّٰهُ ۙ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿١٥٢﴾

(१५२) कि अल्लाह की सन्तान हैं, वस्तुत: ये केवल झूठे हैं।

اَصْطَفَى الْبَنَاتِ عَلَى الْبَنِيْنَ ﴿١٥٣﴾

(१५३) क्या अल्लाह (तआला) ने अपने लिए पुत्रियों को पुत्र पर प्राथमिकता दी ?[1]

مَا لَكُمْ ۫ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ﴿١٥٤﴾

(१५४) तुम्हें क्या हो गया है, कैसे आदेश लगाते फिरते हो ?

اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿١٥٥﴾

(१५५) क्या तुम इतना भी नहीं समझते ?[2]

اَمْ لَكُمْ سُلْطٰنٌ مُّبِيْنٌ ۙ ﴿١٥٦﴾

(१५६) अथवा तुम्हारे पास (उसका) कोई स्पष्ट प्रमाण है ?

فَاْتُوْا بِكِتٰبِكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٥٧﴾

(१५७) तो जाओ यदि सच्चे हो तो अपनी ही किताब ले आओ।[3]

وَجَعَلُوْا بَيْنَهٗ وَبَيْنَ الْجِنَّةِ نَسَبًا ؕ وَلَقَدْ عَلِمَتِ الْجِنَّةُ اِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَ ۙ ﴿١٥٨﴾

(१५८) तथा उन लोगों ने तो अल्लाह के तथा जिन्नात के मध्य भी नाता स्थापित किया है,[4] तथा जबकि जिन्नात स्वयं ज्ञान रखते हैं कि वे (इस आस्था के लोग यातना के समक्ष) प्रस्तुत किये जायेंगे।[5]

---

[1]जब कि यह स्वयं अपने लिये बेटियाँ नहीं बेटे पसन्द करते हैं।

[2]यदि अल्लाह की संतान होती तो नर होती जिसको तुम भी पसन्द करते तथा उत्तम समझते हो न कि पुत्रियाँ जो तुम्हारी दृष्टि में हीन तथा तुच्छ हैं।

[3]अर्थात बुद्धि तो इस आस्था को औचित्य स्वीकार नहीं करती कि अल्लाह के संतान हैं तथा वह भी स्त्री, चलो कोई प्रमाण किसी ईश्वरीय धर्मग्रन्थ ही से दिखा दो, कोई धर्मशास्त्र जो अल्लाह ने अवतरित किया हो उसमें अल्लाह की संतान का इकरार तथा संदर्भ हो ?

[4]यह संकेत है मूर्तिपूजकों की इस आस्था की ओर कि अल्लाह ने जिन्नों के साथ विवाह का नाता स्थापित किया जिससे पुत्रियाँ पैदा हुई। यही अल्लाह की पुत्रियाँ फ़रिश्ते हैं। इस प्रकार अल्लाह तआला (परमेश्वर) तथा जिन्नों के बीच ससुराली नाता स्थापित हो गया।

[5]जबकि यह बात कैसे सही हो सकती है ? यदि ऐसा होता तो अल्लाह जिन्नों को यातना में क्यों डालता ? क्या वह अपने नातेदारी पर ध्यान न देता ? तथा यदि ऐसा नहीं है, अपितु

سُبۡحَٰنَ ٱللَّهِ عَمَّا يَصِفُونَ ١٥٩
(१५९) जो कुछ ये(अल्लाह के विषय में) वर्णन कर रहे हैं उससे अल्लाह (तआला) पवित्र है।

إِلَّا عِبَادَ ٱللَّهِ ٱلۡمُخۡلَصِينَ ١٦٠
(१६०) सिवाय अल्लाह (तआला) के शुद्ध भक्तों के।[1]

فَإِنَّكُمۡ وَمَا تَعۡبُدُونَ ١٦١
(१६१) विश्वास करो कि तुम सब तथा तुम्हारे (झूठे) देवता।

مَآ أَنتُمۡ عَلَيۡهِ بِفَٰتِنِينَ ١٦٢
(१६२) किसी एक को भी बहका नहीं सकते।

إِلَّا مَنۡ هُوَ صَالِ ٱلۡجَحِيمِ ١٦٣
(१६३) सिवाय उनके जो नरक में जाने वाले ही हैं।[2]

وَمَا مِنَّآ إِلَّا لَهُۥ مَقَامٞ مَّعۡلُومٞ ١٦٤
(१६४) (फ़रिश्तों का कथन है) कि हममें से प्रत्येक का स्थान नियमित है।[3]

وَإِنَّا لَنَحۡنُ ٱلصَّآفُّونَ ١٦٥
(१६५) तथा हम (अल्लाह की आज्ञापालन में) पंक्तिबद्ध खड़े हुए हैं।

وَإِنَّا لَنَحۡنُ ٱلۡمُسَبِّحُونَ ١٦٦
(१६६) तथा उसकी तस्बीह (पवित्रता का गान) कर रहे हैं।[4]

स्वयं जिन्न भी जानते हैं कि उन्हें अल्लाह का दण्ड एवं सज़ा भुगतने के लिए अवश्य नरक में जाना होगा तो फिर अल्लाह तथा जिन्नों के बीच नाता किस प्रकार हो सकता है ?

[1]अर्थात ये अल्लाह के संबन्ध में ऐसी बातें नहीं कहते जिनसे वह पवित्र है यह मूर्तिपूजकों का ही व्यवहार है। अथवा यह अभिप्राय है कि नरक में जिन्न एवं मिश्रणवादी उपस्थित किये जायेंगे अल्लाह के मुख़लिस (चुने हुए) बंदे नहीं। उनके लिये तो अल्लाह ने स्वर्ग तैयार कर रखा है। इस अवस्था में यह لَمُحۡضَرُونَ से अलग किया गया है, तथा تسبيح (तस्बीह) अलग प्रसंग वाक्य है।

[2]अर्थात तुम तथा तुम्हारे झूठे पूज्य किसी को गुमराह करने पर समर्थ नहीं हैं सिवाय उनके जो अल्लाह के ज्ञान में पहले ही से नरक के पात्र हैं तथा इसी कारण वह शिर्क तथा कुफ़्र पर अडिग हैं।

[3]अर्थात अल्लाह की उपासना के लिए, यह फ़रिश्तों का कथन है।

[4]अभिप्राय यह है कि फ़रिश्ते भी अल्लाह की सृष्टि एवं उसके विशेष दास हैं जो हर समय उसकी वंदना तथा उसकी तस्बीह एवं तक़दीस (पवित्रतागान) में लीन रहते हैं, न कि वह

وَإِن كَانُوا لَيَقُولُونَ ﴿١٦٧﴾

(१६७) तथा काफ़िर तो कहा करते थे।

لَوْ أَنَّ عِندَنَا ذِكْرًا مِّنَ الْأَوَّلِينَ ﴿١٦٨﴾

(१६८) कि यदि हमारे पास अगले लोगों का ज़िक्र (स्मृति) होता।

لَكُنَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ﴿١٦٩﴾

(१६९) तो हम भी अल्लाह के चुने हुए बन्दे हो जाते।[1]

فَكَفَرُوا بِهِ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿١٧٠﴾

(१७०) परन्तु फिर इस (क़ुरआन) से कुफ़्र (इंकार) कर गये[2] तो शीघ्र ही जान लेंगे।[3]

وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا الْمُرْسَلِينَ ﴿١٧١﴾

(१७१) तथा निश्चय हमारा वचन पूर्व में ही अपने रसूलों के लिए लागू हो चुका है।

إِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنصُورُونَ ﴿١٧٢﴾

(१७२) कि निःसन्देह वे लोग ही सहायता किये जायेंगे।

وَإِنَّ جُندَنَا لَهُمُ الْغَالِبُونَ ﴿١٧٣﴾

(१७३) तथा हमारी सेना प्रभावशाली (एवं श्रेष्ठतम) रहेगी।[4]

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿١٧٤﴾

(१७४) अब आप कुछ दिनों तक इनसे मुख फेर लीजिए।[5]

अल्लाह की पुत्रियाँ हैं जैसाकि मिश्रणवादी (मुश्रिकीन) कहते हैं।

[1] ذكر (स्मृति) से अभिप्राय कोई अल्लाह की किताब अथवा पैग़म्बर है। अर्थात मूर्तिपूजक पवित्र क़ुरआन के अवतरित होने से पहले कहा करते थे कि हमारे पास भी कोई आकाशीय ग्रन्थ होता जिस प्रकार पहले लोगों पर धर्मग्रन्थ तौरात आदि अवतरित हुए। या कोई मार्गदर्शक अथवा सचेत करने वाला हमें शिक्षा देने वाला होता तो हम भी अल्लाह के विशुद्ध भक्त बन जाते।

[2] अर्थात उनकी कामनानुसार जब अन्तिम ईशदूत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आ गये तथा पवित्र क़ुरआन अवतरित कर दिया गया तो उन पर ईमान न लाकर उनका इंकार किया।

[3] यह चेतावनी तथा धमकी है कि इस झुठलाने का दुष्परिणाम शीघ्र उनको मालूम हो जायेगा।

[4] जैसे दूसरे स्थान पर फ़रमाया : ﴿كَتَبَ اللَّهُ لَأَغْلِبَنَّ أَنَا وَرُسُلِي﴾ (अल-मुजादिलः -२१)

[5] अर्थात उनकी बातों तथा यातनाओं पर धैर्य कीजिए।

وَأَبْصِرْهُمْ فَسَوْفَ يُبْصِرُونَ ۝١٧٥

(१७५) तथा उन्हें देखते रहिए[1] तथा ये भी आगे चलकर देख लेंगे।

أَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُونَ ۝١٧٦

(१७६) क्या ये हमारी यातनाओं की शीघ्रता मचा रहे हैं ?

فَإِذَا نَزَلَ بِسَاحَتِهِمْ فَسَاءَ صَبَاحُ الْمُنذَرِينَ ۝١٧٧

(१७७) (सुनो !) जब हमारा प्रकोप उनके मैदानों में उतर आयेगा उस समय उनकी जिनको सावधान कर दिया गया था,[2] बड़ी बुरी सुबह होगी।

وَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتَّىٰ حِينٍ ۝١٧٨

(१७८) तथा आप कुछ समय तक उनका ध्यान छोड़ दीजिए।

وَأَبْصِرْ فَسَوْفَ يُبْصِرُونَ ۝١٧٩

(१७९) तथा देखते रहिए यह भी अभी-अभी देख लेंगे।[3]

سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُونَ ۝١٨٠

(१८०) पवित्र है आपका प्रभु जो अति सम्मान वाला है, प्रत्येक उस बात से जो (मूर्तिपूजक) कहा करते हैं।[4]

---

[1]कि कब उन पर अल्लाह का प्रकोप आयेगा ?

[2]जब मुसलमान ख़ैबर विजय करने गये तो यहूदी उन्हें देखकर घबरा गये, जिस पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी الله اكبر अल्लाहु अकबर, (अल्लाह महान है) कह कर फ़रमाया : خربت خيبر ، إنا إذا نزلنا بساحة قوم فساء صباح المنذرين (सहीह बुख़ारी किताबुस्सलात, बाब मा युज़करू फ़िल फ़ख़िज़े

[3]यह बल देने के लिए दुहराया है, अथवा पहले वाक्य से अभिप्राय संसार की वह यातना (प्रकोप) है, जो मक्कावासियों पर बद्र तथा ओहद इत्यादि युद्धों में मुसलमानों के हाथों काफ़िरों की हत्या एवं लूट-पाट स्वरूप सामने आया तथा दूसरे वाक्य में उस दण्ड की चर्चा है जिससे यह काफ़िर तथा मुशरिक परलोक में भुगतेंगे।

[4]इसमें उन दोषों तथा अवगुणों से अल्लाह के पवित्र होने की चर्चा है जो बहुदेववादी अल्लाह के लिए वर्णन करते हैं, जैसे उसकी संतान अथवा उसका कोई साझी है। यह दोष बन्दों में है तथा संतान एवं साझीदारों की आवश्यकता भी उन्हीं को है। अल्लाह

(१८१) पैग़म्बरों पर सलाम है ।[1] وَسَلَٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِينَ ۝١٨١

(१८२) तथा सभी प्रशंसायें अल्लाह सर्वलोक के पालनहार के लिए हैं ।[2] وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَٰلَمِينَ ۝١٨٢

सूरतु साद-३८

سُورَةُ صٓ

सूर: स्वाद मक्का में अवतरित हुई, इसमें अठासी आयतें तथा पाँच रूकूअ हैं ।

अल्लाह तआला के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु अत्यन्त कृपालु है । بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

(१) साद, इस शिक्षाप्रद क़ुरआन की सौगन्ध ।[3] صٓ وَالْقُرْءَانِ ذِي الذِّكْرِ ۝١

(२) बल्कि काफ़िर अहंकार एवं विरोध में पड़े हुए हैं ।[4] بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي عِزَّةٍ وَشِقَاقٍ ۝٢

इन सब बातों से अति महान तथा उच्च है, क्योंकि वह निस्पृह है, उसे किसी संतान व साझी की आवश्यकता नहीं ।

[1]कि उन्होंने अल्लाह का संदेश जगतवासियों की ओर पहुँचाया जिस पर निश्चय वह सलाम तथा बधाई के पात्र हैं ।

[2]यह बन्दों को समझाया जा रहा है कि अल्लाह ने तुम पर उपकार किया है, संदेष्टा भेजे, धर्मशास्त्र अवतरित किये तथा पैग़म्बरों ने तुम्हें अल्लाह का पैग़ाम सुनाया । अत: तुम अल्लाह की कृतज्ञता व्यक्त करो । कुछ कहते हैं कि काफ़िरों का सत्यानाश करके ईमानवालों तथा रसूलों को बचाया । उस पर अल्लाह के आभारी बनो । حمد (हम्द) का अर्थ है महिमा के इरादे से प्रशंसा, गुणगान तथा महानता का वर्णन करना ।

व्याख्या सूर: साद :

[3]जिसमें तुम्हारे लिये प्रत्येक प्रकार की शिक्षा है तथा ऐसी बातें हैं जिनसे लोक भी संवर जाये तथा परलोक भी । कुछ ने ذي الذكر का अनुवाद प्रतिष्ठावान तथा उच्चतम किया है। इमाम इब्ने कसीर कहते हैं कि दोनों अर्थ सही हैं, क्योंकि क़ुरआन प्रतिष्ठावान भी है तथा ईमानवालों के लिए शिक्षा भी । इस सौगन्ध का उत्तर लुप्त है कि बात ऐसी नहीं जैसे मक्का के नास्तिक कहते हैं कि मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जादूगर, कवि अथवा झूठे हैं, अपितु आप अल्लाह के रसूल हैं जिन पर यह क़ुरआन अवतरित हुआ ।

[4]अर्थात यह क़ुरआन तो निश्चय ही शंका से पवित्र तथा उनके लिए शिक्षाप्रद है जो शिक्षा प्राप्त करें, हाँ काफ़िरों को इस से लाभ इसलिए नहीं पहुँच सकता कि उनके मस्तिष्क में

(३) हमने इनसे पूर्व भी बहुत से सम्प्रदायों को नाश कर डाला,[1] उन्होंने हर प्रकार की चीख़-पुकार की परन्तु वह समय छुटकारे का न था ।[2]

كَمْ أَهْلَكْنَا مِن قَبْلِهِم مِّن قَرْنٍ فَنَادَوا وَّلَاتَ حِينَ مَنَاصٍ ③

(४) तथा काफ़िरों को इस बात पर आश्चर्य हुआ कि उन्ही में से एक डराने वाला आ गया[3] तथा कहने लगे कि यह जादूगर तथा झूठा है ।

وَعَجِبُوا أَن جَاءَهُم مُّنذِرٌ مِّنْهُمْ ۖ وَقَالَ الْكَافِرُونَ هَٰذَا سَاحِرٌ كَذَّابٌ ④

(५) क्या इसने इतने सारे देवताओं को एक ही देवता कर दिया, वास्तव में यह अत्यन्त विचित्र बात है ।[4]

أَجَعَلَ الْآلِهَةَ إِلَٰهًا وَاحِدًا ۖ إِنَّ هَٰذَا لَشَيْءٌ عُجَابٌ ⑤

(६) उनके प्रमुख यह कहते हुए चले कि जाओ अपने देवताओं पर दृढ़ रहो,[5] निःसंदेह इस बात में कोई उद्देश्य (स्वार्थ) है ।[6]

وَانطَلَقَ الْمَلَأُ مِنْهُمْ أَنِ امْشُوا وَاصْبِرُوا عَلَىٰ آلِهَتِكُمْ ۖ إِنَّ هَٰذَا لَشَيْءٌ يُرَادُ ⑥

अहंकार तथा घमंड भरा हुआ है तथा दिलों में विरोध तथा शत्रुता । عزت (इज़्ज़त) का अर्थ होता है सत्य के विरोध में अकड़ना ।

[1]जो उनसे अधिक बलवान एवं शक्तिशाली थे, किन्तु कुफ़्र तथा झुठलाने के कारण दुष्परिणाम के भोगी हुए ।

[2]उन्होंने प्रकोप देखकर सहायता के लिए पुकारा तथा क्षमा-याचना का प्रदर्शन किया किन्तु वह समय क्षमा करने का था न पलायन (भागने) का । इसलिए न उनका ईमान लाभप्रद हुआ न वह भाग कर प्रकोप से बच सके । لَاتَ शब्द لا ही है जिसमें ت (त) अधिक है, जैसे ثُمَّ को ثُمَّتَ भी बोलते हैं । مناص धातु है نَاصَ يَنُوصُ का जिसका अर्थ भागना पीछे हटना है ।

[3]अर्थात उन्हीं जैसा एक मानव पुरूष रसूल किस प्रकार बन गया ।

[4]अर्थात एक ही अल्लाह पूरे विश्व का व्यवस्थापक है, उसका कोई साझी नहीं । इसी प्रकार इबादत (वंदना) तथा चढ़ावे का अधिकारी मात्र वही एक है । यह उनके लिए विचित्र बात थी ।

[5]अर्थात अपने धर्म पर अडिग रहो तथा मूर्तियों की पूजा करते रहो, मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की बात पर कान न धरो ।

[6]अर्थात यह हमें अपने देवताओं से अलग कर वस्तुतः हमें अपना अनुयायी बनाना तथा अपना नेतृत्व एवं बड़ाई मनवाना चाहता है ।

مَا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِي الْمِلَّةِ الْاٰخِرَةِ ۚ إِنْ هٰذَآ إِلَّا اخْتِلَاقٌ ۝

(७) हमने तो यह बात प्राचीन धर्मों में भी नहीं सुनी,[1] कुछ नहीं, यह तो केवल मनगढ़न्त है ।[2]

ءَأُنْزِلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ مِنْ بَيْنِنَا ۚ بَلْ هُمْ فِي شَكٍّ مِّنْ ذِكْرِي ۚ بَلْ لَّمَّا يَذُوقُوا عَذَابِ ۝

(८) क्या हम सभी में से उसी पर (अल्लाह की) वार्ता अवतरित की गई है ?[3] वास्तव में यह लोग मेरी प्रकाशना (वह्यी) की ओर से संदेह में हैं,[4] बल्कि (ठीक यह है कि) उन्होंने मेरी यातना का स्वाद अभी चखा ही नहीं ।[5]

أَمْ عِنْدَهُمْ خَزَائِنُ رَحْمَةِ رَبِّكَ الْعَزِيزِ الْوَهَّابِ ۝

(९) अथवा क्या उनके पास तेरे प्रभुत्वशाली दानी प्रभु की कृपा के कोष हैं ।[6]

---

[1]पिछले धर्म से अभिप्राय या तो कुरैश ही का अपना धर्म है या फिर इसाई धर्म । अर्थात यह जिस तौहीद (एकेश्वरवाद) का आमंत्रण दे रहा है उसके विषय में तो हमने किसी धर्म में नहीं सुना ।

[2]अर्थात यह तौहीद मात्र उसकी अपनी मनगढ़त है, अन्यथा इसाई धर्म में भी अल्लाह के साथ दूसरों को उपासना में साझी माना गया है ।

[3]अर्थात मक्का में बड़े-बड़े चौधरी तथा धनपति हैं । यदि अल्लाह किसी को नबी बनाना ही चाहता तो उनमें से बनाता । इन सबको छोड़कर प्रकाशना (वह्यी) एवं दूतत्व (रिसालत) के लिये मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का चयन भी विचित्र है ? यह जैसे उन्होंने अल्लाह के निर्वाचन में कीड़ (दोष) निकाले । सच है "खूवे बदरा बहानये बिस्यार" (दुराचारी के लिए बहुत से बहाने हैं) । दूसरे स्थान पर भी यह विषय वर्णित है । उदाहरणार्थ *सूरः अहज़ाब*-३१,३२

[4]अर्थात उनका इंकार इस कारण नहीं है कि उन्हें मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सत्यता का ज्ञान नहीं, अथवा आपके सुबोध से उन्हें इंकार है अपितु यह उस प्रकाशना (वह्यी) के संदर्भ में ही शंका तथा शंसय में ग्रस्त हैं जो आप पर अवतरित हुई, जिसमें सब से प्रत्यक्ष तौहीद (अद्वैत) का आमन्त्रण है ।

[5]क्योंकि प्रकोप का स्वाद चख लेते तो इतनी खुली चीज़ को न झुठलाते तथा जब इस झुठलाने का वास्तविक स्वाद चखेंगे तो वह समय ऐसा होगा कि फिर न मानना काम आयेगा न ईमान ही लाभदायक होगा ।

[6]कि यह जिसे चाहें दें तथा जिसे चाहे न दें । इन्हीं कोषों में नबूअत (दूतत्व) भी है । तथा यदि ऐसा नहीं है, अपितु प्रभु के कोषों का स्वामी वही दाता है, तो फिर उन्हें नबूअत मोहम्मदी से इंकार क्यों है जिसे परमदाता प्रभु ने अपनी विशेष दया से प्रदान किया है ।

(१०) अथवा क्या आकाश एवं धरती तथा उनके मध्य की प्रत्येक वस्तु का राज्य उन्ही का है, तो फिर ये रस्सियाँ तानकर चढ़ जायें ।[1]

أَمْ لَهُم مُّلْكُ السَّمَٰوَٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۖ فَلْيَرْتَقُوا فِي الْأَسْبَابِ ⑩

(११) यह भी (विशाल) सेनाओं में से पराजित (छोटी सी) सेना है ।[2]

جُندٌ مَّا هُنَالِكَ مَهْزُومٌ مِّنَ الْأَحْزَابِ ⑪

(१२) उनसे पूर्व नूह के समुदाय तथा आद एवं कीलों वाले फ़िरऔन[3] ने झुठलाया था ।

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَعَادٌ وَفِرْعَوْنُ ذُو الْأَوْتَادِ ⑫

(१३) तथा समूदियों एवं लूत के समुदाय ने तथा वन के रहने वालों[4] ने भी, यही (विशाल) सेनायें थीं ।

وَثَمُودُ وَقَوْمُ لُوطٍ وَأَصْحَابُ لْـَٔيْكَةِ ۚ أُولَٰٓئِكَ الْأَحْزَابُ ⑬

---

[1]अर्थात आकाश पर चढ़कर उस प्रकाशना का क्रम काट दें जो मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर अवतरित होती है । أسباب (अस्बाब) बहुवचन है سبب (सबब) का इसका शाब्दिक अर्थ है, जिसके द्वारा लक्ष्य तक पहुँचा जाये चाहे वह कोई भी वस्तु हो । इसलिए इनके विभिन्न अर्थ किये गये हैं । एक अनुवाद द्वार भी किया गया है जिससे फ़रिश्ते धरती पर उतरते हैं अर्थात सिढ़ियों द्वारा आकाश के द्वार तक पहुँच जायें तथा प्रकाशना (वह्यी) बन्द कर दें । (फ़तहुल क़दीर)

[2] جُندٌ विधेय है जिसका विषय लुप्त है । مَا बड़ाई तथा हीनता पर बल देने के लिए है । यह अल्लाह तआला (परमेश्वर) की ओर से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सहायता तथा काफ़िरों की पराजय का वचन है । अर्थात काफ़िरों की यह सेना जो बातिल (अनृत) की सेनाओं में से एक सेना है, बड़ी है अथवा हीन, इसकी कदापि परवाह न करें पराजय उनका भाग्य है । هُنَالِكَ में दूर स्थान की ओर संकेत है जो बद्र एवं मक्का विजय के दिन की ओर भी हो सकता है । जहाँ काफ़िर शिक्षाप्रद पराजय से दो-चार हुए ।

[3]फ़िरऔन को खूँटों वाला इसलिए कहा कि वह निर्दयी जब किसी पर क्रोधित होता तो उसके हाथों, पैरों तथा सर में कीलें गाड़ देता, अथवा इसका उद्देश्य व्यंजना स्वरूप उसके वल, शक्ति एवं दृढ़ राज्य को दिखाना है । अर्थात कीलों से जिस प्रकार किसी वस्तु को दृढ़ कर दिया जाता है उसी प्रकार उसकी भारी सेना तथा उसके अनुगामी भी उसके राज्य शक्ति एवं दृढ़ता का कारण थे ।

[4]أصحاب الأيكة के लिये सूर: शुअरा १७६ का भाष्य देखें ।

إِن كُلٌّ إِلَّا كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ عِقَابِ ⑭

(१४) इनमें से एक भी ऐसा न था जिसने रसूलों को झुठलाया न हो, तो मेरा प्रकोप उन पर सिद्ध हो गया।

وَمَا يَنظُرُ هَٰؤُلَاءِ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً مَّا لَهَا مِن فَوَاقٍ ⑮

(१५) तथा उन्हें केवल एक तीब्र ध्वनि की प्रतीक्षा है,[1] जिसमें कोई विघ्न (तथा ढील) नहीं है।[2]

وَقَالُوا رَبَّنَا عَجِّل لَّنَا قِطَّنَا قَبْلَ يَوْمِ الْحِسَابِ ⑯

(१६) तथा (उन्होंने) कहा कि हे हमारे प्रभु ! हमारा लेखा-जोखा तू हमें हिसाब के दिन से पूर्व ही प्रदान कर दे।[3]

اصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَاذْكُرْ عَبْدَنَا دَاوُودَ ذَا الْأَيْدِ إِنَّهُ أَوَّابٌ ⑰

(१७) आप उनकी बातों पर धैर्य रखें तथा हमारे भक्त दाऊद को याद करें जो अत्यन्त शक्तिशाली था,[4] निःसंदेह वह बहुत ध्यानमग्न था।

---

[1]अर्थात नरसिंघा फूँकने का जिस से प्रलय व्याप्त हो जायेगी।

[2]दूध दुहने वाला एक बार कुछ दूध दुहकर बच्चे को ऊँटनी अथवा गाय, भैंस के पास छोड़ देता है ताकि उसके दूध पीने से थनों में दूध उतर आये। फिर थोड़े समय बाद बच्चे को बलपूर्वक पीछे हटाकर स्वयं दूध दूहना आरम्भ कर देता है। यह दो बार दूध दूहने के मध्य जो अन्तर है यह فواق (फ़वाक़) कहलाता है। अर्थात नरसिंघा फूँकने के पश्चात इतना भी अवसर नहीं मिलेगा अपितु सूर (नरसिंघा) फूँकने की देर होगी कि प्रलय का भूकम्प व्याप्त हो जायेगा।

[3] قِـطّ (क़ित्त) का अर्थ है, हिस्सा, अभिप्राय यहाँ कर्मपत्र अथवा लेखा-जोखा है अर्थात हमारे कमपर्त्रानुसार हमारे भाग में अच्छी व बुरी सजा जो भी हो हिसाब का दिन आने से पहले हमें संसार ही में दे दो यह يَستعجلونَك بالعَذاب वाली बात ही है। यह क़ियामत (प्रलय) के होने को असंभव समझते हुए परिहास तथा उपहास स्वरूप उन्होंने कहा।

[4]यह أيــدٌ - يدٌ का बहुवचन नहीं है, अपितु यह آدَ يَئيدُ का धातु है أيدٌ बल तथा दृढ़ता। इसी से تأييد समर्थन देने के अर्थ में है। इससे अभिप्राय धार्मिक बल एवं दृढ़तम है। जैसे हदीस में आता है कि अल्लाह को प्रिय नमाज़ दाऊद की नमाज़ तथा प्रिय रोज़े (व्रत) दाऊद के रोज़े हैं, वह आधी रात सोते फिर उठकर रात्रि का तिहाई भाग क़याम (प्रार्थना) करते तथा फिर छठें भाग में सो जाते। एक दिन रोज़ा रखते तथा एक दिन नाग़ा (अन्तर) करते तथा रणभूमि से नहीं भागते (सहीह बुख़ारी, किताबुल अम्बिया, तथा मुस्लिम, किताबुस सेयाम, बाबुन्नहिये अन सौमिद्दहरे)

إِنَّا سَخَّرْنَا الْجِبَالَ مَعَهُ يُسَبِّحْنَ بِالْعَشِيِّ وَالْإِشْرَاقِ ⑱

(१८) हमने पर्वतों को उसके अधीन कर दिया था कि उसके साथ संध्या तथा प्रात:को महिमागान करें।

وَالطَّيْرَ مَحْشُورَةً كُلٌّ لَّهُ أَوَّابٌ ⑲

(१९) तथा (उड़ते) पक्षियों को भी एकत्रित होकर, सबके सब उसके अधीन होते।[1]

وَشَدَدْنَا مُلْكَهُ وَآتَيْنَاهُ الْحِكْمَةَ وَفَصْلَ الْخِطَابِ ⑳

(२०) तथा हमने उसके राज्य को सुदृढ़ कर दिया था[2] तथा उसे तत्वज्ञान (हिक्मत) प्रदान किया था[3] तथा बात का निर्णय (सुझा दिया था)।[4]

وَهَلْ أَتَاكَ نَبَأُ الْخَصْمِ إِذْ تَسَوَّرُوا الْمِحْرَابَ ㉑

(२१) तथा क्या तुझे झगड़ा करने वालों की सूचना मिली जबकि वे दीवार फाँदकर मेहराब में (इबादत के स्थान पर) आ गये?[5]

إِذْ دَخَلُوا عَلَىٰ دَاوُودَ فَفَزِعَ مِنْهُمْ قَالُوا

(२२) जब ये दाऊद के पास पहुँचे तो ये उनसे डर गये,[6] (उन्होंने) कहा भयभीत न

---

[1]अर्थात पौ फटने के समय तथा आखिर दिन को पर्वत भी दाऊद के संग तस्बीह में लीन होते तथा उड़ते पक्षी भी जबूर का पाठ सुनकर वायु में ही एकत्र हो जाते एवं उनके साथ तस्बीह (पवित्रतागान) करते مَحْشُورَة (महशूर:) का अर्थ एकत्रित है।

[2]प्रत्येक प्रकार के भौतिक तथा आध्यात्मिक साधनों द्वारा।

[3]अर्थात नबूअत (दूतत्व), सही राये, सीधी बात तथा सीधा काम।

[4]अर्थात विवाद का निर्णय करने की योग्यता, सूझबूझ, धर्मबोध एवं तर्क निकालने तथा वर्णन करने की शक्ति।

[5] مِحْرَاب (मेहराब) से अभिप्राय वह कक्ष है जिसमें सबसे अलग होकर एकाग्रता के साथ अल्लाह की उपासना करते थे, द्वार पर द्वारपाल होते ताकि कोई भीतर जाकर उपासना में बाधक न हो। झगड़ा करने वाले पीछे से दीवार फाँद कर भीतर आ गये।

[6]भय का कारण स्पष्ट है कि एक तो वह द्वार से नहीं पीछे से दीवार पर चढ़कर भीतर आये, दूसरे उन्होंने इतना बड़ा कार्य करते हुए समय के राजा का कोई भय नही प्रतीत किया। प्रत्यक्ष कारणों के अनुसार भय वाली वस्तु से भय खाना मानव की एक प्राकृतिक माँग है। यह नबूअत एवं पद के विपरीत है न तौहीद के प्रतिकूल। तौहीद के विपरीत अल्लाह के सिवाय का वह भय है जो अकारण हो।

لَا تَخَفْ ۚ خَصْمَانِ بَغَىٰ بَعْضُنَا عَلَىٰ بَعْضٍ فَاحْكُمْ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ وَلَا تُشْطِطْ وَاهْدِنَا إِلَىٰ سَوَاءِ الصِّرَاطِ ﴿٢٢﴾

होइए, हमारा आपसी झगड़ा है, हममें से एक ने दूसरे पर अत्याचार किया है, तो आप हमारे मध्य न्यायपूर्वक निर्णय कर दीजिए तथा अन्याय न कीजिए तथा हमें सीधा मार्ग बता दीजिए ।[1]

إِنَّ هَٰذَا أَخِي لَهُ تِسْعٌ وَتِسْعُونَ نَعْجَةً وَلِيَ نَعْجَةٌ وَاحِدَةٌ فَقَالَ أَكْفِلْنِيهَا وَعَزَّنِي فِي الْخِطَابِ ﴿٢٣﴾

(२३) (सुनिये !) यह मेरा भाई है,[2] इसके पास निन्नानवे भेड़ें हैं तथा मेरे पास एक ही है, परन्तु यह मुझसे कह रहा है कि अपनी यह एक भी मुझे दे दे[3] तथा मुझ पर बात में बड़ा कटु व्यवहार करता है ।[4]

قَالَ لَقَدْ ظَلَمَكَ بِسُؤَالِ نَعْجَتِكَ إِلَىٰ نِعَاجِهِ ۖ وَإِنَّ كَثِيرًا مِنَ الْخُلَطَاءِ لَيَبْغِي بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَقَلِيلٌ مَا هُمْ ۗ وَظَنَّ دَاوُودُ أَنَّمَا فَتَنَّاهُ فَاسْتَغْفَرَ رَبَّهُ

(२४) (आपने) कहा, उसका अपनी भेड़ों के साथ तेरी एक भेड़ सम्मिलित करने का प्रश्न अवश्य तेरे ऊपर एक अत्याचार है तथा अधिकतर भागीदार एवं साझीदार (ऐसे ही होते हैं कि) एक-दूसरे पर अन्याय एवं अत्याचार करते हैं[5] सिवाय उनके जो ईमान लाये तथा जिन्होंने पुण्य के कार्य किये तथा

---

[1]आने वालों ने सांत्वना दी कि घबराने की आवश्यकता नहीं है, हमारे बीच एक झगड़ा है, हम आप से निर्णय कराने आये हैं । आप सत्यतापूर्वक निर्णय कर दें तथा सीधे मार्ग का हमें निर्देश भी कर दें ।

[2]भाई से अभिप्राय यहाँ धार्मिक भाई अथवा व्यवसाय का साझी है या मित्र है, सबको भाई कहना सही है ।

[3]अर्थात यह एक भेड़ भी मेरी भेड़ों में मिला दे ताकि मैं ही उसका भी स्वामी एवं मालिक हो जाऊँ ।

[4]दूसरा अनुवाद है, "तथा यह वार्तालाप में मुझ पर प्रभावी हो गया" अर्थात जैसे उसके पास माल अधिक है वैसे ही बोलने में भी मुझसे निपुण है, जिसके कारण लोगों से अपनी बात मनवा लेता है ।

[5]अर्थात इन्सानों में यह दोष सामान्य है कि एक साझीदार दूसरे पर ज्यादती करता है तथा प्रयास करता है कि दूसरे का भाग भी स्वयं हड़प कर जाये ।

وَخَرَّ رَاكِعًا وَأَنَابَ ۩ ﴿٢٤﴾
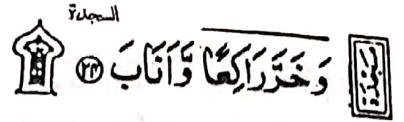
ऐसे लोग बहुत ही कम हैं,[1] तथा दाऊद (अलैहिस्सलाम) जान गये कि हमने उनकी परीक्षा ली है फिर तोअपने प्रभु से क्षमा-याचना करने लगे तथा विनम्रता के साथ गिर पड़े[2] तथा (पूर्णरूप से) ध्यानमग्न हो गये।

فَغَفَرْنَا لَهُ ذَٰلِكَ ۖ وَإِنَّ لَهُ عِندَنَا لَزُلْفَىٰ وَحُسْنَ مَآبٍ ﴿٢٥﴾

(२५) तो हमने भी उनका यह (दोष) क्षमा कर दिया,[3] नि:संदेह वह हमारे निकट अत्यन्त उच्च पद एवं सर्वोत्तम ठिकाने वाले हैं।

---

[1]हाँ, इस नैतिक दोष से ईमानवाले सुरक्षित रहते हैं, क्योंकि उनके दिलों में अल्लाह का भय होता है तथा वह सत्कर्म पर स्थायी होते हैं। अतएव वह दूसरों पर अत्याचार तथा दूसरों के माल को हड़पने का प्रयत्न नहीं करते। परन्तु इस स्वभाव के लोग कम ही होते हैं।

[2] وَخَرَّ رَاكِعًا का अभिप्राय यहाँ सजदे में गिर पड़ना है।

[3]ईशदूत दाऊद का वह क्या दोष था जिस पर खेद एवं लज्जा का संवेदन किया तथा अल्लाह ने उन्हें क्षमा कर दिया। पवित्र क़ुरआन में इस का विवरण नहीं है, न किसी प्रमाणित हदीस ही में इस विषय की कोई व्याख्या है। अत: कुछ भाष्यकारों ने तो यहूदी कथाओं को आधार बनाकर ऐसी बातें लिख दी हैं जो एक नबी की मर्यादा से नीची हैं। कुछ भाष्यकारों जैसे इब्ने कसीर ने कहा कि जब क़ुरआन तथा हदीस इस विषय में मौन हैं तो हमें उनके विवरण के कुरेद में पड़ने की आवश्यकता नहीं है। भाष्यकारों का एक तीसरा गिरोह है जो इस घटना का विवरण बताता है ताकि क़ुरआन के संक्षेप की कुछ व्याख्या हो जाये। फिर भी यह किसी एक बात पर सहमत नहीं है। कुछ कहते हैं कि आदरणीय दाऊद ने एक सैनिक को आदेश दिया था कि वह अपनी पत्नी को तलाक़ दे दे, तथा यह उस युग के प्रचलन में कोई दोष की बात नहीं थी। आदरणीय दाऊद को उसके गुणों तथा निपुणता का ज्ञान हुआ था, जिसके कारण उनमें यह आकांक्षा हुई कि उस स्त्री को तो रानी होना चाहिए न कि एक साधारण नारी, ताकि उसके गुणों एवं निपुणता से पूरा देश लाभन्वित हो। यह आकांक्षा कितनी भी शुभ भावना के आधार पर हो किन्तु एक तो अनेक पत्नियों की उपस्थिति में अनुचित सी बात लगती है, दूसरे राजा की ओर से इसे व्यक्त करने में दवाव का पक्ष भी सम्मिलित हो जाता है। इसलिए आदरणीय दाऊद को एक उसी जैसी घटना द्वारा इसके अनुचित होने का आभास कराया गया तथा उन्हें वास्तव में इस पर सचेतता आ गई। कुछ कहते हैं कि यह आने वाले दो व्यक्ति

يٰدَاوٗدُ اِنَّا جَعَلْنٰكَ خَلِيْفَةً فِى الْاَرْضِ فَاحْكُمْ بَيْنَ النَّاسِ بِالْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعِ الْهَوٰى فَيُضِلَّكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ يَضِلُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌۢ بِمَا نَسُوْا يَوْمَ الْحِسَابِ ﴿۲۶﴾

(२६) हे दाऊद ! हमने तुम्हें धरती का उत्तराधिकारी बना दिया तो तुम लोगों के मध्य न्यायपूर्ण निर्णय करो तथा अपने मन की इच्छाओं का अनुसरण न करो वरन् वह तुम्हें अल्लाह के मार्ग से हटा देगी। नि:संदेह जो लोग अल्लाह के मार्ग से भटक जाते हैं उनके लिए कठोर यातनायें हैं इसलिए कि उन्होंने हिसाब के दिन को भुला दिया है।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا بَاطِلًا ؕ ذٰلِكَ ظَنُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۚ فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنَ النَّارِ ﴿۲۷﴾

(२७) तथा हमने आकाश एवं धरती तथा उनके मध्य की वस्तुओं को व्यर्थ (एवं अकारण) पैदा नहीं किया।[1] यह शंका तो नास्तिकों की है, तो काफ़िरों के लिए अग्नि की ख़राबी है।

फ़रिश्ते थे जो एक बनावटी विवाद को लेकर उपस्थित हुए। आदरणीय दाऊद से यह चूक हुई कि वादी की बात सुनकर ही अपना विचार व्यक्त कर दिया तथा प्रतिवादी की बातें सुनने की आवश्यकता ही नहीं समझी। अल्लाह ने पदोन्नति के लिए इस परीक्षा में उन्हें डाला। इस त्रुटि का आभास होते ही वह समझ गये कि यह अल्लाह की ओर से परीक्षा थी जो उन पर आई, तथा अल्लाह के सदन में झुक गये। कुछ कहते हैं कि आने वाले फ़रिश्ते नहीं इन्सान ही थे, तथा यह काल्पनिक घटना नहीं एक वास्तविक विवाद था जिसके निर्णय के लिए वह आये थे। इस प्रकार उनके धैर्य एवं सहन की परीक्षा ली गई, क्योंकि इस घटना में अप्रियता तथा स्वाभाविक उत्तेजना के कई पक्ष थे। एक तो बिना अनुमति दीवार फांद कर आये, दूसरे इबादत के विशेष समय में आकर बाध्य होना, तीसरे उनकी बात करने की शैली भी आपकी राजकीय मर्यादा से न्यून था (कि अन्याय न करना आदि)। किन्तु अल्लाह ने दया की कि आप उत्तेजित नहीं हुए तथा पूर्ण धैर्य एवं सहनशीलता का प्रदर्शन किया। मन में अप्रियता का तनिक संवेदन भी उत्पन्न हुआ उसको भी अपना दोष मान गये। अर्थात यह अल्लाह की ओर से परीक्षा थी, इसलिए यह स्वाभाविक संकोच भी नहीं होनी चाहिए थी जिस पर उन्होंने तौबा एवं क्षमा-याचना की।

[1]अपितु एक विशेष उद्देश्य के लिए पैदा किया है तथा वह यह कि मेरे बन्दे मेरी उपासना करें। जो ऐसा करेगा उसे उत्तम प्रतिफल प्रदान करूंगा तथा जो मेरी उपासना तथा आज्ञापालन से मुंह फेरेगा उसके लिये नरक की यातना है।

أَمْ نَجْعَلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ كَالْمُفْسِدِينَ فِي الْأَرْضِ أَمْ نَجْعَلُ الْمُتَّقِينَ كَالْفُجَّارِ ﴿٢٨﴾

(२८) क्या हम उन लोगों को जो ईमान लाये तथा पुण्य के कार्य किये, उनके समान कर देंगे जो (नित्य) धरती पर उपद्रव मचाते रहे, अथवा सदाचारियों को कुकर्मियों जैसा कर देंगे ?

كِتَابٌ أَنْزَلْنَاهُ إِلَيْكَ مُبَارَكٌ لِيَدَّبَّرُوا آيَاتِهِ وَلِيَتَذَكَّرَ أُولُو الْأَلْبَابِ ﴿٢٩﴾

(२९) यह मंगलमय पुस्तक है जिसे हमने आपकी ओर इसलिए अवतरित किया है कि लोग इसकी आयतों पर ध्यान दें तथा विचार करें तथा बुद्धिमान इससे शिक्षा ग्रहण करें।

وَوَهَبْنَا لِدَاوُودَ سُلَيْمَانَ ۚ نِعْمَ الْعَبْدُ ۖ إِنَّهُ أَوَّابٌ ﴿٣٠﴾

(३०) तथा हमने दाऊद को सुलैमान (नामक पुत्र) प्रदान किया जो अति उत्तम भक्त था तथा अत्यधिक ध्यान लगाने वाला था।

إِذْ عُرِضَ عَلَيْهِ بِالْعَشِيِّ الصَّافِنَاتُ الْجِيَادُ ﴿٣١﴾

(३१) जब उनके सामने संध्या के समय तेज चलने वाले विशेष घोड़े प्रस्तुत किये गये।[1]

فَقَالَ إِنِّي أَحْبَبْتُ حُبَّ الْخَيْرِ عَنْ ذِكْرِ رَبِّي حَتَّىٰ تَوَارَتْ بِالْحِجَابِ ﴿٣٢﴾

(३२) तो कहने लगे कि मैंने अपने प्रभु की याद पर इन घोड़ों के प्रेम को प्राथमिकता दी यहाँ तक कि सूर्यास्त हो गया।

رُدُّوهَا عَلَيَّ ۖ فَطَفِقَ مَسْحًا بِالسُّوقِ وَالْأَعْنَاقِ ﴿٣٣﴾

(३३) इन घोड़ों को पुन: मेरे सामने लाओ, फिर पिंडलियों तथा गरदनों पर हाथ फेरने लगे।[2]

---

[1] صافنات यह صَافِنٌ अथवा صَافِنَةٌ का बहुवचन है अर्थात वह घोड़े जो तीन टाँगों पर खड़े हों। جِيَادٌ - جَوَادٌ का बहुवचन है जो तीव्रगामी घोड़ों को कहते हैं। अर्थात आदरणीय सुलैमान ने जिहाद (धर्मयुद्ध) के लिए जो घोड़े पाले हुए थे वह उत्तम, कुलीन एवं वेगगामी घोड़े सुलैमान के पास निरीक्षण के लिए लाये गये। عَشِيٌّ जोहर अथवा अस्र से दिन के अंत तक के समय को कहते हैं जिसे हम संध्या कहते हैं।

[2] इस अनुवाद के आधार पर أَحْبَبْتُ यह آثَرْتُ (महत्व देना) के अर्थ में है। عَنْ शब्द على के अर्थ में है, तथा تَوَارَتْ में सर्वनाम सूर्य की ओर फिरता है जो आयत में पहले वर्णित नहीं है किन्तु वाक्य क्रम उसे बता रहा है। इस व्याख्या के अनुसार आगामी आयत में

(३४) तथा हमने सुलैमान की परीक्षा ली तथा उनके सिंहासन पर एक धड़ डाल दिया,[1] फिर वह ध्यानमग्न हो गये।

وَلَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمَٰنَ وَأَلْقَيْنَا عَلَىٰ كُرْسِيِّهِۦ جَسَدًا ثُمَّ أَنَابَ ﴿٣٤﴾

(३५) कहा कि हे मेरे प्रभु मुझे क्षमा कर तथा मुझे ऐसा राज्य प्रदान कर जो मेरे

قَالَ رَبِّ ٱغْفِرْ لِى وَهَبْ لِى مُلْكًا لَّا يَنۢبَغِى لِأَحَدٍ مِّنۢ بَعْدِىٓ

مسحًا بالسُّــوق و الأعنــاق का अनुवाद भी वध करना होगा अर्थात مسحًا بالسَّيف (तलवार मारने) का अर्थ। अभिप्राय यह होगा कि घोड़ों के निरीक्षण (देखने) में अस्र की नमाज़ अथवा विशेष जाप रह गया जो उस समय वह करते थे। इस पर उन्हें घोर दुख हुआ तथा कहने लगे कि मैं घोड़ों के प्यार में इतना बेसुध खो गया कि सूर्यास्त हो गया तथा अल्लाह के स्मरण एवं नमाज़ अथवा जाप से अचेत रहा। अतः क्षतिपूर्ति के लिये उन्होंने सभी घड़े अल्लाह के लिए वध कर दिये। इमाम शौकानी तथा इब्ने कसीर आदि ने इसी भाष्य को प्राथमिकता दिया है। अन्य कुछ व्याख्याकारों ने इसकी दूसरी व्याख्या की है इसके आधार पर عَــــنْ अर्थ में है أجْلْ के। अथवा لأجْلِ ذِكْرِ رَبِّي (अपने पालनहार के स्मरण के कारण) मैं इन घोड़ों से प्रेम करता हूँ अर्थात इनके द्वारा अल्लाह के मार्ग में जिहाद होता है। फिर इन घोड़ों को दौड़ाया यहाँ तक कि जब वे आँखों से ओझल हो गये, उन्हें फिर वापस मँगाया तथा प्यार एवं प्रेम से उनकी पिंड़लियों तथा गरदनों पर हाथ फेरना आरम्भ किया। خَيْرٌ क़ुरआन में माल के अर्थ में प्रयोग हुआ है, यहाँ यह शब्द घोड़ों के लिये आया है। इमाम इब्ने जरीर तबरी ने इस दूसरी व्याख्या को प्राथमिकता दी है तथा यही व्याख्या अनेक कारणों से सही लगती है।

[1]यह परीक्षा क्या थी, कुर्सी पर डाला गया धड़ किस चीज़ का था तथा इसका अभिप्राय क्या है ? इसका भी कोई विवरण क़ुरआन व हदीस में नहीं मिलता। हाँ, कुछ भाष्यकारों ने सहीह हदीस से सिद्ध एक कथा से इस को सम्बन्धित किया है, जो यह है कि आदरणीय सुलैमान ने एक बार कहा कि मैं आज रात अपनी सभी पत्नियों से (जिन की संख्या ७० अथवा ९० थी) संभोग करूँगा ताकि उनसे वीर घुड़सवार पैदा हों जो अल्लाह के मार्ग में धर्मयुद्ध (जिहाद) करें। तथा इस पर إن شاء الله (यदि अल्लाह ने चाहा) नहीं कहा (अर्थात केवल अपनी युक्ति पर पूरा भरोसा कर लिया)। परिणाम यह हुआ कि सिवाय एक के कोई पत्नी गर्भवती नहीं हुई तथा गर्भवती पत्नी ने भी जो बच्चा जना वह भी अपूर्ण अर्थात आधा था। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा, यदि सुलैमान إن شاء الله कह लेते तो सब योद्धा पैदा होते (सहीह बुख़ारी, किताबुल अम्बिया, सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाबुल इस्तिसना)। इन व्याख्याकारों के विचार में शायद إن شاء الله न कहना अथवा केवल अपने उपाय पर निर्भर होना, यही परीक्षा हो जिसमें आदरणीय सुलैमान ग्रस्त हुए तथा कुर्सी पर डाला जाने वाला बच्चा यही अपूर्ण अर्धांग शिशु हो। والله أعلم

إِنَّكَ أَنتَ الْوَهَّابُ ۝٣٥

अतिरिक्त किसी (व्यक्ति) के योग्य न हो,[1] तू बड़ा ही दाता है।

فَسَخَّرْنَا لَهُ الرِّيحَ تَجْرِي بِأَمْرِهِ رُخَاءً حَيْثُ أَصَابَ ۝٣٦

(३६) तो हमने वायु को उनके वश में कर दिया, वह आपके आदेश से जहाँ आप चाहते कोमलता से पहुँचा दिया करती थी।[2]

وَالشَّيَاطِينَ كُلَّ بَنَّاءٍ وَغَوَّاصٍ ۝٣٧

(३७) तथा (शक्तिशाली) जिन्नात को भी (उनके अधीन कर दिया) तथा प्रत्येक भवन बनाने वाले को एवं डुबकी लगाने वाले को।

وَآخَرِينَ مُقَرَّنِينَ فِي الْأَصْفَادِ ۝٣٨

(३८) तथा अन्य (जिन्नात) को भी जो जंजीरों में जकड़े रहते।[3]

هَٰذَا عَطَاؤُنَا فَامْنُنْ أَوْ أَمْسِكْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝٣٩

(३९) यह है हमारा वरदान अब तू उपकार कर अथवा रोक रख कुछ हिसाब नहीं।[4]

وَإِنَّ لَهُ عِندَنَا لَزُلْفَىٰ وَحُسْنَ مَآبٍ ۝٤٠

(४०) तथा उनके लिए हमारे पास बड़ी निकटता है तथा बहुत अच्छा ठिकाना है।[5]

---

[1]अर्थात घुड़सवारों की सेना पैदा होने की कामना तेरे उपाय एवं चाहत से पूरी नहीं हुई, किन्तु मुझे ऐसा साधिकार राज्य प्रदान कर दे कि वैसा राज्य मेरे सिवाय किसी के पास न हो, तो फिर संतान की आवश्यकता ही नहीं रहेगी यह दुआ भी अल्लाह के धर्म के प्रभुत्व के लिये ही थी।

[2]अर्थात हमने सुलैमान की यह प्रार्थना सुन ली तथा ऐसा राज्य प्रदान किया कि वायु भी उनके अधीन थी। यहाँ वायु को कोमलता (धीमीगति) से चलती बताया, जबकि सूर: अम्बिया आयत संख्या ८१ में उसे तीव्र तथा तेज़ कहा। इसका अभिप्राय यह है कि वायु की स्वाभाविक गति तीव्र है किन्तु सुलैमान के लिए उसे धीमी कर दिया गया अथवा आवश्यकतानुसार वह कभी तेज़ होती कभी धीमी जैसे सुलैमान चाहते। (फ़तहुल क़दीर)

[3]जिन्नों में जो उद्दंड तथा काफ़िर होते उन्हें बेड़ियों में जकड़ दिया जाता ताकि वह अपनी उद्दण्डता तथा कुफ़्र के कारण अवज्ञा न कर सकें।

[4]अर्थात तेरी विनयानुसार हम ने तुझे महान राज्य प्रदान कर दिया। अब इन्सानों में से जिसे तू चाहे दे जिसे न चाहे न दे, तुझसे हम हिसाब भी नहीं लेंगे।

[5]अर्थात सांसारिक मान-मर्यादा प्रदान करने के उपरान्त परलोक में भी आदरणीय सुलैमान को विशेष निकटता एवं विशेष स्थान प्राप्त होगा।

وَاذْكُرْ عَبْدَنَا أَيُّوبَ إِذْ نَادَىٰ رَبَّهُ أَنِّي مَسَّنِيَ الشَّيْطَانُ بِنُصْبٍ وَعَذَابٍ ﴿٤١﴾

(४१) तथा हमारे बन्दे अय्यूब की (भी) चर्चा कर जबकि उसने अपने प्रभु को पुकारा कि मुझे शैतान ने कष्ट एवं दुख पहुँचाया है ।[1]

ارْكُضْ بِرِجْلِكَ ۖ هَٰذَا مُغْتَسَلٌ بَارِدٌ وَشَرَابٌ ﴿٤٢﴾

(४२) अपना पैर मारो, यह स्नान का शीतल एवं पीने का पानी है ।[2]

وَوَهَبْنَا لَهُ أَهْلَهُ وَمِثْلَهُم مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنَّا وَذِكْرَىٰ لِأُولِي الْأَلْبَابِ ﴿٤٣﴾

(४३) तथा हमने उसे उसका पूरा परिवार प्रदान किया बल्कि उतना ही और भी उसी के साथ अपनी विशेष कृपा से[3] तथा बुद्धिमानों की शिक्षा के लिए ।[4]

---

[1]आदरणीय अय्यूब (अलैहिस्सलाम) का रोग तथा उसमें उनका धैर्य विख्यात है, जिसके अनुसार अल्लाह तआला ने परिवार तथा माल का विनाश किया एवं रोग द्वारा उनकी परीक्षा ली जिसमें वह कई वर्ष ग्रस्त रहे, यहाँ तक कि मात्र एक पत्नी साथ रह गई जो प्रातः एवं संध्या उनकी सेवा भी करती तथा कहीं काम काज करके आवश्यकता भर उनकी जीविका (आहार) का प्रबन्ध भी करती । यहाँ पर अनेक व्याख्याओं का वर्णन मिलता है किन्तु इसमें से कितना कुछ सहीह है तथा कितना नहीं, उसके जानने का कोई विश्वस्त सूत्र नहीं । نُصْب से शारीरिक दुख तथा عذاب से आर्थिक परीक्षा अभिप्राय है । इसको शैतान से सम्बन्धित किया जबकि सब कुछ करने वाला अल्लाह ही है, क्योंकि संभव है कि शैतान के संसय ही किसी ऐसे कर्म का कारण बने हों, जिस पर यह परीक्षा आई अथवा फिर आदर स्वरूप भलाई को अल्लाह की ओर तथा बुराई को शैतान से सम्बन्धित किया जाता है ।

[2]अल्लाह तआला ने अय्यूब की प्रार्थना स्वीकार की तथा उनसे कहा कि भूमि पर पाँव मारो, जिससे एक जलस्रोत प्रवाहित हो गया । इसका जल पीने से आन्तिक रोग तथा स्नान करने से बाह्य रोग दूर हो गये । कुछ कहते हैं कि दो जल स्रोत थे, एक से स्नान किया तथा दूसरे से जल पिया । किन्तु क़ुरआन के शब्द से प्रथम कथन का समर्थन होता है, अर्थात एक ही जलस्रोत था ।

[3]कुछ कहते हैं कि पहला परिवार जो परीक्षा के स्वरूप नष्ट कर दिया गया था, उसे जिन्दा कर दिया गया और उसके समतुल्य एवं अधिक परिवार प्रदान कर दिया गया । लेकिन ये बात किसी मुसतनद ज़रिये (प्रमाणिक सूत्रों) से साबित नहीं है । ज़्यादा सहीह बात यही मालूम होती है कि अल्लाह महान ने पहले से अधिक सम्पति एव सन्तान से उन्हें पुरस्कृत किया जो पहले से दोगुना था ।

[4]अर्थात हमने अय्यूब को यह सब कुछ फिर से दिया तो अपनी विशेष दया का प्रदर्शन करने के सिवाय इसका दूसरा उद्देश्य यह था कि बुद्धिमान लोग इससे शिक्षा लें तथा वे

وَخُذْ بِيَدِكَ ضِغْثًا فَاضْرِبْ بِّهٖ وَلَا تَحْنَثْ ؕ اِنَّا وَجَدْنٰهُ صَابِرًا ؕ نِعْمَ الْعَبْدُ ؕ اِنَّهٗۤ اَوَّابٌ ﴿۴۴﴾

(४४) तथा अपने हाथ में तीलियों की एक झाड़ लेकर मार दे तथा सौगन्ध भंग न कर,[1] सत्य तो यह है कि हमने उसे अत्यन्त धैर्यवान भक्त पाया, वह अत्यन्त सदाचारी भक्त था, तथा बड़ा ही ध्यान करने वाला।

وَاذْكُرْ عِبٰدَنَاۤ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ اُولِي الْاَيْدِيْ وَالْاَبْصَارِ ﴿۴۵﴾

(४५) तथा हमारे भक्तों इब्राहीम, इसहाक़ एवं याक़ूब का भी (लोगों से) वर्णन करो जो हाथों एवं आँखों वाले थे।[2]

اِنَّاۤ اَخْلَصْنٰهُمْ بِخَالِصَةٍ ذِكْرَى الدَّارِ ﴿۴۶﴾

(४६) हमने उन्हें एक विशेष बात अर्थात आख़िरत की याद के साथ विशेषरूप से सम्बन्धित कर दिया था।[3]

भी परीक्षा एवं दुखों में इसी प्रकार धैर्य धारण करें, जिस प्रकार अय्यूब (अलैहिस्सलाम) ने किया।

[1]रोग के दिनों में सेविका पत्नी से किसी बात पर खिन्न होकर आदरणीय अय्यूब ने उसे सौ कोड़े मारने की क़सम खाली थी। स्वस्थ होने के बाद अल्लाह तआला (परमेश्वर) ने कहा कि सौ तिंकों के झाडू से एक बार उसे मार दे, तेरी कसम पूरी हो जायेगी। इस विषय में धर्मज्ञानियों का मतभेद है कि यह सुविधा मात्र अय्यूब के लिये विशेष है अथवा कोई अन्य व्यक्ति भी इसी प्रकार सौ कोड़ों की जगह सौ तिन्कों की झाडू मारकर कसम भंग करने से बच सकता है ? कुछ प्रथम मत को मानते हैं तथा कुछ कहते हैं कि यदि कड़ी मार मारने की प्रतिज्ञा न की हो तो इस प्रकार किया जा सकता है (फ़तहुल क़दीर)। एक हदीस से ज्ञात होता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी एक लाचार निर्बल व्याभिचारी को सौ कोड़ों की जगह सौ तिनकों की झाडू मारकर दण्ड दिया। (मुसनद अहमद ५।२२२, इब्ने माजा, बाबुल कबीर वल मरीज़ यजिबु अलैहिल हद्द, इसे अलबानी ने सहीह कहा) जिससे विशेष अवस्था में इसका औचित्य सिद्ध होता है।

[2]अर्थात अल्लाह की वंदना एवम् धर्म के समर्थन में बड़े बलवान एवं धर्म तथा ज्ञान बोध में प्रमुख थे। कुछ लोग कहते हैं कि यह ایدی، نِعَمٌ के अर्थ में है, अर्थात यह वह लोग जिन पर अल्लाह का विशेष अनुग्रह तथा उपकार हुआ अथवा यह लोगों पर उपकार करने वाले थे।

[3]अर्थात हमने उनको आख़िरत की याद के लिये चुन लिया था, अर्थात आख़िरत हर समय उनके ध्यान में रहती थी जो अल्लाह की एक विशाल कृपा तथा संयम एवं सदाचार का आधार है।

وَإِنَّهُمْ عِندَنَا لَمِنَ الْمُصْطَفَيْنَ الْأَخْيَارِ ﴿٤٧﴾

(४७) तथा यह सभी हमारे निकट चुने हुए एवं सर्वोत्तम लोगों में थे।

وَاذْكُرْ إِسْمَاعِيلَ وَالْيَسَعَ وَذَا الْكِفْلِ وَكُلٌّ مِّنَ الْأَخْيَارِ ﴿٤٨﴾

(४८) तथा इस्माईल, यसअ एवं ज़ुलकिफ़्ल का भी वर्णन कीजिए, यह सब श्रेष्ठतम लोग थे।[1]

هَٰذَا ذِكْرٌ ۚ وَإِنَّ لِلْمُتَّقِينَ لَحُسْنَ مَآبٍ ﴿٤٩﴾

(४९) यह शिक्षा है, तथा विश्वास करो कि सदाचारियों के लिए सर्वोत्तम स्थान है।

جَنَّاتِ عَدْنٍ مُّفَتَّحَةً لَّهُمُ الْأَبْوَابُ ﴿٥٠﴾

(५०) अर्थात स्थाई स्वर्ग जिनके द्वार उनके लिए खुले हुए हैं।

مُتَّكِئِينَ فِيهَا يَدْعُونَ فِيهَا بِفَاكِهَةٍ كَثِيرَةٍ وَشَرَابٍ ﴿٥١﴾

(५१) जिनमें (चैन से) तकिया लगाये बैठे हुए नाना प्रकार के मेवे (फल) तथा विभिन्न प्रकार के पेय पदार्थों की माँग कर रहे हैं।

وَعِندَهُمْ قَاصِرَاتُ الطَّرْفِ أَتْرَابٌ ﴿٥٢﴾

(५२) तथा उनके पास नीची निगाहों वाली समान आयु वाली हूरें होंगी।[2]

هَٰذَا مَا تُوعَدُونَ لِيَوْمِ الْحِسَابِ ﴿٥٣﴾

(५३) यह है जिसका वचन तुमसे हिसाब के दिन के लिए किया जाता था।

إِنَّ هَٰذَا لَرِزْقُنَا مَا لَهُ مِن نَّفَادٍ ﴿٥٤﴾

(५४) निश्चय ही यह जीविकायें हमारा (विशेष) उपहार हैं जिनका कभी अन्त ही नहीं।[3]

---

[1]यसअ आदरणीय इलियास के जानशीन (उत्तराधिकारी) थे। ال व्यक्तिवाचक है तथा यह अजमी नाम है अरबी नहीं हैं। ज़ुलकिफ़्ल के लिए सूर: अम्बिया आयत नम्बर ८५ का भाष्य देखिये। أخيار यह خَيِّرٌ خَيْرٌ का बहुवचन है जैसे مَيِّتٌ का बहुवचन أموات है।

[2]अर्थात जिनकी निगाहें अपने पति से आगे नहीं जायेंगी। أتراب यह تِرْب का बहुवचन है। समायु अथवा निरन्तर शोभा एवं सौन्दर्य से सुशोभित (फ़तहुल क़दीर)।

[3] رزق (जीविका) का अर्थ वरदान है, तथा هذا (यह) से प्रत्येक प्रकार की उपरोक्त अनुकम्पायें तथा वह मान-सम्मान अभिप्राय है जिनके स्वर्गवासी आन्नदित होंगे। نفاد का अर्थ अन्त तथा अवरोध है। यह अनुकम्पायें भी अनन्त तथा आदर सम्मान भी स्थाई।

هَٰذَا ۚ وَإِنَّ لِلطَّٰغِينَ لَشَرَّ مَـَٔابٍ ﴿٥٥﴾

(५५) यह तो हुआ बदला,[1] (याद रखो कि) उद्दण्डों के लिए अत्यन्त बुरा स्थान है।[2]

جَهَنَّمَ يَصْلَوْنَهَا فَبِئْسَ ٱلْمِهَادُ ﴿٥٦﴾

(५६) नरक है जिसमें वे जायेंगे, (आह !) कैसा बुरा बिस्तर है।

هَٰذَا فَلْيَذُوقُوهُ حَمِيمٌ وَغَسَّاقٌ ﴿٥٧﴾

(५७) यह है, तो उसे चखें, गर्म पानी तथा पीप।[3]

وَءَاخَرُ مِن شَكْلِهِۦٓ أَزْوَٰجٌ ﴿٥٨﴾

(५८) तथा कुछ अन्य प्रकार की विभिन्न यातनायें।[4]

هَٰذَا فَوْجٌ مُّقْتَحِمٌ مَّعَكُمْ ۖ

(५९) यह एक समुदाय है जो तुम्हारे संग (अग्नि में) जाने वाला है,[5] उनके लिए कोई

---

[1] هـذا (यह) लुप्त विषय का विधेय है, अर्थात الأمرهذا अथवा هذا का विधेय लुप्त है, अर्थात هـذا كما ذُكِر अर्थात उपरोक्त सत्कारियों का मामला हुआ। इसके पश्चात दुराचारियों के दुष्परिणाम की चर्चा की जा रही है।

[2] طَاغِين जिन्होंने अल्लाह के आदेशों की अवहेलना की तथा रसूलों को झुठलाया। يَصْلُون का अर्थ है يَدْخُلون अर्थात प्रवेश करेंगे।

[3] حميمٌ و غسّاقٌ यह هذا (यह) विधेय है, अर्थात هذا حميمٌ و غسّاق فَلْيذو قوه यह है गर्म पानी तथा पीव तो इसे चखो। حميـم गर्म, खौलता हुआ जल। जो उनकी आँतों को काट डालेगा। غَسّاقٌ नरकवासियों की खालों से जो पीव तथा घृणित खून निकलेगा, अथवा अति शीतल जल जिसका पीना अत्यन्त कठिन होगा।

[4] شكلِه उस जैसे, أزواجٌ भिन्न प्रकार के अर्थात حميم و غساق के सदृश और भी बहुत प्रकार की यातनायें होंगी।

[5] नरक के द्वारों पर खड़े फ़रिश्ते कुफ़्र के प्रमुखों एवं कुमार्ग के प्रधानों से कहेंगे जब अनुयायी प्रकार के लोग नरक में जायेंगे, अथवा कुफ़्र एवं पथभ्रष्टता के प्रमुख परस्पर यह बात अनुयायियों की ओर संकेत करके कहेंगे।

لَا مَرْحَبًا بِهِمْ ۚ إِنَّهُمْ صَالُوا النَّارِ ﴿٥٩﴾

स्वागत नहीं ।[1] यही तो नरक में जाने वाले हैं ।[2]

قَالُوا بَلْ أَنتُمْ لَا مَرْحَبًا بِكُمْ ۖ أَنتُمْ قَدَّمْتُمُوهُ لَنَا ۖ فَبِئْسَ الْقَرَارُ ﴿٦٠﴾

(६०) (वे) कहेंगे कि बल्कि तुम ही हो जिनके लिए कोई स्वागत नहीं, तुम ही ने तो इसे पूर्व ही से हमारे समक्ष ला रखा था,[3] तो रहने का बड़ा बुरा स्थान है ।

قَالُوا رَبَّنَا مَن قَدَّمَ لَنَا هَٰذَا فَزِدْهُ عَذَابًا ضِعْفًا فِي النَّارِ ﴿٦١﴾

(६१) (वे) कहेंगे कि हे हमारे प्रभु जिसने उसे (कुफ़्र की रीति) हमारे लिए सर्वप्रथम निकाली हो ।[4] उसके पक्ष में नरक का दोगुना दण्ड कर दे ।[5]

وَقَالُوا مَا لَنَا لَا نَرَىٰ رِجَالًا كُنَّا نَعُدُّهُم مِّنَ الْأَشْرَارِ ﴿٦٢﴾

(६२) तथा (नरकवासी) कहेंगे कि क्या बात है कि वह लोग हमें दिखाई नहीं देते, जिनकी गणना हम बुरे लोगों में करते थे ।[6]

---

[1]यह अगुवा नरक में जाने वाले काफ़िरों के लिए फ़रिश्तों के उत्तर में परस्पर कहेंगे । رَحْبٌ का अर्थ विस्तार एवं फैलाव के हैं । مَرْحَبًا यह स्वागत का शब्द है जो आगन्तुक के लिए अभिनन्दन के समय कहे जाते हैं । لا مَرْحَبًا इसके विपरीत है ।

[2]यह उनका स्वागत न करने का कारण है । अर्थात उनके तथा हमारे बीच अन्तर का कोई कारण नहीं है । यह भी हमारी तरह नरक में प्रवेश कर रहे हैं, तथा जिस प्रकार हम दण्ड के पात्र बने हैं यह भी नरक की यातना के अधिकारी हुए हैं ।

[3]अर्थात तुम ही कुफ़्र एवं पथभ्रष्टता का मार्ग हमारे आगे सुशोभित करके प्रस्तुत करते थे, यूँ तुम ही तो नरक की यातना के अनुगामी हो यह अनुगामी अपने प्रमुखों को कहेंगे ।

[4]अर्थात जिन्होंने हमें कुफ़्र का आमंत्रण दिया तथा उसे सत्य एवं सही बताया अथवा जिन्होंने हमें कुफ़्र की ओर बुलाकर यह दण्ड हमारे लिए आगे भेजा ।

[5]यह वही बात है जिसे अन्य कई स्थानों पर वर्णन किया गया है, जैसे सूर: *अल-आराफ़-३८, अल-अहज़ाब-६८* में ।

[6] أَشْرَار (दुष्टों) से अभिप्राय दरिद्र मुसलमान हैं, जैसे अम्मार, ख़ब्बाब, सुहैब, बिलाल, सलमान (رضي الله عنهم) इत्यादि । उन्हें मक्का के प्रमुख दुष्टता से 'बुरे लोग' कहते थे ।

(६३) क्या हमने ही उनका उपहास बना रखा था[1] अथवा हमारी आँखे उनसे बहक गई हैं ।[2]	اَتَّخَذْنٰهُمْ سِخْرِيًّا اَمْ زَاغَتْ عَنْهُمُ الْاَبْصَارُ ﴿٦٣﴾
(६४) विश्वास करो कि नरकवासियों का यह झगड़ा अवश्य ही होगा ।[3]	اِنَّ ذٰلِكَ لَحَقٌّ تَخَاصُمُ اَهْلِ النَّارِ ﴿٦٤﴾
(६५) कह दीजिए कि मैं तो केवल सावधान कर देने वाला हूँ [4] तथा सिवाय एक अल्लाह प्रभावशाली के अन्य कोई इबादत (उपासना) के योग्य नहीं ।	قُلْ اِنَّمَآ اَنَا مُنْذِرٌ ۖ وَّمَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّا اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿٦٥﴾
(६६) जो प्रभु है आकाशों का तथा धरती का तथा जो कुछ उनके मध्य है, वह प्रभुत्वशाली (महान) एवं बड़ा क्षमा करने वाला है ।	رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الْعَزِيْزُ الْغَفَّارُ ﴿٦٦﴾
(६७) (आप) कह दीजिए कि यह बहुत बड़ी सूचना है ।[5]	قُلْ هُوَ نَبَؤٌا عَظِيْمٌ ﴿٦٧﴾
(६८) जिससे तुम मुँह फेर रहे हो ।	اَنْتُمْ عَنْهُ مُعْرِضُوْنَ ﴿٦٨﴾

अब भी दुराचारी सत्यवादियों एवं सदाचारियों को कट्टरपंथी, आतंकवादी एवं उग्रवादी जैसे उप नाम देते हैं ।

[1]अर्थात जगत में जहाँ हम त्रुटि पर थे ।

[2]अथवा वे भी हमारे साथ यहीं कहीं हैं, हमारी आँखें उन्हें देख नहीं पा रही हैं ?

[3]अर्थात आपस में इनकी तकरार और एक-दूसरे की कटु आलोचना करना एक ऐसा सत्य है जिसमें विवाद नहीं होगा ।

[4]अर्थात तुम जो अनुमान करते हो वह मैं नहीं हूँ अपितु तुम्हें अल्लाह की यातना तथा प्रकोप से सावधान करने वाला हूँ ।

[5]अर्थात मैं तुम्हें परलोक की जिस यातना से सावधान कर रहा हूँ तथा तौहीद (एकेश्वरवाद) की दावत दे रहा हूँ यह बड़ी सूचना है । इससे विमुखता तथा निश्चिन्तता न करो अपितु इस पर ध्यान देने तथा गंभीरता से सोचने की आवश्यकता है ।

مَا كَانَ لِيَ مِنْ عِلْمٍ بِالْمَلَإِ الْأَعْلَىٰ إِذْ يَخْتَصِمُونَ ﴿٦٩﴾

(६९) मुझे उन उच्च पद वाले फ़रिश्तों (की वार्तालाप) का तनिक भी ज्ञान ही नहीं जबकि वे वाद-विवाद कर रहे थे।[1]

إِن يُوحَىٰ إِلَيَّ إِلَّا أَنَّمَا أَنَا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٧٠﴾

(७०) मेरी ओर मात्र यही प्रकाशना की जाती है कि मैं तो स्पष्टरूप से सावधान कर देने वाला हूँ।[2]

إِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَائِكَةِ إِنِّي خَالِقٌ بَشَرًا مِّن طِينٍ ﴿٧١﴾

(७१) जबकि आपके प्रभु ने फ़रिश्तों से कहा[3] कि मैं मिट्टी से मनुष्य को बनाने वाला हूँ।[4]

فَإِذَا سَوَّيْتُهُ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِن رُّوحِي

(७२) तो जब मैं उसे ठीक-ठाक कर लूँ[5] तथा उसमें अपनी आत्मा फूँक दूँ[6] तो तुम

---

[1] ملأ أعلى से अभिप्राय फ़रिश्ते हैं, अर्थात वे किस बात पर वाद-विवाद कर रहे हैं मैं नहीं जानता ? संभव है इस वाद-विवाद से अभिप्राय वह वार्तालाप है जो आदम की सृजना के समय हुई जैसा कि आगे इसकी चर्चा आ रही है।

[2]अर्थात मेरा दायित्व यही है कि मैं वह अनिवार्य एवं उचित कर्म तुम्हें बता दूँ जिनके अपनाने से तुम अल्लाह के प्रकोप से बच जाओगे, तथा उन अवैध एवं पाप के कर्मों का स्पष्टीकरण कर दूँ जिनसे बचकर तुम अल्लाह की प्रसन्नता के अन्यथा उसके क्रोध एवं प्रकोप के पात्र बनोगे। यही वह चेतावनी है जिसकी प्रकाशना (वह्यी) मेरी ओर की जाती है।

[3]यह कथा इससे पूर्व *सूरः बक़रः*, *सूरः आराफ़*, *सूरः हिज्र*, *सूरः बनी इस्राईल* तथा *सूरः कहफ़* में वर्णित हो चुकी है। अब यहाँ भी संक्षेप में वर्णन किया जा रहा है।

[4]अर्थात एक शरीर मानव जाति से बनाने जा रहा हूँ। मनुष्य को بَشَر (बशर) उसके धरती से संलग्न होने के कारण कहा। अर्थात धरती ही से उस सबका संबन्ध है तथा वह सब कुछ इसी धरती पर करता है, अथवा इस कारण कि उसकी त्वचा स्पष्ट है अर्थात उसका शरीर अथवा मुख स्पष्ट है।

[5]अर्थात उसे मानवीय रूप में ढाल लूँ तथा उसके सभी अंग सही एवं बराबर कर लूँ।

[6]अर्थात वह आत्मा जिसका मैं स्वामी हूँ, मेरे सिवाय इसका कोई अधिकार नहीं रखता तथा जिसके फूंकते ही यह माटी का पुतला जीवन गति एवं शक्ति से युक्त हो जायेगा

सब उसके समक्ष सजदे में गिर जाना ।[1]	فَقَعُوا لَهُ سَاجِدِينَ ﴿٧٢﴾
(७३) तो सभी फ़रिश्तों ने सजदा किया ।[2]	فَسَجَدَ الْمَلَائِكَةُ كُلُّهُمْ أَجْمَعُونَ ﴿٧٣﴾
(७४) परन्तु इब्लीस ने (नहीं किया,) उसने अहंकार किया[3] तथा वह था काफ़िरों में से ।[4]	إِلَّا إِبْلِيسَ اسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكَافِرِينَ ﴿٧٤﴾
(७५) (अल्लाह तआला ने) कहा कि हे इब्लीस तुझे उसको सजदा करने से किस वस्तु ने रोका जिसे मैंने अपने हाथों से	قَالَ يَا إِبْلِيسُ مَا مَنَعَكَ أَنْ تَسْجُدَ لِمَا خَلَقْتُ بِيَدَيَّ ۖ أَسْتَكْبَرْتَ

मानव जाति की श्रेष्ठता एवं प्रतिष्ठा के लिए यही बहुत है कि उसमें वह आत्मा फूँकी गई है जिसे अल्लाह ने अपनी आत्मा कहा है ।

[1]यह सजदा (नत्मस्तक होना) धन्यवाद अथवा सम्मान का सजदा है उपासना का सजदा नहीं । यह सम्मान का सजदा पहले उचित था । इसीलिए अल्लाह ने आदम के लिए फ़रिश्तों को इसका आदेश किया । अब इस्लाम में सम्मान का सजदा भी किसी के लिए उचित नहीं । हदीस में आता है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, यदि यह वैध होता तो मैं पत्नी को आदेश देता कि अपने पति को सजदा करे । (मिश्कात, किताबुन्निकाह, बाबु इश्रतिन्निसाए ससंदर्भ तिर्मिज़ी, अलबानी ने कहा कि अपने साक्षियों के कारण यह हदीस सही है) ।

[2]यह मनुष्य की दूसरी प्रतिष्ठा है कि उसे फ़रिश्तों से सजदा कराया, अर्थात फ़रिश्तों जैसी पवित्र सृष्टि ने उसे सम्मान स्वरूप सजदा किया । كُلُّهم से विदित होता है कि एक भी फ़रिश्ता सजदा करने में पीछे नहीं रहा । उसके बाद أجمعون कहकर यह स्पष्ट कर दिया कि सजदा भी सबने एक ही साथ किया, विभिन्न समय में नहीं । कुछ कहते हैं कि यह बल पर बल सामान्यता में अतिश्योक्ति के लिए है ।

[3]यदि इवलीस को फ़रिश्तों के गुणों से युक्त माना जाये तो यह अनिबंध निरन्तर होगा, अर्थात इवलीस सजदा के इस आदेश में सम्मिलित होगा, अन्य स्थिति में यह अनिबंध विच्छेद के लिए होगा अर्थात वह इस आदेश में सम्मिलित नहीं था । किन्तु आकाश पर रहने के कारण उसे भी आदेश दिया गया परन्तु उसने घंमड के कारण नकार दिया ।

[4] كان अर्थ में है صار के, अर्थात अल्लाह के आदेश के विरोध तथा उसकी आज्ञापालन से अहंकार करने के कारण वह काफ़िर हो गया अथवा अल्लाह के ज्ञान में वह काफ़िर था ।

أَمْ كُنتَ مِنَ الْعَالِينَ ﴿٧٥﴾

बनाया ।[1] क्या तू कुछ अहंकार में आ गया है अथवा तू उच्च पद वालों में से है ?

قَالَ أَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ خَلَقْتَنِي مِن نَّارٍ وَخَلَقْتَهُ مِن طِينٍ ﴿٧٦﴾

(७६) (उसने) उत्तर दिया कि मैं इससे श्रेष्ठ हूँ, तूने मुझे अग्नि से बनाया तथा इसे मिट्टी से बनाया है ।[2]

قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَجِيمٌ ﴿٧٧﴾

(७७) कहा कि तू यहाँ से निकल जा, तू तिरस्कृत हुआ ।

وَإِنَّ عَلَيْكَ لَعْنَتِي إِلَىٰ يَوْمِ الدِّينِ ﴿٧٨﴾

(७८) तथा तुझ पर क़ियामत के दिन तक मेरा धिक्कार एवं तिरस्कार है ।

قَالَ رَبِّ فَأَنظِرْنِي إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ ﴿٧٩﴾

(७९) कहने लगा कि हे मेरे प्रभु ! मुझे लोगों के उठ खड़े होने के दिन तक अवसर प्रदान कर ।

قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنظَرِينَ ﴿٨٠﴾

(८०) (अल्लाह तआला ने) कहा कि तू अवसर प्राप्त करने वालों में से है ।

إِلَىٰ يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُومِ ﴿٨١﴾

(८१) निर्धारित समय के दिन तक ।

قَالَ فَبِعِزَّتِكَ لَأُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٨٢﴾

(८२) कहने लगा, फिर तो तेरी महिमा की सौगन्ध ! मैं इन सबको अवश्य भटकाऊँगा ।

---

[1]यह भी इंसान की प्रतिष्ठा तथा बड़ाई को व्यक्त करने ही के लिए फ़रमाया अन्यथा प्रत्येक वस्तु का विधाता अल्लाह ही है ।

[2]अर्थात शैतान ने अपने भ्रम में यह समझा कि आग का तत्व मिट्टी के तत्व से उत्तम है । हालांकि यह सभी तत्व समजातिय अथवा समीपवर्ती हैं, इनमें से किसी को दूसरे पर प्रधानता किसी अस्थायी (वाह्य कारण) से ही प्राप्त होता है तथा यह कारण आग के सापेक्ष मिट्टी के भाग में आया है, कि अल्लाह ने उसी से आदम को अपने हाथों से बनाया, फिर उसमें अपनी आत्मा फूँकी, इस कारण मिट्टी ही को आग की अपेक्षा प्रतिष्ठा एवं प्रधानता प्राप्त है । इसके सिवाय आग का काम जलाकर राख बना देना है जबकि मिट्टी उसके विपरीत अनेक प्रकार की उपज का उदगम है ।

(८३) सिवाय तेरे उन भक्तों के जो चुने हुए [एवं प्रिय (शुद्ध)] हों।	إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِينَ ﴿٨٣﴾
(८४) कहा कि सत्य तो यह है, तथा मैं सत्य ही कहा करता हूँ।	قَالَ فَالْحَقُّ وَالْحَقَّ أَقُولُ ﴿٨٤﴾
(८५) कि तुझसे तथा तेरे सभी अनुगामियों से मैं (भी) नरक को भर दूँगा।	لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكَ وَمِمَّنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٨٥﴾
(८६) कह दीजिए कि मैं इस पर तुमसे कोई बदला नहीं माँगता [1] तथा न मैं बनावट करने वालों में से हूँ।[2]	قُلْ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ وَمَا أَنَا مِنَ الْمُتَكَلِّفِينَ ﴿٨٦﴾

---

[1]अर्थात इस आमंत्रण तथा उपदेश से मेरा उद्देश्य मात्र अल्लाह की आज्ञा का पालन है, दुनिया कमाना नहीं।

[2]अर्थात अपनी ओर से गढ़कर अल्लाह से ऐसी बात संबन्धित कर दूँ जो उसने न कही हो अथवा मैं तुम्हें ऐसी बात का आमन्त्रण दूँ जिसका आदेश अल्लाह ने मुझे न दिया हो, अपितु कुछ कम-अधिक किये बिना मैं अल्लाह का आदेश तुम तक पहुँचा रहा हूँ। नबी के सहचर अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद कहते थे कि जिसको किसी बात का ज्ञान न हो, उसके विषय में कह देना चाहिए कि الله أعلم। यह कहना भी ज्ञान ही है, इसलिए कि अल्लाह ने अपने पैग़म्बर से कहा, कह दीजिए وما آنا من المتكلفين (इब्ने कसीर)। इसके सिवाय इससे साधारण जीवन व्यवहार में भी आडंबर तथा दिखावे से बचने का आदेश विदित होता है। जैसे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया نُهينا عن التكلف (सहीह बुख़ारी नम्बर ७२९३) "हमें आडंबर से रोक दिया गया है।" आदरणीय सलमान कहते हैं نهانا رسول الله صلى الله عليه وسلم أن نتكلف للضيف (सहीहुल जामेईस्सग़ीर लिल अलबानी ९८७१) "हमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अतिथि के लिए आडंबर करने से रोक दिया।" इसी से विदित हुआ कि वस्त्र, आहार, आवास तथा अन्य विषयों में बनावट जो वर्तमान युग में जीवन स्तर ऊँचा करने के नाम पर धनवानों का आचरण तथा ढंग बन चुका है, इस्लामी शिक्षाओं के प्रतिकूल है। इस्लाम में सादगी तथा साधारणता अपनाने की शिक्षा का प्रोत्साहन है।

(८७) यह तो सभी जगतवालों के लिए सर्वथा शिक्षाप्रद एवं सदुपदेश है ।[1]

إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعَٰلَمِينَ ﴿٨٧﴾

(८८) वस्तुत: तुम इसकी वास्तविकता को कुछ ही समय के पश्चात (सही ढंग से) जान लोगे ।[2]

وَلَتَعْلَمُنَّ نَبَأَهُۥ بَعْدَ حِينٍۭ ﴿٨٨﴾

सूरतुज़्ज़ुमर-३९

سُورَةُ الزُّمَرِ

सूर: ज़ुमर* मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें पचहत्तर आयतें एवं आठ रूकूअ हैं ।

अल्लाह तआला के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त कृपालु एवं अत्यन्त दयालु है ।

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

(१) इस किताब का अवतरित करना अल्लाह (तआला) प्रभावशाली एवं हिक्मत वाले की ओर से है ।

تَنزِيلُ ٱلْكِتَٰبِ مِنَ ٱللَّهِ ٱلْعَزِيزِ ٱلْحَكِيمِ ﴿١﴾

(२) नि:सन्देह हमने इस किताब को सत्य के साथ आपकी ओर अवतरित किया है[3] तो

إِنَّآ أَنزَلْنَآ إِلَيْكَ ٱلْكِتَٰبَ بِٱلْحَقِّ

---

[1]अर्थात यह कुरआन अथवा प्रकाशना (वह्यी) अथवा वह आमंत्रण जो मैं प्रस्तुत कर रहा हूँ, सर्वजगत के इंसानों तथा जिन्नों के लिए सदुपदेश है, प्रतिबंध यह है कि कोई इससे शिक्षा ग्रहण करने का प्रयत्न करे ।

[2]अर्थात क़ुरआन ने जिन चीज़ों को वर्णन किया है, जो वादे तथा चेतावनी दिया है, उनका यथार्थ तथा सत्यता शीघ्र ही तुम्हारे आगे आ जायेगा । जैसाकि इसकी सत्यता बद्र के दिन सामने आयी, मक्का विजय के दिन आयी अथवा फिर मौत के समय तो सभी के आगे स्पष्ट जाती है ।

व्याख्या सूर: अज़्ज़ुमर : हदीस में आता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हर रात *सूर: बनी इस्राईल* तथा *सूर: ज़ुमर* का पाठ करते थे (सहीह तिर्मिज़ी में इसको अलबानी ने सहीह कहा है) ।

[3]अर्थात इसमें तौहीद (अद्वैत) एवं रिसालत (दूतत्व), मआद (पुर्नजीवन) तथा आदेशों एवं अनिवार्य कर्तव्यों को जो साबित किया गया है, वह सब सत्य है तथा इन्हीं के मानने तथा पालन करने में मानव की मुक्ति है ।

فَاعْبُدِ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّيْنَ ۝

आप केवल अल्लाह ही की इबादत करें उसी के लिए धर्म को शुद्ध करते हुए ।[1]

اَلَا لِلّٰهِ الدِّيْنُ الْخَالِصُ ۭ وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَاۗءَ ۘ مَا نَعْبُدُهُمْ اِلَّا لِيُقَرِّبُوْنَآ اِلَى اللّٰهِ زُلْفٰى ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِيْ مَا هُمْ فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ڛ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ

(३) सावधान ! अल्लाह (तआला) ही के लिए विशुद्ध इबादत करना है,[2] तथा जिन लोगों ने उसके सिवाय संरक्षक बना रखें हैं (तथा कहते हैं) कि हम इनकी इबादत केवल इसलिए करते हैं कि यह (महात्मा) अल्लाह के समीप हमको पहुँचा दें,[3] ये लोग जिस

---

[1]दीन دین का अर्थ यहाँ इबादत (आराधना) तथा आज्ञापालन है तथा إخلاص का अभिप्राय मात्र अल्लाह की प्रसन्नता के लिए पुण्य का कर्म करना है। आयत नीयत (संकल्प) की अनिवार्यता तथा उसकी शुद्धता के लिए प्रमाण है। हदीस में भी संकल्प की विशुद्धता का महत्व यह कह कर स्पष्ट किया गया है कि «إِنَّمَا الأَعْمَالُ بِالنِّيَّاتِ» "कर्मों की निर्भरता ईरादों पर है" अर्थात जो अच्छा कर्म अल्लाह की प्रसन्नता के लिये किया जाये। (प्रतिबंध यह है कि वह सुन्नत के अनुकूल हो) वह स्वीकार्य होगा तथा जिस कर्म में किसी अन्य भावना की मिलावट होगी वह अस्वीकार्य होगा।

[2]यह उसी इबादत की शुद्धता पर बल दिया गया है जिसका आदेश इसके पूर्व की आयत में है कि इबादत तथा अनुपालन एक मात्र अल्लाह ही का अधिकार है, न उसकी उपासना में किसी को साझी बनाना वैध (जायेज़) है, न अनुपालन ही का उसके सिवा कोई अधिकारी है। हाँ, रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुपालन को स्वयं अल्लाह ही ने अपना अनुपालन कहा है, अतः रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आज्ञापालन अल्लाह ही का आज्ञापालन है किसी अन्य का नहीं। फिर भी इबादत में यह बात भी नहीं। अतः इबादत अल्लाह के सिवाय किसी बड़े से बड़े रसूल की भी वैध नहीं तो कहाँ साधारण व्यक्तियों की, जिनको लोगों ने मनमानी अल्लाह के अधिकारों का मालिक बना रखा है। ﴿مَّآ أَنزَلَ ٱللَّهُ بِهَا مِن سُلْطَٰنٍ﴾ "अल्लाह की ओर से इस पर कोई तर्क नहीं।"

[3]इससे स्पष्ट है कि मक्के के मूर्तिपूजक अल्लाह ही को विधाता, जीविका प्रदान करने वाला तथा विश्व का संचालक मानते थे, फिर दूसरों की इबादत क्यों करते थे ? इसका उत्तर वह यह देते थे जो क़ुरआन ने यहाँ नक़ल (उद्धृत) किया है कि संभवतः उनके द्वारा हमें अल्लाह का सामीप्य प्राप्त हो जाये अथवा अल्लाह के निकट हमारी अभिस्तावना कर दें, जैसे दूसरे स्थान पर फ़रमाया :

مَنْ هُوَ كٰذِبٌ كَفَّارٌ ③

विषय में मतभेद कर रहे हैं उसका (न्यायपूर्ण) निर्णय अल्लाह (तआला) स्वयं कर देगा ।[1] झूठे तथा कृतघ्न (लोगों) को अल्लाह (तआला) मार्ग नहीं दिखाता ।[2]

لَوْ أَرَادَ اللّٰهُ أَنْ يَّتَّخِذَ وَلَدًا لَّاصْطَفٰى مِمَّا يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ۙ سُبْحٰنَهٗ ؕ هُوَ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ④

(४) यदि अल्लाह (तआला) का विचार सन्तान ही का होता तो अपनी सृष्टि में से जिसे चाहता चुन लेता (परन्तु) वह तो पवित्र है[3] वह वही अल्लाह है एक तथा सर्व-शक्तिमान ।

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ يُكَوِّرُ الَّيْلَ عَلَى النَّهَارِ وَيُكَوِّرُ

(५) अत्यन्त उत्तम रूप से उसने आकाशों एवं धरती को बनाया, वह रात को दिन पर तथा दिन को रात पर लपेट देता है ।[4] तथा

﴿ هٰٓؤُلَآءِ شُفَعَآؤُنَا عِنْدَ اللّٰهِ ﴾

"अर्थात ये अल्लाह के निकट हमारे अभिस्तावक हैं ।" (*यूनुस*-१८)

[1]क्योंकि दुनिया में कोई यह मानने को तैयार नहीं कि वह शिर्क कर रहा है अथवा वह सत्य पर नहीं है । क़ियामत (प्रलय) के दिन अल्लाह ही निर्णय करेगा तथा उसके अनुसार प्रतिकार अथवा दण्ड देगा ।

[2]यह झूठ ही है कि इन मिथ्या पूज्यों के द्वारा इनकी पहुँच अल्लाह तक हो जायेगी अथवा यह उनकी सिफ़ारिश करेंगे । तथा अल्लाह को छोड़कर विवश लोगों को पूज्य समझना भी बहुत बड़ी कृतघ्नता है, ऐसे झूठों तथा कृतघ्नों को मार्ग दर्शन कैसे प्राप्त हो सकता है ।

[3]फिर उसकी संतान लड़कियाँ ही क्यों होतीं जैसे कि मूर्तिपूजकों की आस्था थी ? अपितु वह अपनी सृष्टि में से जिसको चाहता वह उसकी संतान होती न कि वह जिनका यह विश्वास कराते हैं, किन्तु वह तो इस दोष से ही पवित्र है । (इब्ने कसीर)

[4] تَكْوِيْر (तकवीर) का अर्थ है, एक चीज़ को दूसरी चीज़ पर लपेटना, रात को दिन पर लपेटने का अर्थ है, रात का दिन को ढाँपना, यहाँ तक की उसका प्रकाश समाप्त हो जाये तथा दिन को रात पर लपेटने का अभिप्राय दिन का रात को ढाँपना है, यहाँ तक कि

ٱلنَّهَارَ عَلَى ٱلَّيْلِ وَسَخَّرَ ٱلشَّمْسَ وَٱلْقَمَرَ ۖ كُلٌّ يَجْرِى لِأَجَلٍ مُّسَمًّى ۗ أَلَا هُوَ ٱلْعَزِيزُ ٱلْغَفَّٰرُ ۝

उसने सूर्य तथा चन्द्रमा को कार्य पर लगा रखा है। प्रत्येक एक निर्धारित अवधि तक चल रहा है, विश्वास करो कि वही शक्तिशाली एवं पापों का क्षमा करने वाला है।

خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَٰحِدَةٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَأَنزَلَ لَكُم مِّنَ ٱلْأَنْعَٰمِ ثَمَٰنِيَةَ أَزْوَٰجٍ ۚ يَخْلُقُكُمْ فِى بُطُونِ أُمَّهَٰتِكُمْ خَلْقًا مِّنۢ بَعْدِ خَلْقٍ فِى ظُلُمَٰتٍ ثَلَٰثٍ ۚ

(६) उसने तुम सबको एक ही प्राण से पैदा किया,[1] फिर उसी से उसका जोड़ा पैदा किया[2] तथा तुम्हारे लिए पशुओं में से आठ जोड़े (नर-मादा) उतारे।[3] वह तुम्हें तुम्हारी माताओं के गर्भों में एक रूप के पश्चात दूसरे रूप में बनाता है।[4] तीन-तीन अंधेरों में,[5] यही

उसका अंधकार समाप्त हो जाये। यह वही अभिप्राय है जो يُغْشِي اللَّيلَ النهار (अल-आराफ़-५४) का है।

[1]अर्थात आदरणीय आदम से जिनको अल्लाह ने अपने हाथ से बनाया था तथा अपनी ओर से उसमें आत्मा फूँकी थी।

[2]अर्थात आदरणीया हव्वा को आदम की बाईं पसली से पैदा किया। यह भी उसका पूर्ण सामर्थ्य है क्योंकि हव्वा के सिवा किसी नारी की पैदाइश किसी मानव की पसली से नहीं हुई। इस प्रकार यह पैदाईश स्वाभाविक रीति के विपरीत तथा अल्लाह के सामर्थ्य के लक्षणों में से है।

[3]यह वही चार प्रकार के पशुओं का वर्णन है, भेड़, बकरी, ऊँट, गाय जो नर-मादा मिलकर आठ हो जाते हैं, जिनकी चर्चा सूर: अनआम आयत १४३ व १४४ में गुज़र चुकी है। أنــزل यह خَلَقَ के अर्थ में है। अथवा एक वर्णन के अनुसार अल्लान ने इन्हें सर्वप्रथम स्वर्ग में पैदा किया फिर उन्हें उतारा। अत: यह إنزال वास्तविक होगा। अथवा أنزَلَ (उतारा) इसलिए कहा गया कि यह पशु चारे के बिना नहीं रह सकते तथा चारे की उपज के लिये पानी अनिवार्य है जो कि आकाश से वर्षा द्वारा उतरता है।

[4]अर्थात माता के गर्भाशय में विभिन्न रूपों से गुज़रता है। पहले वीर्य, फिर जमा रक्त, फिर मांस का टुकड़ा, फिर हड्डियों का ढाँचा, जिसके ऊपर मांस का वस्त्र इन सभी रूपों से गुज़रने के पश्चात पूर्ण मानव तैयार होता है।

[5]एक मां के पेट का अँधेरा, दूसरे गर्भाशय का अंधेरा तथा तीसरा उस झिल्ली अथवा पर्दे का अँधेरा जिसमें वच्चा लिपटा हुआ होता है।

ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ۭ لَآ اِلٰهَ
اِلَّا هُوَ ۚ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ⑥

अल्लाह (तआला) तुम्हारा प्रभु है, उसी के लिए राज्य है, उसके सिवाय कोई उपास्य नहीं, फिर तुम कहाँ भटक रहे हो ?[1]

اِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ
عَنْكُمْ ۣ وَلَا يَرْضٰى لِعِبَادِهِ الْكُفْرَ ۚ
وَاِنْ تَشْكُرُوْا يَرْضَهُ لَكُمْ ۭ
وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ۭ
ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ
بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۭ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ
بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ⑦

(७) यदि तुम कृतघ्नता व्यक्त करो तो (याद रखो कि) अल्लाह (तआला) तुम (सबसे) निस्पृह है।[2] तथा वह अपने बन्दों की कृतघ्नता से प्रसन्न नहीं तथा यदि तुम कृतज्ञता व्यक्त करो तो वह उसे तुम्हारे लिए पसन्द करेगा[3] और कोई किसी का बोझ नहीं उठाता, फिर तुम सबका लौटना तुम्हारे प्रभु ही की ओर है। तुम्हें वह बतला देगा जो तुम करते थे, निश्चय वह दिलों तक की बातों से अवगत है।

وَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ ضُرٌّ
دَعَا رَبَّهٗ مُنِيْبًا اِلَيْهِ ثُمَّ اِذَا خَوَّلَهٗ
نِعْمَةً مِّنْهُ نَسِيَ مَا كَانَ يَدْعُوْٓا
اِلَيْهِ مِنْ قَبْلُ وَجَعَلَ لِلّٰهِ

(८) तथा मनुष्य को जब कभी दुख पहुँचता है तो वह ख़ूब ध्यानमग्न होकर अपने प्रभु को पुकारता है फिर जब अल्लाह (तआला) अपने पास से सुख प्रदान कर देता है तो वह उससे पूर्व जो प्रार्थना करता था उसे

---

[1]अथवा क्यों तुम सत्य से असत्य की ओर तथा संमार्ग से कुमार्ग की ओर फिर रहे हो ?

[2]इसकी व्याख्या के लिए देखिए *सूरः इब्राहीम* आयत-८ की टिप्पणी।

[3]अर्थात कुफ्र यद्यपि इन्सान अल्लाह की चाहत ही से करता है। क्योंकि उसके चाहे बिना कुछ नहीं होता न हो ही सकता है फिर भी अल्लाह तआला कुफ्र को पसंद नहीं करता उसकी प्रसन्नता प्राप्त करने का मार्ग तो कृतज्ञता ही है न कि कृतघ्नता। अर्थात उसकी चाहत और चीज़ है तथा उसकी प्रसन्नता दूसरी चीज़ है, जैसा कि पहले भी इस विन्दु की व्याख्या कुछ स्थानों पर की जा चुकी है। देखिए सूरः बक़रः की आयत संख्या २५३ की व्याख्या।

أَندَادًا لِّيُضِلَّ عَن سَبِيلِهِ ۚ قُلْ تَمَتَّعْ بِكُفْرِكَ قَلِيلًا ۖ إِنَّكَ مِنْ أَصْحَابِ النَّارِ ⑧

भूल जाता है ।[1] तथा अल्लाह (तआला) के साझीदार निर्धारित करने लगता है, जिससे (अन्यों को भी) उसके मार्ग से भटकाये। (आप) कह दीजिए कि अपने कुफ़्र का लाभ कुछ दिन और उठा लो, (अन्त में) तू नरकवासियों में होने वाला है।

أَمَّنْ هُوَ قَانِتٌ آنَاءَ اللَّيْلِ سَاجِدًا وَقَائِمًا يَحْذَرُ الْآخِرَةَ وَيَرْجُوا رَحْمَةَ رَبِّهِ ۗ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِينَ يَعْلَمُونَ وَالَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۗ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولُو الْأَلْبَابِ ⑨

(९) भला वह व्यक्ति जो रातों के समय सजदा एवं खड़े होने की स्थिति में इबादत (उपासना) में व्यतीत करता हो, आख़िरत से डरता हो तथा अपने प्रभु की दया की आशा रखता हो,[2] (तथा जो उसके विपरीत हो समान हो सकते हैं), बताओ तो ज्ञानी तथा

---

[1]अर्थात उस दुख को भूल जाता है जिसे दूर करने के लिए वह दूसरों को छोड़कर अल्लाह से प्रार्थना करता था अथवा उस प्रभु को भूल जाता है जिसे वह पुकारता था तथा उसके सामने विनय करता था, तथा फिर शिर्क में लीन हो जाता है।

[2]अभिप्राय यह है कि एक यह काफ़िर एवं मुशरिक है जिसकी यह दशा है जो अभी वर्णित हुई तथा दूसरा वह है जो दुख-सुख में रात की घड़ियाँ अल्लाह के समक्ष विनम्रता एवं आज्ञाकारिता का प्रदर्शन करते हुए सजदों में तथा ध्यानपूर्वक खड़े रहकर गुज़ार देता है। आख़िरत (परलोक) का भय भी उसके दिल में है तथा प्रभु की दया की आशा भी है अर्थात भय तथा आशा दोनों भावनाओं से पूर्ण है, जो वास्तविक ईमान है। क्या यह दोनों बराबर हो सकते हैं ? नहीं, निश्चय नहीं । भय तथा आशा के विषय में हदीस है, आदरणीय अनस कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक व्यक्ति के पास गये जब कि उस पर मौत की दशा आच्छादित थी आपने उससे पूछा, तू स्वयं को कैसा पाता है ? उसने कहा, "मैं अल्लाह से आशा रखता हूँ तथा अपने दोषों के कारण डरता भी हूँ ?" रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "इस अवसर पर जिसके दिल में यह दोनों बातें एकत्र हो जायें तो अल्लाह तआला उसे वह चीज़ प्रदान करता है जिसकी वह आशा रखता है तथा उससे उसे बचा लेता है जिसका वह भय रखता है।" (तिर्मिज़ी, इब्ने माजा, किताबुज़्ज़ुहद, बाब ज़िकरिल मौते वल इस्तेअदादे लहू)

अज्ञानी क्या समान हैं ?[1] निःसंदेह शिक्षा वही ग्रहण करते हैं जो बुद्धिमान हों ।[2]

(१०) कह दो कि हे मेरे ईमानवाले भक्तों ! अपने प्रभु से डरते रहो,[3] जो इस लोक में पुण्य करते हैं उनके लिए उत्तम बदला है,[4] तथा अल्लाह (तआला) की धरती अत्यन्त विस्तृत है,[5] धैर्यवानों को ही उनका पूरा-पूरा

قُلْ يٰعِبَادِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوْا رَبَّكُمْ ۭ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ۭ وَاَرْضُ اللّٰهِ وَاسِعَةٌ ۭ اِنَّمَا يُوَفَّى الصّٰبِرُوْنَ اَجْرَهُمْ

[1]अर्थात जो जानते हैं कि अल्लाह ने जो प्रतिफल एवं दण्ड का वचन दिया है वह सत्य है तथा जो इस बात को नहीं जानते, यह दोनों बराबर नहीं हो सकते, एक ज्ञानी है तथा एक अज्ञानी, जिस प्रकार ज्ञान तथा अज्ञान में अन्तर है उसी प्रकार ज्ञानी तथा मूर्ख बराबर नहीं । ज्ञानी तथा मूर्ख के उदाहरण से यह समझना उद्देश्य हो कि जिस प्रकार यह दोनों समान नहीं, अल्लाह का आज्ञाकारी तथा अवज्ञाकारी दोनों बराबर नहीं । कुछ ने इसका अभिप्राय यह बताया है कि ज्ञानी से तात्पर्य वह व्यक्ति है जो ज्ञानानुसार कर्म भी करता है क्योंकि वही ज्ञान से लाभ प्राप्त करता है तथा जो कर्म नहीं करता वह मानो ऐसे ही है जिसे ज्ञान ही नहीं । इस आधार पर यह कर्म कर्ता तथा अकर्मी का उदाहरण है कि दोनों बराबर नहीं ।

[2]तथा यह ईमान वाले ही हैं न कि काफ़िर । यद्यपि वह स्वयं को बुद्धिमान एवं ज्ञानी ही समझते हों किन्तु जब वह अपनी नीति तथा बुद्धि का प्रयोग करके चिंतन-मनन ही नहीं करते तथा शिक्षा-दिक्षा नहीं ग्रहण करते तो वह पशु के समान बुद्धि एवं ज्ञान से वंचित हैं ।

[3]उसकी आज्ञा पालन करके, अवज्ञा से बचकर तथा इबादत एवं अनुपालन को उसके लिए विशुद्ध करके ।

[4]यह تقوى (संयम) के लाभ हैं । नेक बदले से अभिप्राय स्वर्ग तथा उस के अनन्त उपहार हैं । कुछ في هذه الدنيا को حَسَنَةٌ से सम्बन्धित मानकर अनुवाद करते हैं "जो पुण्य करते हैं उनके लिए दुनिया में अच्छा बदला है" अर्थात अल्लाह उन्हें संसार में स्वास्थ एवं सुविधा, सफलता तथा धन-सम्पत्ति आदि प्रदान करता है । किन्तु प्रथम भावार्थ ही अधिक सही है ।

[5]यह संकेत है उस बात की ओर कि यदि अपने देश में ईमान तथा संयम पर कर्म करना कठिन हो तो वहां रहना अच्छा नहीं अपितु वहां से हिजरत (स्थानान्तरण) करके ऐसे क्षेत्र में चला जाना चाहिए, जहां इन्सान अल्लाह के आदेशों के अनुसार जीवन निर्वाह कर सके तथा जहां ईमान एवं संयम के मार्ग में रूकावट न हो ।

بِغَيْرِ حِسَابٍ ⑩

अनगिनत बदला दिया जाता है ।[1]

قُلْ إِنِّيٓ أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ ٱللَّهَ مُخْلِصًا لَّهُ ٱلدِّينَ ⑪

(११) (आप) कह दीजिए कि मुझे आदेश दिया गया है कि अल्लाह (तआला) की इस प्रकार इबादत करूँ कि उसी के लिए इबादत को विशुद्ध कर लूँ ।

وَأُمِرْتُ لِأَنْ أَكُونَ أَوَّلَ ٱلْمُسْلِمِينَ ⑫

(१२) तथा मुझे आदेश हुआ है कि मैं प्रथम आज्ञाकारी बन जाऊँ ।[2]

قُلْ إِنِّيٓ أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ⑬

(१३) कह दीजिए कि मुझे तो अपने प्रभु की अवज्ञा करते हुए बड़े दिन की यातना का भय लगता है ।

قُلِ ٱللَّهَ أَعْبُدُ مُخْلِصًا لَّهُۥ دِينِي ⑭

(१४) कह दीजिए कि मैं तो शुद्ध रूप से मात्र अल्लाह ही की इबादत करता हूँ ।

فَٱعْبُدُوا۟ مَا شِئْتُم مِّن دُونِهِۦ

(१५) तुम उसके अतिरिक्त जिसकी चाहो पूजा करते रहो, कह दीजिए कि वास्तव में

---

[1]इसी प्रकार ईमान तथा संयम के मार्ग में कठिनाई भी अनिवार्य तथा मनोकांक्षाओ का त्याग भी आवश्यक है, जिसके लिए धैर्य की आवश्यकता है । इसलिए धैर्यवान का महत्व भी वर्णित किया गया है कि उनको उनके धैर्य के बदले इस प्रकार पूरा-पूरा प्रतिफल दिया जायेगा कि उसे हिसाब के माप से नापना संभव नहीं होगा । अर्थात उनका प्रतिफल असीम होगा, क्योंकि जिस चीज का हिसाब हो उसकी तो एक सीमा होती है तथा जिस की कोई सीमा तथा अन्त न हो वह वही होती है जिसकी गणना संभव न हो । धैर्य का यह बड़ा महत्व है जिसे प्रत्येक मुसलमान को प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए, इसलिए कि रोने-धोने तथा अधैर्यता से आई विपदा टल नहीं जाती, जिस अच्छाई एवं लाभ से वंचित हो गया है वह प्राप्त नहीं होता तथा जो अप्रिय अवस्था आ चुकी होती है उसका निराकरण संभव नहीं । जब ऐसा है तो इन्सान धैर्य धारण करके वह महान प्रतिफल क्यों न प्राप्त करे जो धैर्यवानों के लिए अल्लाह ने रखा है ।

[2]प्रथम इस अर्थ में कि पूर्वजों के धर्म का विरोध करके तौहीद (अद्वैत) का आमन्त्रण सर्वप्रथम आप ही ने प्रस्तुत किया ।

قُلۡ إِنَّ ٱلۡخَٰسِرِينَ ٱلَّذِينَ خَسِرُوٓاْ أَنفُسَهُمۡ وَأَهۡلِيهِمۡ يَوۡمَ ٱلۡقِيَٰمَةِۗ أَلَا ذَٰلِكَ هُوَ ٱلۡخُسۡرَانُ ٱلۡمُبِينُ ⑮

क्षतिग्रस्त वही है जो स्वयं अपने आप को तथा अपने परिवार को क़ियामत के दिन हानि में डाल देंगे। याद रखो कि खुला घाटा यही है।

لَهُم مِّن فَوۡقِهِمۡ ظُلَلٞ مِّنَ ٱلنَّارِ وَمِن تَحۡتِهِمۡ ظُلَلٞۚ ذَٰلِكَ يُخَوِّفُ ٱللَّهُ بِهِۦ عِبَادَهُۥۚ يَٰعِبَادِ فَٱتَّقُونِ ⑯

(१६) उन्हें नीचे-ऊपर से अग्नि की लपटें छत की भाँति ढाँक रही होंगी।[1] यही यातना है जिनसे अल्लाह (तआला) अपने भक्तों को डरा रहा है।[2] हे मेरे बन्दो ! मुझसे डरते रहो।

وَٱلَّذِينَ ٱجۡتَنَبُواْ ٱلطَّٰغُوتَ أَن يَعۡبُدُوهَا وَأَنَابُوٓاْ إِلَى ٱللَّهِ لَهُمُ ٱلۡبُشۡرَىٰۚ فَبَشِّرۡ عِبَادِ ⑰

(१७) तथा जिन लोगों ने अल्लाह के अतिरिक्त तागूत (अन्यों) की इबादत से बचाव किया तथा तन-मन से अल्लाह (तआला) की ओर आकर्षित रहे, वे शुभ सूचना के अधिकारी हैं तो मेरे बन्दों को शुभ सूचना सुना दीजिए !

ٱلَّذِينَ يَسۡتَمِعُونَ ٱلۡقَوۡلَ فَيَتَّبِعُونَ أَحۡسَنَهُۥٓۚ أُوْلَٰٓئِكَ ٱلَّذِينَ هَدَىٰهُمُ ٱللَّهُۖ وَأُوْلَٰٓئِكَ هُمۡ أُوْلُواْ ٱلۡأَلۡبَٰبِ ⑱

(१८) जो बात को कान लगा कर सुनते हैं फिर जो अति उत्तम बात हो[3] उसके अनुसार कार्य करते हैं, यही हैं जिनको अल्लाह (तआला) ने मार्गदर्शन दिया है तथा यही बुद्धिमान भी हैं।[4]

---

[1] ظُلَلٌ यह ظُلَّةٌ का बहुवचन है, छाया। यहाँ नरक की श्रेणियाँ अभिप्राय हैं अर्थात उनके ऊपर-नीचे आग की तहें होंगी जो उन पर भड़क रही होंगी। (फ़तहुल क़दीर)

[2] अर्थात यही उपरोक्त खुली क्षति एवं अग्नि जवाला की यातना है जिससे अल्लाह तआला अपने बंदों को डराता है ताकि वह अल्लाह की आज्ञाकारिता का मार्ग अपना कर इस दुष्परिणाम से सुरक्षित हो जायें।

[3] أَحۡسَنَ (सर्वोत्तम) से सुदृढ़ तथा पक्की बात अभिप्राय है अथवा अनुमत बातों में सर्वोत्तम अथवा निश्चय तथा आज्ञा में से निश्चय, अथवा दण्ड की अपेक्षा क्षमा को पसंद करते हैं।

[4] क्योंकि उन्होंने अपनी बुद्धि से लाभ उठाया है जबकि दूसरों ने अपनी बुद्धियों से लाभ नहीं उठाया।

اَفَمَنْ حَقَّ عَلَيْهِ كَلِمَةُ الْعَذَابِ ؕ اَفَاَنْتَ تُنْقِذُ مَنْ فِي النَّارِ ﴿١٩﴾

(१९) भला जिस व्यक्ति पर यातना की बात सिद्ध हो चुकी है,[1] तो क्या आप उसे जो नरक में है छुड़ा सकते हैं ।[2]

لٰكِنِ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ غُرَفٌ مِّنْ فَوْقِهَا غُرَفٌ مَّبْنِيَّةٌ ۙ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۬ؕ وَعْدَ اللّٰهِ ؕ لَا يُخْلِفُ اللّٰهُ الْمِيْعَادَ ﴿٢٠﴾

(२०) हाँ, वे लोग जो अपने प्रभु का भय रखते रहे उनके लिए उच्च भवन हैं, जिनके ऊपर भी बनी अटारियाँ हैं[3] तथा उनके नीचे जल स्रोत प्रवाहित हो रहे हैं । प्रभु का वचन है,[4] तथा वह वचन भंग नहीं करता ।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَسَلَكَهٗ يَنَابِيْعَ فِي الْاَرْضِ

(२१) क्या आपने नहीं देखा कि अल्लाह (तआला) आकाश से पानी उतारता है तथा उसे धरती के स्रोतों में पहुँचाता है[5] फिर

---

[1]अर्थात भाग्य तथा कर्मलेख के आधार पर उसकी यातना का अधिकार सिद्ध हो चुका है। इस प्रकार कि अत्याचार एवं कुफ़्र तथा अपराध एवं क्रूरता में अपनी अन्तिम सीमा को पहुँच गया जहाँ से उसकी वापसी संभव नहीं, जैसे अबूजहल तथा आस पुत्र वाएल आदि, तथा पापों ने उसको पूर्णतः घेर लिया तथा वह नरकवासी हो गया।

[2]नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को चूँकि इस बात की अति इच्छा थी कि मेरी जाति के सब लोग ईमान ले आयें। इसमें अल्लाह महान ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सांत्वना दी तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बतलाया कि आप की इच्छा अपनी जगह अत्यन्त सही तथा उचित है किन्तु उसका भाग्य प्रभावी हो गया तथा अल्लाह का वचन उस के विषय में सिद्ध हो गया। उसे आप नरक की अग्नि से बचाने पर समर्थ नहीं।

[3]इसका अभिप्राय यह है कि स्वर्ग में श्रेणियाँ होंगी एक के ऊपर एक। जैसे यहाँ बहुश्रेणी भवन हैं स्वर्ग में भी श्रेणियों के हिसाब से एक-दूसरे के ऊपर अटारियाँ होंगी, जिनके मध्य स्वर्गवासियों की इच्छानुसार दूध, मधु, मदिरा तथा जल की नहरें प्रवाहित रहेंगी।

[4]जो उसने अपने ईमान वाले बन्दों से किया है तथा जो निश्चय पूरा होगा कि अल्लाह का वचन भंग संभव नहीं।

[5] يَنَابِيْع यह يَنْبُوع का बहुवचन है, जलस्रोत। अर्थात वर्षा द्वारा जल आकाश से उतरता है फिर वह धरती में संचित हो जाता है तथा फिर स्रोतों के रूप में निकलता है अथवा तालाबों तथा नहरों में एकत्र हो जाता है।

ثُمَّ يُخْرِجُ بِهٖ زَرْعًا مُّخْتَلِفًا اَلْوَانُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَجْعَلُهٗ حُطَامًا ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَذِكْرٰى لِاُولِي الْاَلْبَابِ ﴿٢١﴾

उसी के द्वारा विभिन्न प्रकार की खेतियाँ उगाता है[1] फिर वे सूख जाती हैं तथा आप उन्हें पीले रंग में देखते हैं फिर उन्हें चूरा-चूरा कर देता है।[2] इसमें बुद्धिमानों के लिए अत्यधिक शिक्षा है।[3]

اَفَمَنْ شَرَحَ اللّٰهُ صَدْرَهٗ لِلْاِسْلَامِ فَهُوَ عَلٰى نُوْرٍ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ فَوَيْلٌ لِّلْقٰسِيَةِ قُلُوْبُهُمْ مِّنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ؕ اُولٰٓئِكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢٢﴾

(२२) क्या वह व्यक्ति जिसका वक्ष अल्लाह (तआला) ने इस्लाम के लिए खोल दिया है तो वह अपने प्रभु की ओर से एक प्रकाश पर है,[4] तथा विनाश है उनके लिए जिनके दिल अल्लाह की याद से (प्रभाव नहीं लेते बल्कि) कठोर हो गये हैं। यह लोग पूर्णरूप से भटकावे में पड़े हुए हैं।

---

[1]अर्थात उस पानी से जो एकत्र होता है, अनेक प्रकार की वस्तुयें पैदा करता है जिनके रंग, स्वाद, सुगंध परस्पर भिन्न होते हैं।

[2]अर्थात हरियाली तथा ताज़गी के बाद वह खेतियाँ सूख जाती एवं पीली पड़ जाती हैं तथा फिर चूर-चूर हो जाती हैं, जैसे लकड़ी की डालियाँ सूखकर टूट-फूट जाती हैं।

[3]अर्थात बुद्धिमान इससे समझ लेते हैं कि दुनिया इसी के सदृश है, वह भी अति शीघ्र नाश तथा विलय हो जायेगी। इसकी शोभा एवं चमक, उसकी हरियाली तथा सौन्दर्य एवं उसके स्वाद तथा सुविधायें सामयिक हैं जिनसे इन्सान को दिल नहीं लगाना चाहिए अपितु मौत की तैयारी में लगे रहना चाहिए, जिसके पश्चात का जीवन स्थाई है, जिसे विनाश नहीं। कुछ कहते हैं कि यह क़ुरआन तथा ईमानवालों के दिलों का उदाहरण है। अभिप्राय यह है कि अल्लाह ने आकाश से क़ुरआन अवतरित किया जिसे वह ईमान वालों के दिलों में प्रविष्ट करता है फिर उसके द्वारा धर्म बाहर निकालता है जो एक-दूसरे से उत्तम होता है तो फिर ईमानदार तो ईमान तथा विश्वास में बढ़ जाता है तथा जिसके दिल में रोग होता है वह ऐसे सूख जाता है जैसे खेती सूख जाती है। (फ़तहुल क़दीर)

[4]अर्थात जिसको सत्य को मानने तथा भलाई का रास्ता अपनाने का सौभाग्य अल्लाह की ओर से मिल जाये तो वह इस सीना खोल दिये जाने के कारण प्रभु के प्रकाश पर हो, क्या वह उसके समान हो सकता है जिसका दिल इस्लाम के लिए कठोर तथा उस का वक्ष संकुचित हो तथा वह पथभ्रष्टता के अंधकारों में भटक रहा हो।

(२३) अल्लाह (तआला) ने सर्वोत्तम वाणी अवतरित की है, जो ऐसी किताब है कि आपस में मिलती-जुलती तथा बार-बार दोहराई हुई आयतों की है,[1] जिससे उन लोगों के शरीर काँप उठते हैं जो अपने प्रभु का भय रखते हैं,[2] अन्त में उनके शरीर एवं हृदय अल्लाह (तआला) के वर्णन की ओर (कोमल होकर) झुक जाते हैं।[3] यह है

اَللّٰهُ نَزَّلَ اَحْسَنَ الْحَدِيْثِ كِتٰبًا مُّتَشَابِهًا مَّثَانِيَ ۖ تَقْشَعِرُّ مِنْهُ جُلُوْدُ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ۚ ثُمَّ تَلِيْنُ جُلُوْدُهُمْ وَقُلُوْبُهُمْ اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِيْ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿٢٣﴾

---

[1] أحسن الحديث (उत्तमवाणी) से अभिप्राय ईशवाणी पवित्र क़ुरआन है। मिलती-जुलती का अभिप्राय उत्तम भाषा, चमत्कार एवं प्रभाव तथा सत्यार्थ आदि सदगुणों में उसके सारे अंश परस्पर मिलते हैं, अर्थात यह भी आकाशीय आदिग्रंथों से मिलता है अर्थात उनके सदृश है। مثاني जिसमें वाक्यों, घटनाओं, शिक्षाओं एवं आदेशों को दुहराया गया है।

[2] क्योंकि वह उन चेतावनियों डर एवं धमकियों को समझते हैं जो अवज्ञाकारियों के लिए है।

[3] अर्थात जब अल्लाह की दया तथा करूणा एवं कृपा की आशा उनके दिलों में जागती है तो उनमें तपन तथा नम्रता पैदा हो जाती है तथा वह अल्लाह के स्मरण में लीन हो जाते हैं। आदरणीय कतादह रजी अल्लाह अन्ह कहते हैं कि इसमें अल्लाह के मित्रों के गुणों का वर्णन किया गया है कि अल्लाह के भय से उनके दिल काँप जाते हैं। उनकी आँखों से आँसू बहने लगते हैं तथा उनके दिलों को अल्लाह की याद से संतोष सुलभ होता है। यह नहीं होता कि वह बेसुध तथा मुग्ध हो जायें तथा बुद्धि एवं चेतना शेष न रहे, क्योंकि यह विदअतियों का स्वभाव है तथा इसमें शैतान का हस्तक्षेप होता है (इब्ने कसीर)। जैसे आज भी विदअतियों की कव्वालियों में इसी प्रकार की शैतानी गतिविधियाँ सामान्य हैं जिसे वह वज्द अथवा हाल (मस्ती में झूमना) कहते हैं। इमाम इब्ने कसीर फ़रमाते हैं कि ईमानवालों का आचरण इस विषय में काफ़िरों से कई कारणों से भिन्न होता है, एक यह कि इमानवालों का सुनना पवित्र क़ुरआन का पाठ होता है जबकि काफ़िरों का सुनना निर्लज्ज गायिकाओं के स्वरों में गाना-बजाना सुनना है (जैसे बिदअतियों का सुनना मुशरिकाना अतिश्योक्ति पर निर्भर कव्वालियाँ एवं नातें हैं), दूसरे यह कि ईमानवाले क़ुरआन सुनकर शिष्टाचार तथा भय से, आशा एवं प्रेम से तथा ज्ञान एवं बोध से रो पड़ते हैं तथा सजदे में गिर पड़ते हैं जब कि काफ़िर शोर करते तथा क्रीडा में संलग्न रहते हैं, तीसरे ईमानवाले क़ुरआन सुनने के समय शिष्टाचार तथा विनम्रता

अल्लाह (तआला) का मार्गदर्शन जिसके द्वारा जिसे चाहे सत्य मार्ग पर लगा देता है, तथा जिसे अल्लाह (तआला) ही मार्ग भुला दे उसका मार्गदर्शक कोई नहीं।

(२४) भला जो व्यक्ति क़ियामत के दिन की अत्याधिक बुरी यातनाओं की ढाल अपने मुख को बनायेगा (ऐसे) अत्याचारियों से कहा जायेगा कि अपने किये हुए कर्मों का (स्वाद) चखो।[1]

أَفَمَن يَتَّقِي بِوَجْهِهِۦ سُوٓءَ ٱلْعَذَابِ يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ ۚ وَقِيلَ لِلظَّٰلِمِينَ ذُوقُوا۟ مَا كُنتُمْ تَكْسِبُونَ ﴿٢٤﴾

(२५) उनसे पूर्व वालों ने भी झुठलाया फिर उन पर वहाँ से प्रकोप आ पड़ा जहाँ से उनको अनुमान भी न था।[2]

كَذَّبَ ٱلَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَأَتَىٰهُمُ ٱلْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٢٥﴾

(२६) तथा अल्लाह (तआला) ने उन्हें सांसारिक जीवन के अपमान का स्वाद चखाया,[3] तथा अभी आख़िरत की तो अति कठोर यातना है। काश ! ये लोग समझ लें।

فَأَذَاقَهُمُ ٱللَّهُ ٱلْخِزْىَ فِى ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا ۖ وَلَعَذَابُ ٱلْءَاخِرَةِ أَكْبَرُ ۚ لَوْ كَانُوا۟ يَعْلَمُونَ ﴿٢٦﴾

(२७) निश्चय ही हमने इस क़ुरआन में लोगों के लिए हर प्रकार के उदाहरण वर्णन कर

وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِى هَٰذَا ٱلْقُرْءَانِ

अपनाते हैं, जैसे नबी के सहचरों (सहाबा-केराम) का शुभ आचरण था, जिससे उनके रोंगटे खड़े हो जाते थे तथा उनके दिल अल्लाह की ओर झुक जाते थे (इब्ने कसीर)।

[1]अर्थात क्या यह व्यक्ति उस व्यक्ति के समान हो सकता है जो प्रलय के दिन अत्यन्त निर्भय तथा शांत होगा ? अर्थात लुप्त वाक्य मिलाकर इसका यह भावार्थ होगा।

[2]तथा उन्हें इन यातनाओं से कोई नहीं बचा सका।

[3]यह मक्का के काफ़िरों को चेतावनी है कि विगत सम्प्रदायों ने पैग़म्बरों को झुठलाया तो उनकी यह दुर्दशा हुई तथा तुम सर्वश्रेष्ठ रसूल तथा सर्वोत्तम व्यक्ति को झुठला रहे हो तो तुम्हें भी इस झुठलाने के दुष्परिणाम से डरना चाहिए।

مِنْ كُلِّ مَثَلٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٢٧﴾

दिये हैं हो सकता है कि वे शिक्षा ग्रहण कर लें ।[1]

قُرْءَانًا عَرَبِيًّا غَيْرَ ذِى عِوَجٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿٢٨﴾

(२८) अरबी भाषा में क़ुरआन है जिसमें कोई टेढ़ापन नहीं, हो सकता है कि वह संयम धारण कर लें ।[2]

ضَرَبَ ٱللَّهُ مَثَلًا رَّجُلًا فِيهِ شُرَكَآءُ مُتَشَٰكِسُونَ وَرَجُلًا سَلَمًا لِّرَجُلٍ هَلْ يَسْتَوِيَانِ مَثَلًا ٱلْحَمْدُ لِلَّهِ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢٩﴾

(२९) अल्लाह (तआला) उदाहरण वर्णन कर रहा है कि एक वह व्यक्ति जिसमें बहुत से परस्पर भिन्नता रखने वाले साझीदार हैं तथा दूसरा वह व्यक्ति जो मात्र एक ही का (दास) है, क्या ये दोनों गुणों में एक समान हैं ।[3] सारी प्रशंसायें अल्लाह (तआला) के लिए हैं । [4] बात यह है कि उनमें से अधिकतर लोग अज्ञानी हैं ।[5]

---

[1]अर्थात लोगों को समझाने के लिए हर प्रकार के उदाहरण दिये ताकि लोगों की बुद्धि में बातें बैठ जायें तथा सदुपदेश ग्राहण करें ।

[2]अर्थात पवित्र क़ुरआन स्वच्छ अरबी भाषा में है, जिसमें कोई टेढ़ापन, विमुखता एवं भ्रम नहीं ताकि लोग उसमें वर्णित चेतावनियों से डरें तथा उसमें वर्णित वचनों के पात्र बनने के लिए कर्म करें ।

[3]इसमें मुशरिक (अल्लाह का साझी बनाने वाले) तथा मुख़लिस (मात्र अल्लाह के लिए इबादत करने वाले) का उदाहरण दिया गया है । अर्थात एक दास है जो कई व्यक्तियों के साझे का है जो आपस में झगड़ते रहते हैं तथा एक अन्य दास है जिसका स्वामी केवल एक ही व्यक्ति है तथा उसके स्वामित्व में उसका कोई साझी नहीं, क्या यह दोनों दास समान हो सकते हैं ? नहीं, वस्तुतः नहीं । इसी प्रकार वह मुशरिक जो अल्लाह के साथ अन्य पूज्यों की भी वंदना करता है तथा वह विशुद्ध ईमान वाला जो केवल एक अल्लाह की उपासना करता है तथा उसके साथ किसी को साझी नहीं बनाता, बराबर नहीं हो सकते ।

[4]इस बात पर कि उसने तर्क स्थापित कर दिया ।

[5]इसीलिए अल्लाह का साझी बनाते हैं ।

إِنَّكَ مَيِّتٌ وَإِنَّهُم مَّيِّتُونَ ۝٣٠

(३०) नि:संदेह स्वयं आपको भी मृत्यु आयेगी तथा ये सब भी मरने वाले हैं।

ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عِندَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُونَ ۝٣١

(३१) फिर तुम सबके सब क़ियामत के दिन अपने प्रभु के समक्ष झगड़ोगे।[1]

---

[1]अर्थात हे पैग़म्बर, आप भी तथा आपके विरोधी भी मरकर इस दुनिया से हमारे पास आख़िरत (परलोक) में आयेंगे। दुनिया में तो एकेश्वरवाद (तौहीद) तथा मिश्रणवाद (शिर्क) का निर्णय तुम्हारे बीच नहीं हो सका तथा तुम इसके विषय में झगड़ते ही रहे। किन्तु यहाँ मैं इसका निर्णय कर दूँगा तथा शुद्ध एकेश्वरवादियों को स्वर्ग में एवं नकारने वाले झूठे मिश्रणवादियों को नरक में प्रवेश कराउँगा। इस आयत से भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मौत का प्रमाण मिलता है। जिस प्रकार *सूर: आले-इमरान* की आयत १४४ से भी मिलता है तथा इन्हीं आयतों से भाव निकालकर आदरणीय अबू बक्र सिद्दीक ने आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की मौत को सिद्ध किया था। अत: नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विषय में यह आस्था रखना कि आपको बरज़ख़ (मौत के पश्चात से प्रलय तक के बीच की अवधि) में उसी प्रकार जीवन प्राप्त है जिस प्रकार दुनिया में प्राप्त था, पवित्र क़ुरआन के विपरीत है। आप को भी अन्य मनुष्यों जैसे मौत हुई, इसलिए आप को गाड़ दिया गया। क़ब्र में आपको बर्ज़ख़ी (मध्य) का जीवन तो अवश्य प्राप्त है जिसकी दशा का हमें ज्ञान नहीं। परन्तु क़ब्र में आपको पुन: सांसारिक जीवन प्रदान नहीं किया गया।